वर्षः 6 अंकः5 मई, 2026 मूल्यः 60 रु. पृष्ठ : 44

राजस्थान टुडे

RNI No. RAJHIN/2020/11458

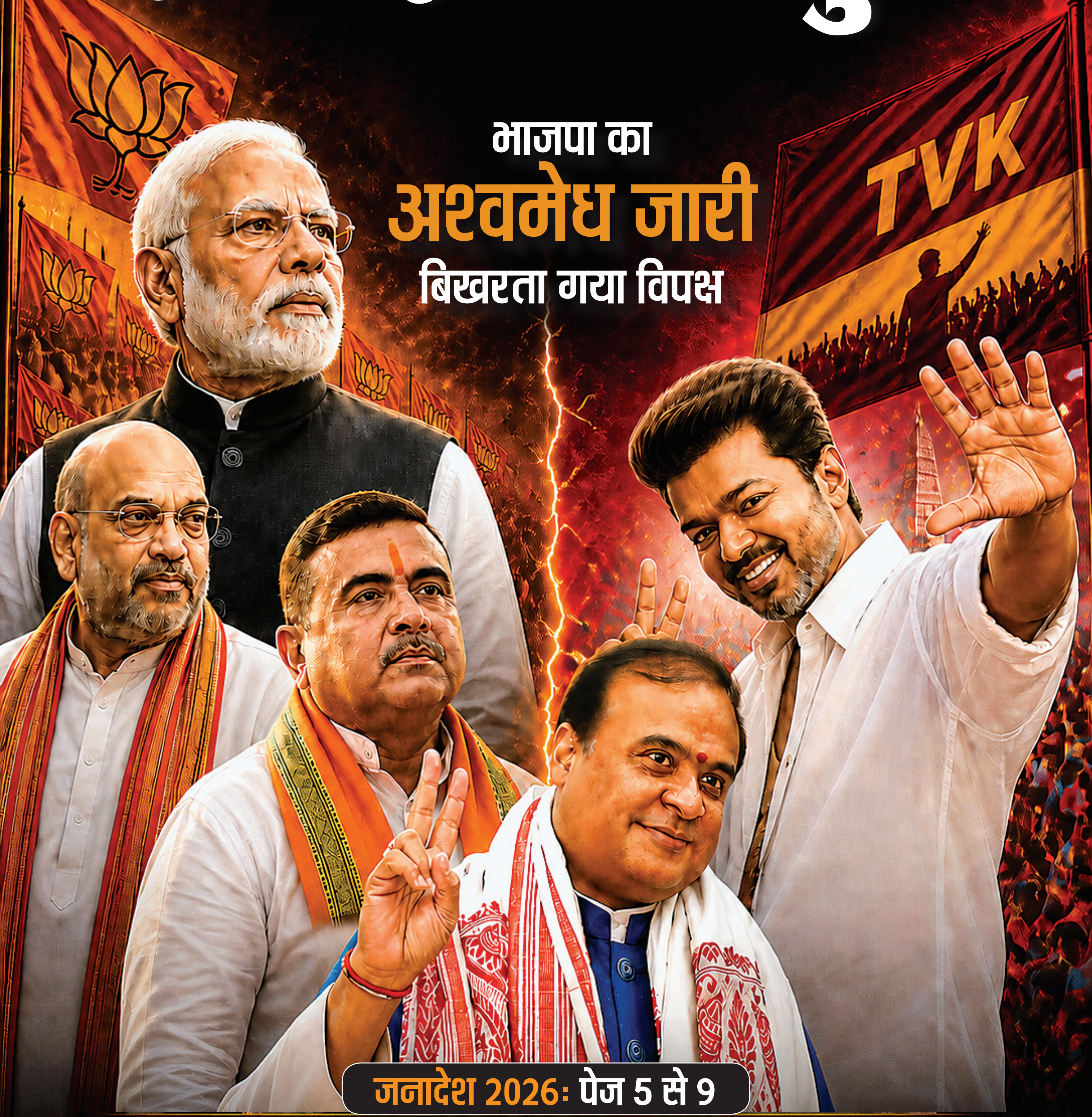

भाजपा का अश्वमेध जारी
बिखरता गया विपक्ष

जनादेश 2026: पेज 5 से 9

पूर्वी भारत
केसरिया सुनामी
बंगाल में भाजपा की ऐतिहासिक जीत

असम
नेतृत्व बरकरार
भाजपा नेतृत्व में असम बना मजबूत किला

दक्षिण भारत
उभरा नया सितारा
टीवीके बनी तमिलनाडु की सबसे बड़ी पार्टी

bandhani
The Ethnic Store

BANDHANI

Everyday Comfort, Festival Ready

Ladies Wear | Kids Wear | Mul Cotton | Bandhani |
Block Print | Sarees | Kurtis | Lehenga | Festive Wear

Jodhpur-Nai Sarak, Sardarpura & Jaljog

Ahmedabad

bandhani_officeal

+91 9057690555

राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात

www.rajasthantoday.online

RNI No. RAJHIN/2020/11458

वर्ष 6, अंक 5, मई 2026

प्रधान सम्पादक - दिनेश रामावत

प्रबंध सम्पादक - राकेश गांधी

राजनीतिक सम्पादक - सुरेश व्यास

कार्यकारी सम्पादक - अजय अस्थाना

सह सम्पादक - बलवंत राज मेहता

विशेष प्रतिनिधि

नई दिल्ली - राधा रमण

जयपुर - मणिमाला शर्मा, विवेक श्रीवास्तव

अजमेर - रमेश शर्मा

उदयपुर - मधुलिका सिंह

कोटा - अरविन्द गुप्ता

पाली - चैनराज भाटी

सिरोही - गणपत सिंह

जालोर - तरुण गहलोत

बाड़मेर - धर्मसिंह भाटी

रेखाचित्र- राजेंद्र यादव

विज्ञापन प्रतिनिधि

जोधपुर - प्रवीण गिरी - 99280 26609

कोटा - यतीन्द्र जैन - 94140 76997

संपादकीय कार्यालय

बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स महावीर कॉलोनी, भास्कर सर्किल, रातानाड़ा, जोधपुर - 342 011

व्हाट्सएप नंबर - 81078 00000

ई-मेल - rajasthantoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और प्रधान सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर, महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342 011 से प्रकाशित और डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 10 जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर में मुद्रित। संपादक: अजय अस्थाना* (*पी आर पी एक्ट के तहत उत्तरदायी)

अंदर विशेष

4 अपनी बात
बंगाल में एतिहासिक जीत, दक्षिण में चुनौती

नियमित कालम

11 बोल हरि बोल
12 बात बेलगाम
41 अभिव्यक्ति
42 ग्रहों की चाल

6 बंगाल का फैसला...

7 पांच राज्यों के चुनाव

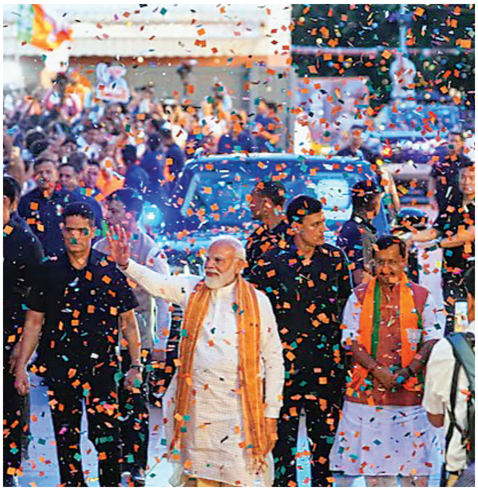

35 तस्वीरों में सजी मरुधरा की आत्मा

5-6 नजरिया

14 देश-दुनिया...
अमेरिकी चौधराहट खत्म होने की आहट

16 राजकाज...
निजी हस्तक्षेप का उलझा गणित

20 बालोतरा...
रिफाइनरी की राह में अग्निपथ

24 जोधपुर स्थापना...
मरुधरा का नीला हृदय

26 जोधपुर स्थापना...
मरुधरा के निर्माता राव जोधा

28 जालोर...
कागजों में दौड़ती दुर्ग की सड़क

31 बिहार राजनीति...
बिहार का नया 'सम्राट'

33 पड़ताल...
सलूंबर और प्रतापगढ़ जिलों में बीमारी...

36 स्पोर्ट्स...
गेंद दर गेंद बढ़ती धड़कन

38 कोटा...
सफलता का अंतरिक्ष

40 घर-संसार...
संघर्ष की मार, रसोई पर वार

अपनी बात

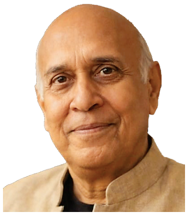

दिनेश रामावत

प्रधान सम्पादक

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को भारतीय राजनीति की केंद्रीय शक्ति के रूप में और मजबूत किया है। असम और पश्चिम बंगाल में उसकी निर्णायक सफलता, विशेषकर बंगाल की ऐतिहासिक जीत, उसके संगठन, हिन्दुत्व-आधारित वैचारिक आधार और रणनीतिक विस्तार को रेखांकित करती है। वहीं तमिलनाडु और केरल में सीमाएं यह संकेत देती हैं कि विविध भारत में स्वीकार्यता के लिए उसे और समावेशी दृष्टिकोण अपनाना होगा।

बंगाल में ऐतिहासिक जीत, दक्षिण में चुनौती

'एक राष्ट्र, दो कहानियां' 2026 के चुनाव परिणामों को समझने का शायद सबसे सटीक तरीका यही है। एक ओर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का उभार है, जो असम और पश्चिम बंगाल में निर्णायक जीत के रूप में सामने आता है; दूसरी ओर तमिलनाडु और केरल जैसे राज्य हैं, जहां वही राजनीतिक कथा अपनी सीमाओं से टकरा जाती है। पहली कहानी उस भारत की है, जहां हिन्दुत्व-प्रेरित राष्ट्रवाद, सशक्त संगठन और लक्षित कल्याणकारी योजनाएं मिलकर भाजपा को चुनावी बढ़त दिला रही हैं। दूसरी कहानी उस भारत की है, जहां क्षेत्रीय पहचान, सामाजिक न्याय और स्थानीय राजनीतिक परंपराएं अब भी राष्ट्रीय विमर्श पर भारी पड़ती हैं। यही द्वंद्व आज के भारत की असली तस्वीर है। एक साथ बदलता हुआ, और अपनी विविधता को बचाए रखने की जिद में अडिग।

भारत के पांच राज्यों असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल और पुदुचेरी के 2026 के विधानसभा चुनाव परिणामों को यदि एक धुरी पर रखा जाए, तो वह धुरी स्पष्ट रूप से भाजपा है। इन चुनावों ने भाजपा को केवल एक चुनावी शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक वैचारिक पार्टी के रूप में स्थापित किया है, जिसकी जड़ें हिन्दुत्व और राष्ट्रवाद के सम्मिलित विमर्श में हैं। यह चुनाव भाजपा के लिए 'विस्तार बनाम स्वीकार्यता' के साथ-साथ 'विचार बनाम विविधता' की भी परीक्षा बनकर उभरे हैं।

असम में भाजपा की सफलता इस बात का प्रमाण है कि जब संगठन, नेतृत्व और वैचारिक स्पष्टता एक दिशा में चलते हैं, तो परिणाम निर्णायक होते हैं। हिमंत बिस्वा सरमा के नेतृत्व में भाजपा ने न केवल बहुमत प्राप्त किया, बल्कि अपनी स्वतंत्र राजनीतिक ताकत भी स्थापित की। यहां हिन्दुत्व का विमर्श केवल धार्मिक पहचान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसे सांस्कृतिक अस्मिता और सुरक्षा के प्रश्नों से जोड़ा गया, खासकर अवैध प्रवास जैसे मुद्दों के संदर्भ में। साथ ही, कल्याणकारी योजनाओं ने इस विचारधारा को जमीन पर स्वीकार्यता भी दिलाई।

लेकिन असम का यही मॉडल एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी उठाता है कि क्या यह संतुलन स्थायी रहेगा? हिन्दुत्व आधारित राजनीति चुनावी रूप से प्रभावी हो सकती है, परंतु बहुलतावादी समाज में उसकी दीर्घकालिक स्वीकृति इस बात पर निर्भर करेगी कि वह समावेशिता के साथ कितनी संतुलित होती है।

पश्चिम बंगाल में भाजपा की जीत को केवल एक चुनावी सफलता के रूप में देखना इसकी महत्ता को कम करके आंकना होगा। यह एक ऐतिहासिक विजय है। बंगाल, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और बौद्धिक विमर्श को दिशा दी, वहां भाजपा का इस स्तर तक पहुंचना उसके दीर्घकालिक संगठनात्मक और वैचारिक निवेश का परिणाम है। तृणमूल कांग्रेस के लंबे शासन को चुनौती देना आसान नहीं था, लेकिन भाजपा ने धैर्य, रणनीति और हिन्दुत्व-प्रेरित सांस्कृतिक पुनर्पाठ के जरिए यह कर दिखाया।

ममता बनर्जी की राजनीति, जो कभी बदलाव का प्रतीक थी, अब सत्ता-विरोधी लहर और संगठनात्मक

थकान के आगे कमजोर पड़ गई। भाजपा ने बंगाल में केवल सरकार नहीं बदली, बल्कि राजनीतिक विमर्श की दिशा बदलने का दावा भी पेश किया है। यह जीत भाजपा के लिए प्रतीकात्मक रूप से उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी रणनीतिक रूप से क्योंकि इसने यह साबित किया कि वह भारत के किसी भी हिस्से में अपनी जड़ें जमा सकती है।

हालांकि, इस जीत के साथ कुछ सवाल भी जुड़े हैं। मतदाता सूची में गड़बड़ी के आरोप और चुनावी प्रक्रिया की निष्पक्षता पर उठे प्रश्न लोकतंत्र की विश्वसनीयता को लेकर चिंता पैदा करते हैं। सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया की भूमिका पर भी बहस हुई है। यह जरूरी है कि ऐसी ऐतिहासिक जीतें लोकतांत्रिक पारदर्शिता के साथ ही जुड़ी रहें।

यदि असम और बंगाल भाजपा के विस्तार और वैचारिक सफलता की कहानी हैं, तो तमिलनाडु और केरल उसकी सीमाओं को स्पष्ट करते हैं। तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीति और सामाजिक न्याय का विमर्श अब भी इतना मजबूत है कि हिन्दुत्व की राजनीति वहां व्यापक स्वीकार्यता नहीं पा सकी। केरल में भी उच्च सामाजिक चेतना और वैचारिक विविधता ने भाजपा के विस्तार को सीमित किया।

यह स्थिति बताती है कि भारत एकरूप राजनीतिक प्रयोगों के लिए नहीं, बल्कि संतुलित और संवेदनशील दृष्टिकोण के लिए उपयुक्त है। भाजपा के लिए यह एक अवसर है। वह अपने हिन्दुत्व विमर्श को अधिक समावेशी और व्यापक बनाए, ताकि वह विभिन्न राज्यों की विविधताओं के साथ तालमेल बिठा सके।

पुदुचेरी में भाजपा और उसके सहयोगियों की वापसी यह दिखाती है कि छोटे राज्यों में भी उसकी पकड़ बनी हुई है। यहां गठबंधन राजनीति और स्थानीय नेतृत्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन चुनाव परिणामों का व्यापक निष्कर्ष यह है कि भाजपा अब भारतीय राजनीति की केंद्रीय धुरी बन चुकी है। उसकी जीत और हार दोनों ही राष्ट्रीय विमर्श को प्रभावित करती हैं। लेकिन इस स्थिति के साथ जिम्मेदारी भी आती है- लोकतांत्रिक संस्थाओं की मजबूती, सामाजिक समरसता और शासन की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने की।

अंततः, 'एक राष्ट्र, दो कहानियां' का यह द्वंद्व ही भारत की वास्तविक ताकत है। भाजपा के लिए चुनौती यही है कि वह इस द्वंद्व को टकराव में नहीं, बल्कि संतुलन में बदल सके। यदि वह ऐसा कर पाती है, तो उसकी ऐतिहासिक जीत, विशेषकर बंगाल में, भारत के राजनीतिक भविष्य को नई दिशा दे सकती है।

नई सियासत का सितारा • परदे का नायक अब सत्ता का केंद्र

'जनादेश के शिखर पर विजय'

अपार लोकप्रियता को निर्णायक जनादेश में बदलते हुए थलपति विजय ने तमिलनाडु की सियासत की धुरी बदल दी है। उनकी जीत ने परंपरागत राजनीति को सीधी चुनौती दे दी है।

जनसमर्थन जब लहर बनता है, तो राजनीति के स्थापित ढांचे भी हिल जाते हैं। विजय थलपति ने अपनी पार्टी को ऐतिहासिक जीत दिलाकर न केवल इसे साबित किया है, बल्कि इससे तमिलनाडु की राजनीति में सत्ता का समीकरण बदल गया है। चार मई को सुबह की मतगणना के शुरुआती दौर से ही जिस तरह रुझान एकतरफा होते गए, उसने दोपहर तक इसे औपचारिकता में बदल दिया। चेन्नई से कन्याकुमारी तक फैला यह जनादेश केवल सरकार बदलने का नहीं, बल्कि सोच बदलने का संकेत है।

परदे से सत्ता तक... वर्षों तक सिनेमा के पर्दे पर नायक की भूमिका निभाने वाले विजय ने जब राजनीति की राह चुनी, तो इसे जोखिम भरा कदम माना गया। लेकिन उन्होंने यह दिखा दिया कि लोकप्रियता यदि जनता के मुद्दों से जुड़ जाए, तो वह नेतृत्व में बदल सकती है। उन्होंने भीड़ को समर्थक और समर्थकों को मतदाता में बदलने की क्षमता साबित की। मतगणना के दिन यह स्पष्ट हो गया कि यह समर्थन केवल नारों तक सीमित नहीं था, बल्कि मतदान केंद्रों तक मजबूती से पहुंचा।

संघर्ष से शिखर तक का सफर... थलपति विजय का यह सफर केवल स्टारडम की कहानी नहीं है, बल्कि निरंतर प्रयास और आत्मविश्वास की भी दास्तान है। फिल्मी पृष्ठभूमि से आने के बावजूद उनके शुरुआती करियर में उतार-चढ़ाव रहे, जब कई फिल्में उम्मीदों पर खरी नहीं उतरीं। लेकिन उन्होंने अपने काम और विषयों के चयन में बदलाव किया और धीरे-धीरे दर्शकों का विश्वास जीत लिया। यही निरंतरता उन्हें आम दर्शक से जोड़ती गई और उनकी छवि एक ऐसे चेहरे के रूप में बनी, जो केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की बात भी करता है।

सिनेमा में सफलता की मजबूत पृष्ठभूमि... तीन दशकों से अधिक के अपने फिल्मी सफर में विजय ने बतौर लीड अभिनेता 68 फिल्मों में काम किया, जिनमें लगभग 60 से 70 प्रतिशत फिल्में व्यावसायिक रूप से सफल रहीं। गिल्ली, थुप्पाकी और मर्सल जैसी फिल्मों की सफलता ने उन्हें दक्षिण भारतीय सिनेमा के सबसे भरोसेमंद सितारों में स्थापित किया। उनका मुख्य कार्यक्षेत्र तमिल सिनेमा रहा, लेकिन उनकी फिल्मों को तेलुगु, हिंदी, मलयालम और कन्नड़ सहित कई भाषाओं में डब कर व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुंचाया गया।

परंपरा से टकराव, नया विस्तार

- तमिलनाडु की सियासत में एम.जी. रामचंद्रन और जे. जयललिता की विरासत हमेशा प्रभावशाली रही है, लेकिन विजय की जीत उस परंपरा को केवल दोहराती नहीं, बल्कि उसे नई दिशा देती है। यह जनादेश उस पीढ़ी की आवाज है, जो स्थापित ढांचे से आगे बढ़कर विकल्प तलाश रही थी।
- इस जनादेश की असली ताकत वे मतदाता हैं, जो अक्सर चुनावी शोर में नजर नहीं आते। युवाओं, महिलाओं और मौन मतदाताओं ने जिस तरह विजय के पक्ष में रुख किया, उसने इस जीत को निर्णायक बना दिया। रोजगार, शिक्षा और पारदर्शिता जैसे मुद्दों ने उनकी राजनीति को जमीन दी। कई पारंपरिक गढ़ों में मिले अप्रत्याशित परिणाम यह संकेत देते हैं कि यह जीत केवल लहर नहीं, बल्कि भीतर से उपजे बदलाव की अभिव्यक्ति है।

विवादों से दूरी, मुद्दों पर स्पष्टता

थलपति विजय का सार्वजनिक जीवन अपेक्षाकृत संतुलित रहा है, हालांकि समय-समय पर उनकी कुछ फिल्मों और बयानों को लेकर विवाद भी सामने आए। मर्सल और सरकार जैसी फिल्मों में उठाए गए मुद्दों ने बहस को जन्म दिया, वहीं आयकर जांच जैसे प्रकरण भी चर्चा में रहे। इसके बावजूद उनकी छवि एक ऐसे चेहरे की बनी रही, जो बड़े विवादों से दूर रहते हुए अपनी बात स्पष्ट रूप से रखने का प्रयास करता है।

अब असली इम्तिहान

- जीत जितनी बड़ी होती है, अपेक्षाएं उससे कहीं बड़ी होती हैं। अब थलपति विजय के सामने चुनौती है कि वे अपने वादों को प्रशासनिक फैसलों में बदलें। सत्ता का आकर्षण क्षणिक होता है, लेकिन सुशासन ही स्थायी पहचान बनाता है।
- यह केवल एक अभिनेता की जीत नहीं, बल्कि उस बदलाव की घोषणा है जिसे तमिलनाडु की जनता ने चुना है। तमिलनाडु ने अपना फैसला सुना दिया है, अब बारी विजय की है कि वे इस भरोसे को इतिहास में कैसे बदलते हैं।

बंगाल का फैसला: मिज़ाज क्यों और कैसे बदला

पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की हार किसी अचानक घटना का परिणाम नहीं, बल्कि लंबे समय से बन रही एक राजनीतिक प्रक्रिया का निष्कर्ष है। तृणमूल कांग्रेस सत्ता-विरोधी माहौल, संगठनात्मक कमजोरियों, बदलती मतदाता आकांक्षाओं और विपक्ष की सधी हुई रणनीति को समय रहते पढ़ नहीं सकी और यही चूक अंततः निर्णायक साबित हुई।

पश्चिम बंगाल की राजनीति में इस बार जो हुआ, वह किसी एक दिन का घटनाक्रम नहीं था, बल्कि यह एक लंबी प्रक्रिया का स्वाभाविक निष्कर्ष था। एक ऐसी कहानी, जिसमें उपलब्धियां भी थीं और अनसुनी आवाज़ें भी। ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने वर्षों तक राज्य की राजनीति को दिशा दी, लेकिन इस बार मतदाता ने अलग रास्ता चुन लिया।

अगर इस बदलाव को एक दृश्य की तरह देखें, तो शुरुआत में सब कुछ पहले जैसा ही दिखाई देता है। ममता बनर्जी की सभाएं, उनका सीधा संवाद, और उनका संघर्षशील व्यक्तित्व। लेकिन सतह के नीचे एक धीमा बदलाव आकार ले रहा था। लोगों की बातचीत में एक सवाल बार-बार उभरने लगा 'अब आगे क्या?' यही सवाल धीरे-धीरे राजनीतिक विमर्श का केंद्र बन गया।

यहीं से कहानी का पहला मोड़ आता है, सत्ता की स्वाभाविक थकान। डेढ़ दशक तक शासन चलाने के बाद किसी भी दल के सामने यह चुनौती खड़ी होती है कि वह मतदाता को केवल योजनाओं से आगे, एक स्पष्ट भविष्य का भरोसा दे। योजनाएं जारी रहीं, लाभ भी मिले, लेकिन मतदाता की अपेक्षाएं बदल चुकी थीं। तृणमूल कांग्रेस इस बदलाव की गहराई को पूरी तरह समझ नहीं पाई।

दूसरा महत्वपूर्ण बदलाव ज़मीन पर दिखा। गांवों और कस्बों में, जहां कभी संगठन उसकी सबसे बड़ी ताकत था, वहीं अब असंतोष की छोटी-छोटी परतें उभरने लगीं। स्थानीय स्तर पर शिकायतें बढ़ीं। कभी धीमी आवाज़ में, तो कभी खुलकर। यह असंतोष भले ही संगठित आंदोलन का रूप नहीं ले पाया, लेकिन इतना जरूर था कि उसने भरोसे की नींव को कमजोर कर दिया।

चुनाव नज़दीक आते-आते यह परिदृश्य और स्पष्ट हो गया। ममता बनर्जी ने इसे 'बंगाल की अस्मिता' की लड़ाई के रूप में प्रस्तुत किया। यह रणनीति पहले कारगर रही थी, लेकिन इस बार मतदाता की प्राथमिकताएं बदल चुकी थीं। पहचान की राजनीति के साथ-साथ अवसर, रोजगार और भविष्य की ठोस दिशा अब ज्यादा महत्वपूर्ण हो गई थी।

नेतृत्व का प्रश्न भी इस कहानी का अहम हिस्सा रहा। ममता बनर्जी का व्यक्तित्व अब भी प्रभावशाली था, लेकिन पूरी पार्टी का भार एक ही नेतृत्व पर टिके रहना समय के साथ चुनौती बन जाता है। स्थानीय नेतृत्व की सीमित भूमिका और संगठनात्मक असंतुलन ने इस चुनौती को और गहरा किया।

और फिर आता है वह अंतिम क्षण, मतदाता का फैसला। चुनाव के दिन कोई शोर नहीं होता, लेकिन यही वह पल होता है जहां पूरी कहानी अपना निष्कर्ष पाती है। इस बार बंगाल के मतदाता ने स्पष्ट तरीके से संकेत दिया कि बदलाव अब विकल्प नहीं, आवश्यकता बन चुका है।

इस पूरी प्रक्रिया में एक मानवीय आयाम भी छिपा है। हार केवल राजनीतिक नहीं होती; वह आत्ममंथन का अवसर भी बनती है। ममता बनर्जी के लिए यह परिणाम निश्चित रूप से एक ठहरकर सोचने का क्षण होगा। यह समझने का कि संवाद कहां कमजोर पड़ा और रणनीति कहां चूक गई। लेकिन राजनीति में कोई भी अंत अंतिम नहीं होता। हर हार एक नई शुरुआत की संभावना भी साथ लेकर आती है। बंगाल की यह कहानी भी समाप्त नहीं हुई है; यह केवल एक नए अध्याय की ओर बढ़ रही है। इस चुनाव ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया कि लोकतंत्र में सबसे बड़ा कथाकार मतदाता ही होता है। वही तय करता है कि कहानी किस दिशा में जाएगी और इस बार उसने बदलाव की कहानी लिखी है।

राज-नीति : पांच राज्यों के परिणामों में रणनीति की जीत और दक्षिण में नए जननायक का उदय

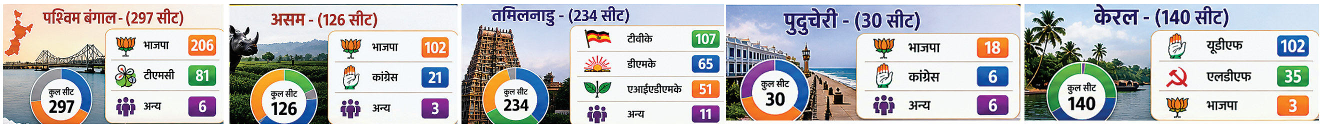

भाजपा का परचम, विजय का उभार

पांच राज्यों के चुनाव नतीजों ने राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करने के संकेत दिए हैं। जहां भाजपा ने अपनी रणनीतिक मजबूती से कई राज्यों में परचम लहराया, वहीं तमिलनाडु में थलपति विजय नए जननायक बनकर उभरे। इन परिणामों ने सत्ता समीकरण, गठबंधनों की स्थिति और क्षेत्रीय राजनीति में बड़े बदलाव की स्पष्ट तस्वीर सामने रखी है।

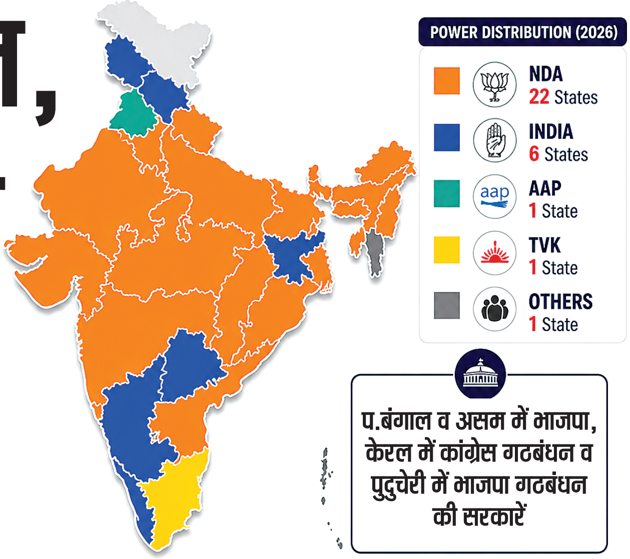

प.बंगाल व असम में भाजपा, केरल में कांग्रेस गठबंधन व पुदुचेरी में भाजपा गठबंधन की सरकारें

राजेश कसेरा, राजनीतिक विश्लेषक

पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, असम, केरल और पुदुचेरी में हुए विधानसभा चुनावों के नतीजों ने एक बार फिर साफ कर दिया कि मतदाता जिस राजनीतिक दल को अपना जनादेश देना चाहते हैं उसे लेकर उनके मन में न तो कोई संशय है और न ही कोई मतभेद। जिसमें उनको अपने राज्य का भविष्य दिखाई दिया, उसे एकतरफा जीत की राह दिखाई। असम और पुदुचेरी में मौजूदा सरकार को भी चुना तो पूरे भरोसे के साथ। असम में हिमंता बिस्वा सरमा सरकार को पिछले चुनाव से 27 सीटें ज्यादा जिताईं तो पुदुचेरी में भी दो सीटों का फायदा दिया। यहां के मतदाताओं ने मौजूदा सरकारों को एक और मौका देने का मन बनाया तो वैसा किया भी। वहीं तीन राज्यों में सत्ता परिवर्तन की लहर ने सारे दिग्गजों को सियासत के मैदान से ही उड़ा दिया। पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में तो मुख्यमंत्रियों को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखा दिया तो केरल में वाम दलों का वजूद ही समाप्त कर दिया। इन परिणामों में सबसे बड़ा एक्स फैक्टर बनकर कोई उभरा तो वह तमिलनाडु की तमिलगा वैत्री कड़गम (टीवीके) पार्टी रही। महज दो साल पहले बने इस दल ने पहले ही चुनाव में ऐसा धमाका किया कि भारतीय राजनीति के इतिहास में इसे याद रखा जाएगा। चुनाव परिणामों में सबसे बड़े नायक तमिलनाडु सिनेमा के सुपरस्टार थलपति विजय बनकर उभरे। उन्होंने देश की राजनीति में बड़ा धमाका करते हुए सारे सियासी समीकरणों को झुठला दिया।

राजनीतिक दृष्टिकोण से इन परिणामों की समीक्षा करें तो भाजपा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह फिर सबसे ताकतवर रणनीतिकार बनकर उभरे। दोनों ने सत्ता में आने के बाद पश्चिम बंगाल में कमल खिलाने का जो सपना देखा उसे पूरा करके दिखा दिया। केन्द्र में लगातार तीन बार सत्ता में काबिज होने के बाद उन्होंने जिन-जिन राज्यों में जीत के लिए अपना अश्वमेध का घोड़ा छोड़ा, उसे जीतकर ही लेकर आए। इन चुनावों में बेहतर प्रदर्शन हासिल करने के बाद जब प्रधानमंत्री मोदी ने भाजपा मुख्यालय पर पार्टी के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को संबोधित किया तो अपना अगला लक्ष्य भी सबको बता दिया। उन्होंने कहा कि देश के मस्तक यानी जम्मू-कश्मीर के साथ दक्षिण भारत के तमिलनाडु और केरल में भाजपा को सत्ता में लाना पार्टी का अगला संकल्प होगा। भाजपा की यही सोच विपक्षी दलों से उनको कहीं आगे रखती है और यही कारण है कि कांग्रेस मुक्त भारत का उनका नारा तेजी से बुलंद होता दिख रहा है। देश के मौजूदा नक्शे को देखें तो भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगियों की 22 राज्यों में सरकार बन गई। इनमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखंड, असम, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, गोवा, छत्तीसगढ़, ओडिशा, मणिपुर, पश्चिम बंगाल और दिल्ली में भाजपा ने अपने दम पर जनादेश हासिल किया तो बिहार, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, सिक्किम, मेघालय, नगालैंड, पुदुचेरी में सहयोगी दलों के साथ साझा सरकार बनाई।

पश्चिम बंगाल में तृणमूल का किला ध्वस्त

पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। उसने दो तिहाई बहुमत हासिल करके सारे सियासी समीकरणों को ध्वस्त कर दिया और विधानसभा की 293 सीटों में से 206 सीटें जीतकर तृणमूल कांग्रेस को बंगाल से साफ कर दिया। पिछले चुनावों में 77 सीटों पर सिमटने वाली वाली भाजपा ने इस बार 127 सीटें ज्यादा जीतीं और बंगाल में सबको एक किनारे कर दिया। चुनाव में सबसे बड़ा नुकसान टीएमसी ने उठाया। सत्ता खोने के साथ 135 सीटों को उसने गंवाया। 2021 के चुनाव में तृणमूल ने 216 सीटें जीतकर जीत का डंका बजाया था। इस चुनाव में 81 सीटें ही पार्टी जीत पाई। सीएम ममता बनर्जी अपने गढ़ भवानीपुर को बचा नहीं पाई और चुनाव हार गईं। कांग्रेस ने इस चुनाव में कुछ नहीं खोया और 2 सीटों पर जीत दर्ज की। पिछले चुनाव में भी उसे 2 सीटें मिली थीं। वहीं तीन दशक तक बंगाल की सत्ता पर राज करने वाला वाम दल इस बार 2 सीटों तक पहुंचा। नहीं तो पिछली बार उसे एक ही सीट मिली थी। ऐसे में पश्चिम बंगाल में भाजपा ने रिकॉर्ड तोड़ ऐतिहासक सफलता हासिल कर तृणमूल कांग्रेस और ममता बनर्जी का 15 सालों से बना मजबूत किला जमींदोज कर दिया।

असम- बिस्वा की अपने दम पर हैट्रिक

असम में मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा के नेतृत्व में भाजपा ने न केवल एंटी इनकंबेंसी से जुड़े सारे सिद्धांतों को पीछे छोड़ दिया, बल्कि पहली बार राज्य में दो-तिहाई बहुमत से सरकार बनाई। भाजपा की इस जीत में हिंमता की भूमिका सबसे बड़ी रही। हालांकि असम में वोटों का अत्यधिक सांप्रदायीकरण भी सबसे बड़ी वजह बना। मुख्यमंत्री ने चुनाव अभियान के दौरान जिस तरह की बयानबाजी की उसने वोटों का बहुत ज्यादा ध्रुवीकरण कर दिया। जब धर्म या जाति के नाम पर वोट बंट जाते हैं तो बाकी मुद्दे खत्म हो जाते हैं। जबकि चुनावों में भ्रष्टाचार बड़ा मुद्दा था, जो मुख्यमंत्री के करीबी परिवार के जुड़ा था। इतना ही नहीं, आरएसएस के लोगों ने भी राज्य सरकार के खिलाफ आवाज बुलंद की थी। उन्होंने आरोप लगाया था कि राज्य में भाजपा भी कांग्रेस की तरह होती जा रही है। उन्होंने भ्रष्टाचार का मुद्दा भी जोर-शोर से उठाया, लेकिन सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के आगे वोटरों ने ऐसे मुद्दों को नजरअंदाज कर दिया।

इधर, कांग्रेस में सारा रायता फैल गया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रहे भूपेन कुमार बोरा ने पार्टी छोड़ दी तो चुनावों के ठीक पहले कांग्रेस सांसद प्रद्युत बोरदोलोई भाजपा में शामिल हो गए। इससे जनता में संदेश गया कि कांग्रेस सरकार यहां बना पाने की स्थिति में नहीं है। इसके अलावा कांग्रेस में गठबंधन को लेकर अंतिम समय तक कुछ स्पष्ट नहीं था। इससे चुनावी माहौल में उसको लेकर भ्रम की स्थिति बनी रही। इन हालात में वहां की जनता ने फिर हिमंता पर भरोसा जताकर राज्य की कमान उनको सौंपी। हिमंता सरकार ने पिछली बार से प्रचंड जनादेश हासिल कर कांग्रेस का सूपड़ा साफ कर दिया। इस बार 102 सीटों पर भाजपा ने बड़ी जीत दर्ज की। जबकि कांग्रेस 21 सीटों पर सिमट गई।

तमिलनाडु की राजनीति में नये सितारे का उदय

तमिलनाडु में अभिनेता से नेता बने विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कषगम (टीवीके) ने 107 सीटों पर जीत हासिल की। इस नई नवेली पार्टी ने ज्यादातर एग्जिट पोल के अनुमानों को गलत बताते हुए सत्तारूढ़ डीएमके और विपक्षी एआईडीएमके दोनों को पीछे छोड़ दिया। एमजी रामचंद्रन, एम. करुणानिधि, एमजीआर और जयललिता के बाद जो करिश्मा थलपति विजय ने दिखाया वह न तो रजनीकांत दिखा सके और न ही कमल हासन। विजय ने फरवरी-2024 में अपनी राजनीतिक पार्टी टीवीके शुरू की। तब उन्होंने घोषणा की थी कि वे फिल्मों से संन्यास लेकर पूरी तरह राजनीति पर ध्यान देंगे। इसके बाद विजय की पार्टी ने 2024 का लोकसभा चुनाव नहीं लड़ा। वे तमिलनाडु चुनाव का लक्ष्य लेकर चले। 27 अक्टूबर-2024 को विल्लुपुरम जिले के विक्रवंडी में विजय ने पहली चुनावी रैली की। एक साल बाद 27 सितंबर-2025 को तमिलनाडु के करूर में हुई रैली में भगदड़ मच गई, जिसमें 41 लोग मारे गए। विजय के लिए यह बड़ा झटका रहा। इसके बाद आरोप-प्रत्यारोप का दौर चला और विजय कानूनी पचड़े में फंसे। मामला सुप्रीम कोर्ट भी गया। पार्टी के पदाधिकारियों पर मुकदमे दर्ज किए गए। केंद्रीय जांच ब्यूरो ने विजय से पूछताछ की। लेकिन तमाम मुसीबतों और संकटों से ऊपर उठकर विजय जननायक बनकर उभरे और सबको चौंका दिया। विजय भाजपा या कांग्रेस गठबंधन किसके साथ मिलकर सरकार बनाएंगे इस पर सबकी नजरें टिकी रहेंगी।

केरल में कांग्रेस को मिली संजीवनी

केरल में कांग्रेस के संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) को मतदाताओं ने बड़ी राहत देकर उन पर भरोसा जताया। मतदान के बाद आए सभी एग्जिट पोल के अनुमानों के अनुरूप कांग्रेस और उसके गठबंधन ने राज्य में 10 साल बाद सत्ता में वापसी की। मतगणना के शुरुआती दौर से संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) 140 विधानसभा सीट में से 102 पर जीत हासिल की, जबकि मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी (माकपा) नीत सत्तारूढ़ वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) केवल 35 सीटों पर सिमट गया। हालांकि मुख्यमंत्री पिनराई विजयन तो चुनाव जीत गए, लेकिन उनकी अगुवाई वाले लेफ्ट एलायंस एलडीएफ को सत्ता से बाहर होना पड़ा। केरल में इस हार के बाद 49 साल में ऐसा पहली बार हुआ जब देश के किसी राज्य में लेफ्ट की सरकार नहीं बची। इससे पहले पश्चिम बंगाल में 2011 में 34 साल के निरंतर शासन के बाद ममता बनर्जी ने लेफ्ट को सत्ता से बाहर किया था। इसके बाद लगातार दो विधानसभा चुनावों में बंगाल में लेफ्ट का एक भी विधायक नहीं बना। इसी तरह से त्रिपुरा में 2018 को लेफ्ट सत्ता से बेदखल हो गई। वहां 25 साल तक माणिक सरकार के नेतृत्व में सत्ता थी, लेकिन भाजपा ने 'चलो पलटाई' के नारे के साथ उन्हें हरा दिया। आज त्रिपुरा में भी लेफ्ट तीसरे नम्बर का मोर्चा है।

कांग्रेस का गढ़ पुदुचेरी छीना और फिर से सरकार बनाई

पुदुचेरी एक जमाने में कांग्रेस का मजबूत गढ़ था, लेकिन यहां भाजपा और एनडीए का परचम लहरा रहा है। जबकि इस केंद्र शासित प्रदेश पर केरल और तमिलनाडु की राजनीति का गहरा असर पड़ता है। इसके बावजूद वर्ष 2021 के विधानसभा चुनावों में एनडीए गठबंधन ने शानदार प्रदर्शन कर सत्ता पर कब्जा जमाया और पहली बार भाजपा ने यहां अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई। 30 सीटों वाली पुदुचेरी विधानसभा में एनडीए गठबंधन ने 16 सीटों के साथ बहुमत का आंकड़ा पार कर सरकार बनाई। भाजपा ने 6 सीटों पर दर्ज की तो मुख्य घटक दल एआई एनआर कांग्रेस ने 10 सीटों पर जीत हासिल की। इस चुनाव में सत्तारूढ़ दल ने एक कदम और आगे बढ़ाते हुए सरकार भी बचाई और पिछले चुनावों से दो सीटें ज्यादा भी हासिल कीं। इस चुनाव में भी एआई एनआर कांग्रेस ने 12 सीटें जीतीं। देखा जाए तो भाजपा ने पुदुचेरी में अपनी नींव उन्हीं नेताओं के जरिए यहां रखी जो कांग्रेस से दल बदलकर आए। भाजपा ने यहां रणनीतिक चतुराई और मजबूत गठबंधन के बूते अखिल भारतीय एनआर कांग्रेस से तालमेल बिठाकर अपनी स्थिति मजबूत की। एन. रंगास्वामी के नेतृत्व वाली इस पार्टी के साथ गठबंधन ने भाजपा को राज्य के सत्ता समीकरणों में मुख्य भागीदार बना दिया। समय-समय पर आए राजनीतिक संकटों के बावजूद दोनों दल केंद्रीय नेतृत्व के हस्तक्षेप और सीट बंटवारे के रणनीतिक तालमेल से एकजुट बने रहे। भाजपा ने रणनीतिक रूप से सीटों का बंटवारा कर एनआर कांग्रेस को आगे रखा और विपक्षी दलों को हावी नहीं होने दिया। पुदुचेरी का उपयोग भाजपा तमिल राजनीति में अपनी पैठ बनाने के लिए करना चाहती है। यहां की सफलता से पार्टी तमिलनाडु जैसे अन्य द्रविड़ राजनीति वाले राज्यों में अपनी रणनीतिक उपस्थिति का विस्तार करने की कोशिश करेगी।

बड़े और प्रभावी मुद्दे, जिन्होंने तय की जीत की राह

1. एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण)

इन चुनावों में सबसे बड़ा मुद्दा विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर का रहा। मतदाता सूची में जो स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन हुआ, वह सभी राज्यों के चुनावों में ऐसा विषय बना जिसकी वजह से सियासी पारा चढ़ा। इसे लेकर तनाव भी बढ़ा और यह संवेदनशील मुद्दा बन गया। इस प्रक्रिया में बड़ी संख्या में लोगों के वोट कट गए। इनमें भी ज्यादातर संख्या अल्पसंख्यक यानी मुस्लिम मतदाताओं की रही। एसआईआर भाजपा के लिए लिटमस टेस्ट की तरह रहा। इससे भाजपा बंगाल और असम में दमदार तरीके से आगे बढ़ी और जीत भी।

2. महिला मतदाताओं का वोट बना अहम कड़ी

चुनावों के दौरान केन्द्र सरकार की ओर से संसद में पेश किए गए महिला आरक्षण कानून और डीलिमिटेशन से जुड़े 131वां संवैधानिक संशोधन विधेयकों को विपक्षी दलों ने पास होने नहीं दिया। विधेयक गिरने के बाद भाजपा और एनडीए गठबंधन ने विपक्ष पर महिला विरोधी होने के आरोप लगाए तो विपक्ष ने इन विधेयकों को लेकर सरकार के एजेंडे पर सवाल उठाए। परिसीमन विधेयक का मकसद लोकसभा क्षेत्रों को फिर से निर्धारित करना था, लेकिन दक्षिण भारतीय राज्यों ने इसका खुलकर विरोध किया और तमिलनाडु में मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने इसके खिलाफ प्रदर्शन भी किए। चुनाव के बीच बुलाए गए विशेष सत्र ने विपक्ष के मन में संदेह पैदा किया। साथ ही सभी दलों की बैठक के बिना सीधे संसद में बिलों को लाने पर भी सवाल उठे। बाद में चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा ने मतदाताओं के बीच विपक्ष को महिला विरोधी साबित किया। जबकि विपक्षी दलों ने संघवाद और संविधान को बचाने की दुहाई दी। लेकिन चुनावों में महिलाओं ने भाजपा के समर्थन में मतदान किया और केन्द्र सरकार का फेंके गए पासे ने उन्हें जीत भी दिला दी।

3. इंडी गठबंधन की अंदरूनी फूट पड़ी भारी

पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन नहीं करना और अलग से चुनावी मैदान में उतरना कांग्रेस को भारी पड़ा। इसका नुकसान न केवल कांग्रेस को भुगतना पड़ा बल्कि क्षेत्रीय दलों को भी उठाना पड़ा। केन्द्र में भाजपा को हराने के लिए एकसाथ खड़ा होने वाला इंडि गठबंधन विधानसभा चुनाव में भाजपा के सामने ही बिखर गया। इसका पूरा लाभ चुनाव अभियानों में भाजपा ने उठाया और विपक्ष की एकता को कटघरे में खड़ा किया। मतदाताओं के बीच भाजपा अपनी बात को दमदार तरीके से रखने में सफल रही और विपक्ष इसका कोई जवाब नहीं दे पाया। केरल में भाजपा को यदि कोई मजबूत सहयोगी मिल जाता तो वहां भी उसके जीत के दरवाजे खुल जाते। लेकिन वाम दलों से पार्टी की नीति-रीति नहीं मिलने से भाजपा ने कोई समझौता भी नहीं किया और अपने सहयोगियों के दम पर लड़कर तीन सीटें भी जीत लीं। जहां केरल में भाजपा का इतिहास शून्य पर था, वहां उसने खाता खोलकर भविष्य में जीत के लिए ऐलान कर दिया।

JCI JODHPUR YUVASHAKTI

EMPOWERING PEOPLE • ENRICHING LIVES • BUILDING LEADERS

Three Events. One Vision. Infinite Impact.

Naritva AWARD 4.0

(Women's Day)

JCI Jodhpur Yuvashakti celebrated womanhood with pride and unity through the grand success of **Naritva Award 4.0.**

BOLNE KI PAATHSHALA 3.0:

JCI Jodhpur Yuvashakti empowered 20+ participants with impactful public speaking and communication skills through **"Bolne Ki Paathshala 3.0."**

BUSINESS CONNECT SESSION:

JCI Jodhpur Yuvashakti hosted its second Business Connect, bringing together 15+ leaders for an engaging and insightful session.

★ LEADERSHIP THAT INSPIRES ★

Jc Hitesh Soni
President

Jc Deepak Maloo
Secretary

Jc Basant Boob
Immediate Past President

पहले राहुल भइया की 'नारीशक्ति' लाएंगे

हरीश मलिक, व्यंग्यकार और स्तंभकार

कांग्रेस की राजनीति में 'लेडीज फर्स्ट' का बोर्ड लगा है, बस दरवाजा अंदर से बंद है। बाहर लिखा है- 'स्वागत है और अंदर से आवाज आती है, अभी नहीं।' यहां नारी सम्मान का बड़ा भारी जलसा होता है। भाषणों में देवी, पोस्टरों में शक्ति यानी लड़की हूं लड़ सकती हूं। लेकिन व्यवहार में नारीशक्ति संशोधन 'विचाराधीन'। नारी सशक्तिकरण का मामला कुछ ऐसा हो गया है जैसे ड्रॉइंग रूम में रखा सुंदर शोपीस। दिखाने के लिए शानदार, इस्तेमाल के लिए अनुपलब्ध। यह वही राजनीति है जहां आदर्शों की माला जपते-जपते हाथ थकते नहीं, पर जब उन्हें कानून का रूप देने की बारी आती है, तो उंगलियां फाइलों में उलझ जाती हैं। छुटभइये नेता तक चहकने लगते हैं- पहले हम राहुलजी की 'नारीशक्ति' लाएंगे। इसके बाद ही किसी नारी शक्ति का वंदन-अभिनंदन होने दिया जाएगा। दरअसल, नारीशक्ति के नाम पर तालियां बजाना आसान है, पर अधिकार देना उतना ही कठिन जितना फाइल को मेज से उठाकर जमीन पर उतारना। बहस में सभी सहमत दिखते हैं, पर वोटिंग के समय सबको अचानक कोई जरूरी काम याद आ जाता है। अंत में प्रेस कॉन्फ्रेंस होती है, जहां अगर-मगर करके कहा जाता है कि "हम पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं।" बस तारीख और तरीका अभी तय होना बाकी है।

'आम' से 'विशिष्ट' की श्रेणी में अपग्रेड

चुनावी चकल्लस में अब विचारधारा न प्लेटफॉर्म बदलने की कला काम आती है आम आदमी पार्टी के राघव चड्ढा और कुछ सांसद जिस तेजी से 'आम' से 'विशिष्ट' की श्रेणी में अपग्रेड हुए, वह किसी रेलवे के तत्काल टिकट से कम नहीं। उधर पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल अपने डिब्बे के दरवाजे थामे खड़े हैं। दिल्ली की गाड़ी तो हाथ से कब की निकल ही चुकी है, अब पंजाब वाली लाइन पर सिग्नल लाल न हो जाए, इसकी चिंता में गर्मी में भी खांस रहे हैं। दरअसल, राजनीति में यह नया गणित है। नेता टिकट के साथ-साथ ठिकाना भी बदलते हैं और पार्टी नेतृत्व इस डर में रहता है कि कहीं पूरी बोगी ही अगली ट्रेन में शिफ्ट न हो जाए। पंजाब के चुनाव सामने हैं और पार्टी का हाल वैसा है जैसे ट्रेन चलने से पहले यात्री दरवाजे पर खड़े होकर सोच रहे हों कि 'यही गाड़ी सही है या अगली पकड़ लें?' लोकतंत्र की इस रेलयात्रा में टिकट से ज्यादा अहम हो गया है समय पर प्लेटफॉर्म बदलना। जो चूक गया, वह अगली घोषणा का इंतजार करता रह जाता है। राजनीति का यह रेलमपेल ऐसी है कि घोषणापत्र टिकट की तरह जेब में रहता है और सिद्धांत प्लेटफॉर्म पर छूट जाते हैं।

बूमरेंग बने आरोपों से खेड़ा खुद घायल

हमारे यहां चुनाव के समय आरोपों की ऐसी सेल लगती है कि 'एक लगाओ, चार मुफ्त पाओ' का ऑफर चलता है। नेताजी जोश में इतना आगे निकल जाते हैं कि उन्हें याद ही नहीं रहता कि सबूत नाम की भी कोई चिड़िया होती है। कांग्रेस के प्रवक्ता पवन खेड़ा ने भी चुनावी जोश में शब्दों को ऐसे दौड़ा दिया मानो सच पीछे-पीछे हांफता हुआ आ जाएगा। आरोप लगा देना आसान है, पर जब अदालत सबूत मांगती है तो वही शब्द कटघरे में खड़े होकर बूमरेंग बन गवाही देने से कतराने लगते हैं। अदालत का दरवाजा तब वैसा लगता है जैसे स्कूल का मास्टर हो और होमवर्क अधूरा हो तो डांट मिलना तय है। तब समझ में आता है कि बयान देना और उसे निभाना दो अलग-अलग कर्म हैं। दरअसल, राजनीति का गुणा-भाग बड़ा दिलचस्प है। चुनाव खत्म हो जाता है, लेकिन बयानों की किस्तें चलती रहती हैं। तब समझ आता है कि राजनीति में आरोपों के शब्द खर्च करने से पहले रसीदें संभाल कर रखनी चाहिए, क्योंकि उधार के आरोप कभी न कभी ब्याज समेत लौटते जरूर हैं।

स्वर्ग और नरक की आबादी का भी सर्वे!

जोधपुर नगर निगम ने प्रशासनिक दक्षता की यह नई परिभाषा गढ़ दी है कि अब काम के लिए सांस लेना अनिवार्य नहीं रहा। निगम के काबिल अफसरों की कल्पनाशक्ति का दायरा अब धरती तक सीमित नहीं रहा, बल्कि परलोक तक विस्तार कर लिया है। जनगणना के लिए जीवित मनुष्य से काम करवाना तो पुरानी बात है, अब मृतकों को भी सरकारी फाइलों में 'सक्रिय नागरिक' घोषित कर दिया गया है। शायद अफसरों का मानना है कि ऊपर वाले के दरबार में बैठे लोग ज्यादा ईमानदारी से जनगणना करेंगे- न रिश्वत लेंगे और न ही कोई बहाना बनाएंगे। यह सोचकर अच्छा लगता है कि सरकारी काम में अब 'अनुपस्थित' शब्द का खतम हो जाएगा, क्योंकि जो व्यक्ति इस दुनिया में ही नहीं है, वह छुट्टी कैसे लेगा! शायद निगम का यही असली 'डिजिटल इंडिया' है। जहां आदमी ऑफलाइन हो सकता है, लेकिन उसका डेटा हमेशा ऑनलाइन रहेगा। वैसे भी, जब आंकड़ों में सच्चाई से ज्यादा सुविधा देखी जाती हो, तो जिंदा और मुर्दा का फर्क मिट ही जाता है। अब अगला आदेश शायद यह हो कि स्वर्ग और नरक की आबादी का भी सर्वे कर लिया जाए, ताकि योजनाओं का लाभ 'ऊपर से नीचे तक' सर्वव्यापी हो सके।

रिफाइनरी में लपटें ठंडी, जवाब अभी भी गर्म

बलवंत राज मेहता, वरिष्ठ व्यंग्यकार

पचपदरा में आग बुझी, मगर जवाब अब भी धधक रहे हैं। कल तक यही रिफाइनरी तरक्की का मंच थी, आज बहानों की प्रयोगशाला बन गई है। तार जले, पैनल पिघले और अब कहानी सीधी नहीं, स्मार्ट हो गई है। शक स्क्रीन के उस पार तक जा पहुंचा है। मलबे में सच कम, संभावनाएं ज़्यादा खोजी जा रही हैं। सुविधा देखिए, जितना कारण दूर जाएगा उतनी जिम्मेदारी हल्की होती जाएगी। मशीन पर डालो, सिस्टम पर डालो, या फिर किसी अदृश्य उंगली पर। आखिर जवाब चाहिए या राहत? लोकार्पण से एक दिन पहले सब कुछ दुरुस्त था, और अगले ही दिन सब कुछ धुएं में। फर्क सिर्फ इतना है, पहले नियंत्रण का दावा था अब नियंत्रण ही सवालों के घेरे में है।

देर से आई बस, जागा विकास

जैसलमेर जिले के रासला गांव में रोडवेज बस पहुंची तो ऐसा लगा जैसे आज़ादी खुद देर से आती हुई शर्मिंदा खड़ी हो। 75 साल बाद आई इस बस ने साबित कर दिया कि विकास भी कभी-कभी ऊंट की चाल चलता है। धीरे, थका हुआ और रास्ता पूछता हुआ। स्वागत ऐसा हुआ मानो कोई बस नहीं, बल्कि भूला हुआ वादा आखिरकार हाजिरी लगाने आ गया हो। फूल-मालाओं से लदे ड्राइवर और कंडक्टर शायद सोच रहे होंगे इतनी इज्जत तो हमें ड्यूटी पर कभी नहीं मिली! ग्रामीणों की खुशी समझ में आती है, क्योंकि अब तक सफर साधनों से नहीं, सब्र से होता था। अब कम से कम धक्के सरकारी होंगे, निजी नहीं। अधिकारियों का धन्यवाद भी जरूरी है। उन्होंने यह सिखाया कि विकास की घड़ी में अलार्म नहीं होता, वह जब चाहे तब बजती है। बस अब यही दुआ है कि यह सेवा फोटो खिंचवाने के बाद गायब न हो जाए, वरना गांव वाले फिर कहेंगे बस आई थी, जैसे सपना आता है... और चला जाता है!

मेहंदी सूखी नहीं, सिलेंडर सूखा है!

अजमेर की यह घटना सिर्फ एक खबर नहीं, व्यवस्था पर सीधा व्यंग है। जिस घर में शहनाइयों की गूंज होनी चाहिए थी, वहां ..डीएम साहब सिलेंडर दिला दो.. की गुहार सुनाई दे रही है। हाथों में मेहंदी लगाए दुल्हनें कलक्ट्रेट पहुंच रही हैं और व्यवस्था अब भी अपनी पुरानी चाल में प्रक्रिया जारी है.. का मंत्र जप रही है। यह दृश्य बताता है कि हमारी प्राथमिकताएं कितनी उलझ चुकी हैं। जहां सबसे जरूरी चीज भी समय पर मिलना एक संघर्ष बन गई है। अब तो लगता है शादी के कार्ड में नया कॉलम जोड़ना पड़ेगा.. स्थान, समय और साथ में सिलेंडर की व्यवस्था स्वयं करें। पहले शादी को घर की इज्जत कहा जाता था, अब लगता है यह गैस कनेक्शन की किस्मत पर निर्भर हो गई है। बिना सिलेंडर के न दाल-बाटी बन सकती है, न मेहमानों का सम्मान; बस आश्वासनों की भाप उड़ती रहती है। अधिकारियों ने आखिरकार दो सिलेंडर देकर संवेदनशीलता दिखा दी। जैसे कोई अधिकार नहीं, एहसान हो। शुक्र है कि बारातियों के लिए खाना बन जाएगा, वरना स्वागत में गरमागरम वादे और ठंडी हकीकत ही परोसी जाती। यह घटना हंसी भी देती है और भीतर कहीं चुभती भी है, क्योंकि सवाल छोटा नहीं है। क्या अब खुशियों का चूल्हा भी कलक्ट्रेट की अनुमति से ही जलेगा?

जंगल में ट्रैफिक जाम: बाघ वीआईपी या बंधक?

सवाई माधोपुर के रणथंभौर टाइगर रिजर्व में अब जंगल सफारी कम, ट्रैफिक मैनेजमेंट ज्यादा दिखने लगा है। फर्क बस इतना है कि यहां सिग्नल नहीं, बाघ फंसता है! बेचारा जंगल का राजा अपने ही घर में ऐसे घिर गया, जैसे बिना पास के किसी वीआईपी कार्यक्रम में घुस आया हो। बाघ ने सोचा होगा, शिकार मैं करूं या ये गाड़ियां मुझे ही घेर लें? आगे-पीछे से जिप्सियां ऐसे जमा हो गईं मानो कोई फिल्मी स्टार आ गया हो, और सबको सेल्फी चाहिए। फर्क बस इतना कि स्टार मुस्कुराता है, बाघ सहम जाता है। वीडियो वायरल हुआ तो कार्रवाई भी हो गई। चार ड्राइवर, चार गाइड नाप दिए गए। वरना अगली बार शायद बाघ पर ही आरोप लगता, आपने ट्रैफिक नियम तोड़े! जंगल का असली आनंद दूरी में है, भीड़ में नहीं। वरना कल बाघ नहीं, सिर्फ कहानी बचेगी।

ताले में बंद भविष्य, भाषा में उलझी पढ़ाई

जालोर के बावतरा गांव में शिक्षा का अद्भुत प्रयोग चल रहा है। बच्चे पढ़ने आते हैं, पर पहले ताला लगाना सीखते हैं। जालोर में लगता है अब पाठ्यक्रम बदल गया है। भाषा नहीं समझो तो स्कूल ही बंद कर दो। ऊपर से फरमान है, बच्चों को वैश्विक बनाना है। नीचे से आवाज है, पहले स्थानीय तो बना लो! जिन बच्चों के घर में किताब अभी भी पुस्तक है, उनके सामने सीधे विदेशी भाषा परोसी जा रही है। नतीजा बच्चा न इधर का रह पा रहा है, न उधर का। ग्रामीणों की मांग भी कोई क्रांति नहीं। बस इतनी कि पढ़ाई समझ में आ जाए। पर व्यवस्था को शायद समझ में आना सबसे मुश्किल विषय लगता है। यहां शिक्षा कम, प्रयोग ज्यादा हो रहा है। फर्क बस इतना है प्रयोग करने वाले सुरक्षित हैं, और प्रयोग झेलने वाले... स्कूल के गेट पर ताला लगाए खड़े हैं।

CELEBRATING 42 YEARS OF TRUST
THE LIQUID GOLD

ISO 22000 2018 CERTIFIED COMPANY

स्वाद वो जो बना दे बात

मनभाती महक, लाजवाब स्वाद, भरपूर पौष्टिकता

सोना सिक्का®©

BEST CHOICE REFINED GROUNDNUT OIL

शुद्धता से समझौता नहीं

SONA SIKKA

महंगा है पर खरा है!

स्वाद और सेहत से भरा है

42 वर्षों से शुद्धता के हर मापदंड पर खरा उतरा है, इसलिए बेस्ट है सोना सिक्का

सोना सिक्का रखता है ख्याल आपकी सेहत का आपके परिवार की खुशियों का इसलिए सोना सिक्का तेल के निर्माण में गुणवत्ता शुद्धता और सेहत से कोई समझौता नहीं किया जाता है।

परिवार की सेहत के लिए सोना सिक्का में व्यंजन बनायें, खुद खायें, सबकों खिलायें....!

मिलते-जुलते नाम और अशुद्ध ब्रांड से सावधान. आपके स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ नहीं

SHAKUN

Shyam and Shyam Oils Pvt. Ltd. Jodhpur

Plot No. B 5,6,7 (A), 1st Phase, Basni Industrial Area, Jodhpur, (Raj.)

डिस्ट्रीब्यूटर बनने एवं डीलरशिप हेतु
टोल फ्री नं. पर सम्पर्क करें: 1800 313 3292

sonasikka.com | info@sonasikka.com | sonasikka
0291-2512333, 2512338
Available on : amazon | Flipkart

पश्चिम एशिया की जंग से बदलता वैश्विक शक्ति संतुलन

अमेरिकी चौधराहट खत्म होने की आहट

संजीव पांडेय, वरिष्ठ पत्रकार

ईरान और अमेरिकी-इजरायली गठबंधन के टकराव ने वैश्विक राजनीति की दिशा बदल दी है। होर्मुज़ जलडमरूमध्य पर नियंत्रण ने ईरान को नई रणनीतिक बढ़त दी है, जबकि अमेरिकी वर्चस्व डगमगाता दिख रहा है। चीन की बढ़ती भूमिका, नाटो की बिखरती एकजुटता और पाकिस्तान की सक्रिय मध्यस्थता के बीच भारत की सीमित भूमिका सवाल खड़े करती है। यह संघर्ष नई विश्व व्यवस्था की स्पष्ट दस्तक है।

ईरान और अमेरिकी-इजरायली गठबंधन के संघर्ष ने पश्चिम एशिया ही नहीं, पूरी दुनिया की जियो-पॉलिटिक्स और जियो-इकॉनॉमिक्स को बदल दिया है। हालात ऐसे बनते दिख रहे हैं कि अमेरिकी पराभव का युग शुरू हो चुका है। जिस ईरान के खिलाफ त्वरित सैन्य सफलता की उम्मीद जताई गई थी, उससे अब अमेरिका बात करने को उतावला है। पूरी दुनिया के वैश्विक ऑर्डर में बदलाव होता नजर आ रहा है। चीन पश्चिम एशिया से लेकर अफ्रीका तक ताकतवर होकर उभरा है, जबकि संघर्ष में सामने या पीछे वह प्रत्यक्ष रूप से नजर नहीं आ रहा है। अमेरिका द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद मिली चौधराहट को खोता नजर आ रहा है। जिस तरह मिखाइल गोर्बाचोव सोवियत संघ के पतन के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं, शायद कुछ विश्लेषक भविष्य में अमेरिकी नेतृत्व की नीतियों पर सवाल उठा सकते हैं। नाटो एलायंस में एकजुटता में दरार के संकेत नजर आ रहे हैं। अमेरिका का सबसे बड़ा सहयोगी ब्रिटेन की कुछ मुद्दों पर अलग प्राथमिकताएं नजर आई हैं। अभी तक अमेरिका का लगभग हर युद्ध, ब्रिटेन का भी युद्ध माना जाता था। अफगानिस्तान के साथ जॉर्ज बुश की रिपब्लिकन सरकार द्वारा छेड़ी गई जंग में नाटो एक साथ नजर आया था, आज ईरान के मामले में नाटो की भूमिका सीमित नजर आई।

संघर्ष की शुरुआत का आधार था ईरान का परमाणु कार्यक्रम। आज जब संघर्ष खत्म करने की बात हो रही है, तो परमाणु कार्यक्रम का मुद्दा पीछे छूट गया है। फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी को जोड़ने वाला होर्मुज़ जलडमरूमध्य में नौवहन को सुचारु रखना अब मुख्य मुद्दा बन गया है। ईरान लंबे समय से ऐसी स्थिति के लिए अपनी रणनीति तैयार करता रहा है कि कब उसे इस जलमार्ग से नौवहन रोकने या नियंत्रित करने का अवसर मिले। अब वह मौका आ गया है। होर्मुज़ जलडमरूमध्य को स्वेज नहर और बॉस्फोरस जलडमरूमध्य की तरह ही ईरान अब अपनी रणनीतिक संपत्ति मानेगा और दुनिया भर के व्यापार पर वह इसके जरिये टोल या नियंत्रण स्थापित करने की कोशिश कर सकता है।

दरअसल अब अमेरिका और ईरान के बीच वार्ता में ईरानी मिसाइल सिस्टम और परमाणु कार्यक्रम से भी बड़ा मुद्दा होर्मुज़ जलडमरूमध्य को खोलना हो गया है। व्यापक रूप से माना जा रहा है कि तनाव में कमी लाने के लिए इस रणनीतिक मार्ग पर समझौता जरूरी है। कुछ रिपोर्टों में पाकिस्तान की संभावित मध्यस्थ भूमिका की चर्चा हुई है। वार्ता में अब ईरान का मिसाइल भंडार, परमाणु कार्यक्रम, क्षेत्रीय प्रतिनिधि हाउथी, हिज़्बुल्लाह, हमास तथा यूरेनियम संवर्धन ही मुद्दे नहीं हैं, बल्कि इससे बड़ा मुद्दा दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण तेल मार्ग 'होर्मुज़ जलडमरूमध्य' का भविष्य हो गया है।

ईरानी रणनीति की गहराई

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अब होर्मुज़ जलडमरूमध्य पर ईरान की भूमिका को स्वीकार करते नजर आ रहे हैं। यदि ईरान अपने परमाणु कार्यक्रम और मिसाइल सिस्टम को नियंत्रित करने का वादा भी करेगा, तो वह होर्मुज़ जलडमरूमध्य पर निर्णायक प्रभाव चाहेगा। क्योंकि काफी बड़े आर्थिक नुकसान के बाद ईरान पुनर्निर्माण के लिए धन चाहता होगा। वह अंतरराष्ट्रीय आर्थिक प्रतिबंधों को पूरी तरह खत्म करने की मांग करेगा। हालांकि वार्ता में यूरेनियम संवर्धन पर भी विवाद जारी है। ईरान शून्य संवर्धन तथा अपने भंडार को विदेश भेजने की मांगों को खारिज कर रहा है।

दरअसल दुनिया ईरानी युद्ध-रणनीति को समझ नहीं पाई। इराकी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन के तर्ज पर ईरानी नेतृत्व को खत्म करने की योजना बनाई गई थी। लेकिन वे यह भूल गए थे कि ईरान, सद्दाम हुसैन से वर्षों लड़ चुका था और इस लड़ाई के दौरान उसे अमेरिकी रणनीति का पूरा अंदाजा लग गया था। 1990 के दशक से ईरान और उसके सुरक्षा अधिकारी होर्मुज़ जलडमरूमध्य को एक प्रतिरोध के साधन के रूप में इस्तेमाल करने की रणनीति बना रहे थे। ईरान ने वर्षों तक उस परिदृश्य की तैयारी की, जिसमें होर्मुज़ जलडमरूमध्य को बंद करना शामिल था। होर्मुज़ जलडमरूमध्य को बंद करने के हर कदम की योजना बनाई गई थी। आज यही होर्मुज़ जलडमरूमध्य ईरान का सबसे प्रभावी रणनीतिक उपकरण है।

पाकिस्तान की भू-राजनीतिक बढ़त

अमेरिका-ईरान संघर्ष के बीच पाकिस्तान की विदेश नीति एकाएक चर्चा का विषय बन गई है, क्योंकि आर्थिक रूप से बदहाल पाकिस्तान मध्यस्थ की भूमिका में आ गया। इस्लामाबाद में शांति वार्ता कराने में पाकिस्तान सक्रिय हो गया। भले ही वार्ता पूरी तरह सफल न हुई हो, लेकिन एशियाई क्षेत्र में आई गर्मी में कुछ नरमी जरूर आई। पाकिस्तान के भूगोल की इसमें अहम भूमिका है। बेशक पाकिस्तान आर्थिक रूप से कमजोर है, लेकिन अपनी महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थिति के कारण उसका महत्व स्थापना काल से बना हुआ है। मध्य-पूर्व की किसी भी बड़ी समस्या में पाकिस्तान की भूमिका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बनी रही है।

याद करें, जब अफगानिस्तान में सोवियत सेना की एंट्री हुई थी, तब पाकिस्तानी शासक जनरल जिया-उल-हक से अमेरिका ने सहायता मांगी थी, क्योंकि पाकिस्तान के भूगोल का इस्तेमाल किए बिना अमेरिका अफगानिस्तान में सोवियत गतिविधियों को नियंत्रित नहीं कर सकता था। इसका फायदा जनरल जिया ने उठाया। अमेरिकी दबाव के बावजूद पाकिस्तान ने अपना परमाणु कार्यक्रम जारी रखा और उसी दौर में अरबों डॉलर की अमेरिकी सहायता भी प्राप्त की। अमेरिकी प्रशासन ने पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम पर आंखें मूंद ली थीं।

2001 में भी जनरल परवेज मुशर्रफ ने पाकिस्तान के भूगोल का लाभ उठाया और अफगानिस्तान में वॉर ऑन टेरर में अमेरिका का सहयोगी बनने के बदले भारी आर्थिक सहायता प्राप्त की। अब पाकिस्तान के नेतृत्व ने इस स्थिति में मध्यस्थता की संभावनाएं तलाशने की कोशिश की है। ईरान की सीमा अफगानिस्तान की तरह पाकिस्तान से मिलती है। इसका फायदा पाकिस्तान ने उठाया और इस्लामाबाद को वार्ता के संभावित मंच के रूप में सामने लाया गया। यह भारत के लिए चिंता का विषय बन सकता है।

पाकिस्तान की मज़बूरी... ईरान-अमेरिका संघर्ष में मध्यस्थता की पाकिस्तान की सक्रिय भूमिका केवल कूटनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं, बल्कि उसकी घरेलू आर्थिक मजबूरी भी है। पाकिस्तान अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़ मार्ग पर बहुत निर्भर है, और संघर्ष के कारण तेल कीमतों में बढ़ोतरी ने उसकी पहले से कमजोर अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव डाला है। आईएमएफ कार्यक्रम के तहत विदेशी मुद्रा भंडार बनाए रखने की शर्तों के बीच महंगा तेल, बढ़ता आयात बिल, महंगाई और व्यापार घाटा पाकिस्तान के लिए गंभीर संकट बन सकते हैं। साथ ही, खाड़ी देशों में काम करने वाले लाखों पाकिस्तानी नागरिकों की आजीविका भी क्षेत्रीय स्थिरता से जुड़ी है, इसलिए इस संघर्ष का जल्द अंत पाकिस्तान के लिए रणनीतिक आवश्यकता था।

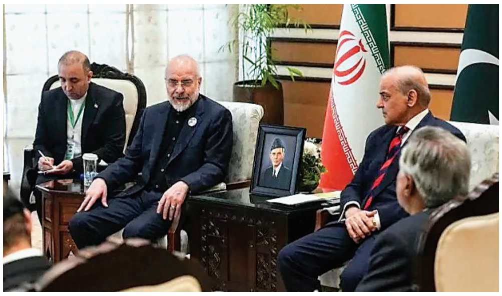

- भूराजनीतिक स्तर पर पाकिस्तान ऐसी स्थिति चाहता है जिसमें न तो ईरान पूरी तरह कमजोर हो और न ही इतना शक्तिशाली कि खाड़ी क्षेत्र का संतुलन बदल दे। ईरान से लगी लंबी सीमा, सऊदी अरब से रक्षा संबंध और चीन से आर्थिक साझेदारी के कारण पाकिस्तान को संतुलन साधना पड़ता है। यही कारण है कि उसने स्वयं को एक मध्यस्थ के रूप में प्रस्तुत किया। इस भूमिका से पाकिस्तान की अंतरराष्ट्रीय छवि में सुधार हुआ है। जिस देश की छवि लंबे समय तक अस्थिरता और सुरक्षा चुनौतियों से जुड़ी रही, वही अब एक बड़े क्षेत्रीय संकट को शांत कराने वाले खिलाड़ी के रूप में देखा जा रहा है। इससे उसे कूटनीतिक मान्यता, निवेश, ऋण और वैश्विक मंचों पर नई स्वीकार्यता मिल सकती है।
- हालांकि इस सफलता के साथ जोखिम भी जुड़े हैं। यदि वार्ता प्रक्रिया विफल होती है या अमेरिका-ईरान संबंध फिर बिगड़ते हैं, तो पाकिस्तान असहज स्थिति में फंस सकता है। घरेलू राजनीति में इस घटनाक्रम ने सेना प्रमुख असीम मुनीर और सैन्य प्रतिष्ठान की शक्ति को और मजबूत किया है, जिसे पाकिस्तान की "हाइब्रिड व्यवस्था" की सफलता के रूप में देखा जा रहा है। भारत के लिए तत्काल राहत यह है कि संघर्ष समाप्त होना क्षेत्रीय स्थिरता के पक्ष में है, लेकिन दीर्घकाल में कूटनीतिक रूप से अलग-थलग पड़ा पाकिस्तान अब फिर सक्रिय भूमिका में लौटता दिख रहा है। साथ ही, यदि पाकिस्तान में सेना का प्रभाव और बढ़ता है, तो भारत-पाक संबंधों पर इसका नकारात्मक असर भी पड़ सकता है।

भारत की सीमित भूमिका

यही वह बिंदु है जहां भारत की विदेश नीति पर सवाल उठते हैं। संतुलन साधने की कोशिश के बावजूद भारत इस संकट में निर्णायक भूमिका निभाने में पीछे रह गया। न तो वह प्रभावी मध्यस्थ बन सका और न ही अपने रणनीतिक हितों को आक्रामक तरीके से सामने रख पाया।

व्यवस्था को इलाज की जरूरत

निजी हस्तक्षेप का उलझा गणित

मनीष गोधा वरिष्ठ पत्रकार

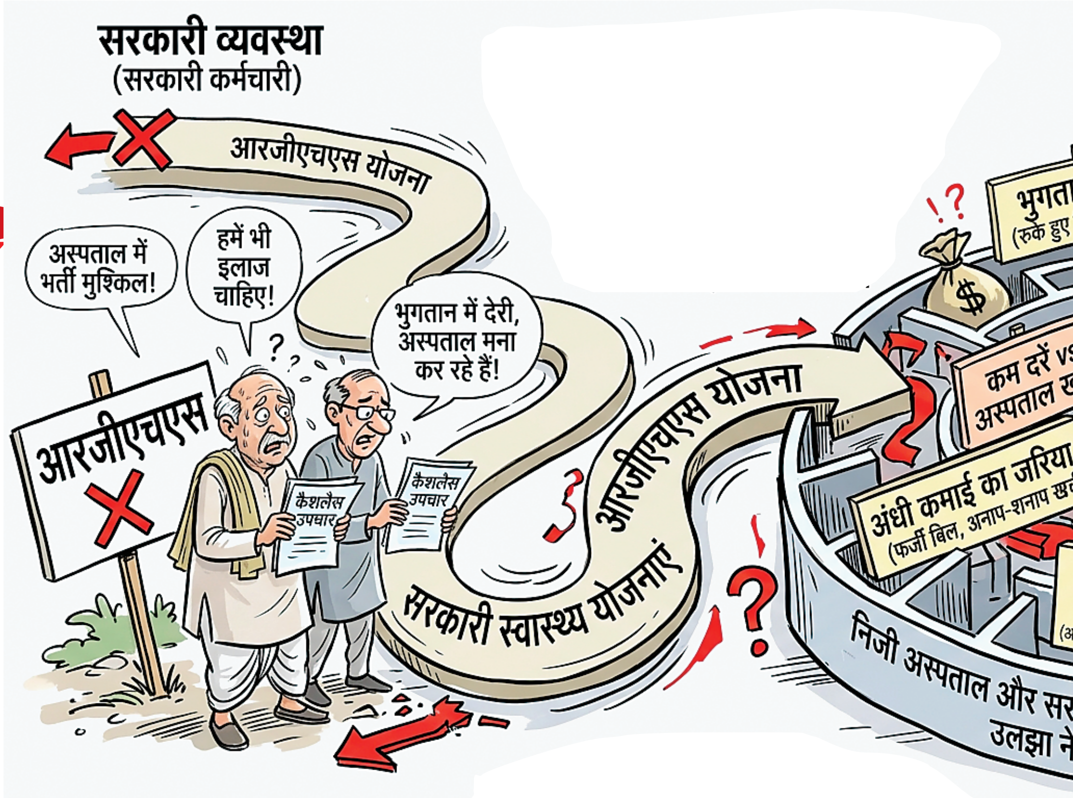

सरकारी योजनाओं में निजी क्षेत्र की भागीदारी, ये विचार सुनने में भले ही लोकतांत्रिक और सर्वहितकारी लगता हो, लेकिन हकीकत में सार्वजनिक और निजी क्षेत्र का ये घालमेल ऐसी योजनाओं के लाभार्थियों के लिए जी का जंजाल बन गया है। और ये योजनाएं एक वर्ग विशेष की हितों की पूर्ति करती दिख रही हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है प्रदेश में स्वास्थ्य क्षेत्र में चल रही राजस्थान गवर्नमेंट हैल्थ स्कीम जिसे हम आरजीएचएस के नाम से जानते हैं। दिलचस्प बात यह है कि इस योजना के लाभार्थी सरकारी कर्मचारी-अधिकारी और राजनेता ही हैं, लेकिन वे ही इस योजना से अब सबसे ज्यादा त्रस्त दिख रहे हैं। हालांकि आम आदमी के लिए चल रही स्वास्थ्य बीमा योजना का हाल भी बहुत अच्छा नहीं है और इस योजना के लाभार्थी भी सरकारी स्वास्थ्य बीमा से ज्यादा खुद की मेडिक्लेम पॉलिसी पर ज्यादा भरोसा करते हैं।

ये योजनाएं इस उद्देश्य के साथ शुरू की गई कि चूंकि निजी क्षेत्र कथित तौर पर गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं प्रदान कर रहा है, इसलिए इनका लाभ हर वर्ग को मिलना चाहिए। लेकिन ये योजनाएं अब ऐसी समस्या बनती जा रही हैं जिसका कोई समाधान सरकार के पास नजर नहीं आ रहा है। सुधार के नाम पर आरजीएचएस को भी बीमा कम्पनियों के भरोसे छोड़ने पर विचार शुरू हो गया है।

आरजीएचएस- दिखावे की आदर्श योजना

केन्द्र सरकार अपने अधिकारियों और कर्मचारियों को सरकारी और निजी अस्पतालों में उपचार के लिए सैंट्रल गवर्नमेंट हैल्थ स्कीम यानी सीजीएचएस संचालित करती है। इसी योजना की तर्ज पर प्रदेश की पिछली कांग्रेस सरकार ने राज्य सरकार के अधिकारियों, कर्मचाारियों और पेंशनर्स के लिए राजस्थान गर्वनमेंट हैल्थ स्कीम यानी आरजीएचएस लागू की। यही योजना सरकार के विधायकों, मंत्रियों यहां तक की मुख्यमंत्री के लिए भी लागू है। इसका पैटर्न लगभग सीजीएचएस जैसा ही रखा गया। इसके तहत कर्मचारियों और अधिकारियों और पेंशनर्स को एक निश्चित सीमा तक सरकारी के साथ ही निजी अस्पतालो में ओपीडी और आईपीडी में कैशलैस उपचार की सुविधा दी जाती है। योजना की आदर्श स्थिति यह है कि योजना से सम्बद्ध किसी भी अस्पताल में सरकारी अधिकारी और कर्मचारी उपचार के लिए जा सकता है। सरकार ने उपचार की दरें निर्धारित की हुई है और इन निर्धारित दरों के अनुसार उसके उपचार का जो भी खर्च होता है वह सरकार वहन करते हुए सम्बन्धित अस्पताल को भुगतान करती है। इसी तरह आरजीएचएस से सम्बद्ध दवाई की दुकानों से जो दवाइयां ली जाती है, उसका भुगतान सरकार करती है।

वास्तविक स्थिति- अस्पताल में एडमिट होना भी मुश्किल

इस योजना की वास्तविक स्थिति यह है कि इसका कोई लाभार्थी गम्भीर मरीज है तो उसका किसी ढंग के निजी अस्पताल में भर्ती होना तक मुश्किल है। भर्ती हो भी जाए तो अस्पताल की कोशिश यह रहती है कि जल्द से जल्द उससे छुटकारा पाया जाए। इसका कारण यह है कि सरकार ने योजना के तहत विभिन्न उपचारों की दरें निर्धारित कर रखी हैं जो निजी अस्पतालों द्वारा वसूल की जानी वाली दरों के मुकाबले कम है। ऐसे में यदि निजी अस्पताल को लगता है कि मरीज को लम्बे समय तक भर्ती रखना पड़ेगा तो आर्थिक नुकसान को देखते हुए अस्पताल किसी ना किसी बहाने से मरीज को डिस्चार्ज कर देते हैं। आरजीएचएस का नाम सुनते ही कोई दूसरा अस्पताल भी उसे आसानी से भर्ती नहीं करता। इस तरह के कई केस पिछले दिनों में सामने आ चुके हैं। पीड़ाजनक स्थिति यह है कि इसकी कोई सुनवाई भी नहीं है।

सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं में निजी क्षेत्र की भागीदारी ने सुविधा के बजाय नई समस्याएं खड़ी कर दी हैं। आरजीएचएस जैसे मॉडल में भुगतान में देरी, कम दरें और मुनाफे का टकराव लाभार्थियों को ही परेशान कर रहा है। यह लेख सवाल उठाता है कि क्या यह घालमेल व्यवस्था को सुधार रहा है या उसे और जटिल बना रहा है।

सरकार से भुगतान में देरी भी बड़ा कारण

- सरकार ने वाहवाही लूटने के लिए इस योजना में निजी अस्पतालों को शामिल तो कर रखा है, लेकिन खुद सरकार की ओर से इस योजना की मॉनिटरिंग और क्रियान्वयन में इतनी ढिलाई है कि निजी अस्पतालों को सरकार से समय पर भुगतान नहीं मिलता। अस्पतालों का लाखों रुपए का भुगतान रूका रहता है। ऐसे में अस्पतालो की कोशिश रहती है कि इस योजना के लाभार्थी मरीजों को जहां तक हो सके टाला जाए।
- सरकार की ढीली मॉनिटरिंग की स्थिति यह है कि योजना जब शुरू की गई तो इस पर सालाना लगभग 1200 करोड़ का खर्च माना गया था, लेकिन शुरूआती वर्षों में ही यह खर्च तीन से चार हजार करोड़ तक जा पहुंचा। कारण यह था कि निजी अस्पतालों और योजना से सम्बद्ध दवा विक्रेताओं ने इसे अंधी कमाई का जरिया मान लिया। उपचार के नाम पर अनाप-शनाप खर्च और फर्जी बिल बना कर करोड़ों का भुगतान उठाया गया, लेकिन ना इसे देखा गया और ना रोका गया।
- अब जब योजना का खर्च सीमा से बाहर जाने लगा तो पिछले वर्ष सरकार जागी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से सरकार के पास आने वाले हर बिल की जांच की जाने लगी। जांच में सामने आया कि बड़े स्तर पर फर्जीवाड़ा चल रहा था। ऐसे में वित्त विभाग ने बड़े पैमाने पर भुगतान रोके और गड़बड़ी करने वाले अस्पतालों और दवा विक्रेताओ की योजना से सम्बद्धता खत्म की गई। अब चूंकि सख्ती की जा रही है और भुगतान में देर हो रही है तो योजना का लाभ पाना ही मुश्किल हो गया है।
- कुछ ऐसी ही स्थिति सरकारी स्वास्थ्य बीमा योजना की भी है। इसे कभी भामाशाह योजना के नाम से चलाया जाता है, कभी मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना के नाम से और अभी यह मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के नाम से चल रही है। इसके तहत प्रदेश के करीब 30 हजार से ज्यादा अस्पतालों में लोगों को 25 लाख रुपए तक का कैशलैस इलाज उपलब्ध कराया जाता है। चूंकि इस योजना के लाभार्थियों का दायरा बड़ा है और कई छोटे अस्पताल चल ही इसी योजना के भरोसे रहे है, इसलिए इसके क्रियान्वयन को लेकर बहुत ज्यादा शिकायतें नहीं है, लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि इस योजना के लाभार्थी जब किसी बड़े अस्पताल में जाते हैं तो दोयम दर्जे के व्यवहार का शिकार होते हैं और जिस उम्मीद के साथ इलाज के लिए जाते हैं, वह उन्हें नहीं मिल पाता है।

आखिर इस घालमेल की जरूरत क्या है

इन बड़ी योजनाओं के क्रियान्वयन की हकीकत देखने के बाद सबसे बड़ा सवाल यही उठता है कि आखिर सरकारी योजना में निजी क्षेत्र का घालमेल करने की जरूरत क्या है? क्या सरकार अपने स्तर अपनी चिकित्सा व्यवस्था को इतना बेहतर नहीं बना सकती कि उसे निजी क्षेत्र के सहारे की जरूरत ही नहीं पड़े?

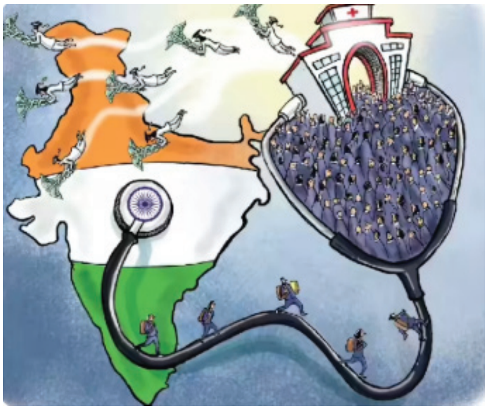

दरअसल यह बात तो सही है कि हमारे देश की जनसंख्या को देखते हुए हर व्यक्ति तक स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाएं सिर्फ सरकारी माध्यमों से पहुंचाना सम्भव नहीं है, इसीलिए निजी क्षेत्र की जरूरत है और हमेशा बनी भी रहेगी। लेकिन, हम देख रहे हैं कि निजी क्षेत्र को शामिल करते हुए सरकार की योजना चलाया जाना अपेक्षित लाभ नहीं दे रहा है और सुविधा के बजाए समस्या का कारण बन रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि निजी क्षेत्र लाभ के सिद्धांत पर काम करता है। उसकी अपनी आर्थिक और वित्तीय व्यवस्थाएं होती हैं। सरकार के लिए स्वास्थ्य सेवा का माध्यम हो सकता है, लेकिन निजी क्षेत्र के लिए अब यह उद्योग का रूप ले चुका है जहां भारी-भरकम निवेश किया जाता है। ऐसे में निजी क्षेत्र से लाभ के सिद्धांत को परे रखते हुए काम करने की उम्मीद रखना बहुत हद तक बेमानी है और यही कारण है कि सरकार के इन योजनाओं के प्रयोग दो विपरीत विचारों को मिलाने की एक विफल कोशिश के रूप में सामने आ रहे हैं।

विभिन्न सरकारी योजनाओं का मूल्यांकन और अध्ययन करने वाली संस्था शिवचरण माथुर सोशल पॉलिसी एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक मनीष तिवारी का मानना है कि सरकार के पास संसाधन पर्याप्त नहीं होते हैं और इसीलिए उसे निजी क्षेत्र के सहारे की जरूरत होती है। लेकिन, सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि सरकार चलाने वाले लोग निजी क्षेत्र को योजना से जोड़ने के साथ ही कुछ अनुचित अपेक्षाएं रखना शुरू कर देते हैं और यहीं से उस नेक्सस का निर्माण होता है जो अच्छे उद्देश्य से शुरू की गई योजना को भी बर्बाद कर देता है। इसके अलावा विभाग चलाने वालों के लगातार तबादले भी एक समस्या है। हर अधिकारी विभाग और योजनाओं को अपने तरीके से चलाना चाहता है। आरजीएचएस के मामले में तो सरकार, निजी क्षेत्र और लाभार्थी तीनों ने ही इसका अनुचित फायदा उठाने की कोशिश की और इसी कारण यह योजना अब परेशानी का कारण बन गई है।

उपाय क्या है

▪ निजी क्षेत्र के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। यह ना सिर्फ रोजगार देता है, बल्कि पूंजी निर्माण भी करता है, लेकिन इसे सरकारी योजना से जोड़ने के बजाए ज्यादा बेहतर होगा कि इसे अपने हिसाब से काम करने दिया जाए और सरकार अपनी योजनाओं को अपने दम पर ही चलाए। मसलन आरजीएचएस की ही बात की जाए तो इससे पहले सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के उपचार के लिए उनके मेडिकल बिलों के पुनर्भरण की व्यवस्था लागू थी। यह व्यवस्था वर्षों से चल रही थी और इसमे बहुत ज्यादा परेशानी नहीं थी। कर्मचारी सरकारी या निजी अस्पतालो में उपचार कराता था और सरकार निर्धारित दरों पर उसके मेडिकल बिलों का पुनर्भरण कर देती थी। आरजीएचएस की मौजूदा स्थिति को देखते हुए ज्यादातर कर्मचारी चाहते हैं कि पुरानी व्यवस्था फिर से लागू कर दी जाए। इसमें पुनर्भरण में समय लगता था, लेकिन कम से कम उपचार मिल जाता था।

▪ कुल मिला कर मुद्दा यह है कि सरकार यदि वास्तव में जनता तक योजनाओं का सही ढंग से लाभ पहुंचाना चाहती है, अपनी योजनाओं को अपने ही दम पर संचालित करे, क्योंकि जितना पैसा इन योजनाओं को चलाने के लिए निजी क्षेत्र को दिया जा रहा है या मॉनिटरिंग पर खर्च हो रहा है, उतने में तो सरकार स्वयं इन योजनाओं को चला सकती है। सरकार के पास पैसे और संसाधन दोनो की ही कमी नहीं है और अब तो तकनीक का साथ भी है जो सरकारी पैसे का सही उपयोग सुनिश्चित कर सकती है। वहीं निजी क्षेत्र पर कुछ नियामक प्रतिबंध लागू किए जा सकते हैं ताकि आम आदमी निजी क्षेत्र की लाभ की अंधी चाहत का शिकार ना बने।

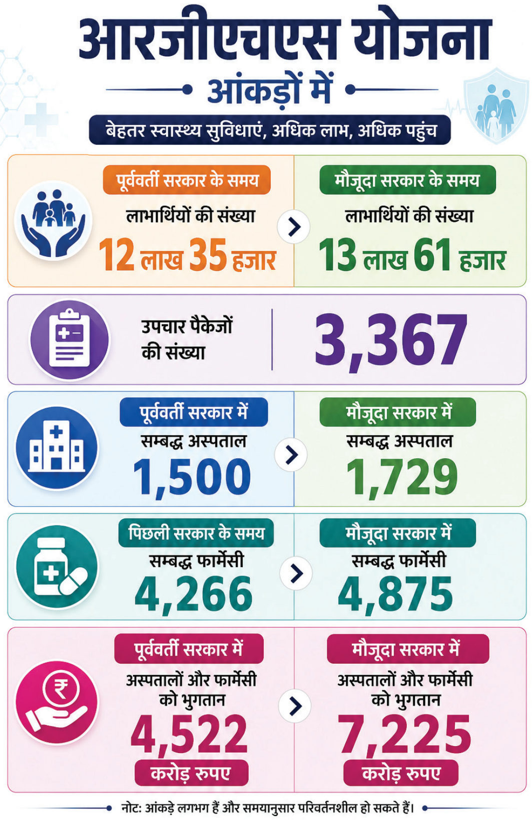

Sir Pratap Singh Ji
Benevolent Ruler
Rajasthan

जोधपुर स्थापना दिवस कि आप सभी को नव शिक्षा समाज द्वारा संचालित सरप्रताप विधि महाविद्यालय, सर प्रताप सीनियर सेकेंडरी स्कूल और सर प्रताप कॉलेज की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

Munshi Shubhlal ji
Pioneer &
Philanthropist

सफलता की ऊँचाइयों पर
सर प्रताप के सितारे

सत्र 2025–26 में Sir Pratap Senior Secondary School के विद्यार्थियों ने राजस्थान बोर्ड की 10वीं एवं 12वीं परीक्षाओं में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त कर विद्यालय की गौरवशाली परंपरा को और मजबूत किया है। विद्यालय के टॉपर्स विद्यार्थियों ने अपने अथक परिश्रम, अनुशासन, समर्पण और निरंतर अभ्यास के बल पर उत्कृष्ट अंक अर्जित किए। इन विद्यार्थियों ने न केवल अपने परिवार का नाम रोशन किया, बल्कि पूरे विद्यालय और क्षेत्र के लिए गर्व का विषय बने हैं। उनकी सफलता यह दर्शाती है कि यदि सही दिशा, सकारात्मक वातावरण और निरंतर प्रयास का साथ हो, तो कोई भी लक्ष्य कठिन नहीं होता। इस उपलब्धि में विद्यालय के अनुभवी और समर्पित शिक्षकों का मार्गदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, जिन्होंने विद्यार्थियों को हर कदम पर प्रेरित किया और उनकी शंकाओं का समाधान कर उन्हें आगे बढ़ने की शक्ति दी।

विद्यालय में उपलब्ध अनुशासित और प्रेरणादायक शैक्षणिक वातावरण, नियमित कक्षाओं के साथ-साथ अतिरिक्त अध्ययन सत्र, टेस्ट श्रृंखला, तथा व्यक्तिगत मार्गदर्शन ने विद्यार्थियों की तैयारी को सशक्त बनाया। टॉपर्स विद्यार्थियों ने अपनी सफलता का पूरा श्रेय Sir Pratap Senior Secondary School को देते हुए कहा कि यहाँ का सकारात्मक माहौल, शिक्षकों का समर्पण और विद्यालय प्रबंधन का सहयोग उनकी उपलब्धि की सबसे बड़ी ताकत रहा है। उन्होंने बताया कि समय प्रबंधन, नियमित अध्ययन, आत्मविश्वास और निरंतर अभ्यास ने उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया। यह टॉपर समूह न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता का प्रतीक है, बल्कि अनुशासन, संस्कार और दृढ़ निश्चय का जीवंत उदाहरण भी है। अब ये विद्यार्थी अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर हैं और उच्च शिक्षा के माध्यम से अपने सपनों को साकार करने के लिए तत्पर हैं। उनकी यह सफलता आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी और यह संदेश देती है कि मेहनत, लगन और सही मार्गदर्शन से हर सपना साकार किया जा सकता है।

उद्घाटन से पहले आगजनी ने उठाए सुरक्षा और तैयारियों पर गंभीर सवाल

रिफाइनरी की राह में अग्निपथ

धर्मसिंह भाटी, वरिष्ठ पत्रकार

बाड़मेर की पचपदरा रिफाइनरी उद्घाटन से ठीक पहले आग की घटना से सवालों के घेरे में आ गई। तकनीकी खामी से लगी आग ने सुरक्षा तंत्र, जल्दबाजी में तैयारियों और निगरानी व्यवस्था पर गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं। हालांकि जनहानि नहीं हुई, लेकिन करोड़ों की परियोजना की विश्वसनीयता और प्रबंधन की कार्यशैली पर बहस तेज हो गई है।

एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी लिमिटेड पचपदरा देश को समर्पित होने से महज बीस घंटे पहले आग की लपटों के साथ सवालों से घिर गई। रिफाइनरी की राह अग्निपथनुमा होने के कारण न केवल देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 21 अप्रैल को प्रस्तावित अपना पचपदरा दौरा स्थगित करना पड़ा, बल्कि रिफाइनरी निर्माण का जिम्मा संभाल रही एचपीसीएल को अपना मुंह खोलने में छह दिन का समय लग गया। 20 अप्रैल को हुई आगजनी की घटना के ठीक छठे दिन एचपीसीएल ने एक बयान जारी कर बताया कि प्रेसर गेज प्वाइंट में रिसाव के चलते क्रूड डिस्टीलेशन यूनिट में आग लग गई। एचपीसीएल के इस आधिकारिक बयान के बाद अटकलों पर विराम लगा। अब उम्मीद की जा रही है कि जून के पहले पखवाड़े में प्रधानमंत्री के आगमन का कार्यक्रम बनेगा और एशिया की सबसे बड़ी रिफाइनरी राष्ट को समर्पित कर दी जाएगी।

बाड़मेर में क्रूड ऑयल की खोज के करीब एक दशक बाद वर्ष 2010 के आस-पास बाड़मेर जिले में रिफाइनरी को लेकर हलचल शुरू हुई। रिफाइनरी के लिए जमीन चिन्हित करने में करीब तीन वर्ष का समय लग गया। वर्ष 2013 में तत्कालीन यूपीए सरकार की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने पचपदरा में रिफाइनरी की नींव का पत्थर रखा, लेकिन धरातल पर कामकाज शुरू होने से पहले ही केन्द्र में यूपीए सरकार व राज्य में कांग्रेसनीत सरकार की विदाई हो गई। केन्द्र में एनडीए सरकार व राज्य में भाजपानीत सरकार आने के बाद एक बार फिर से रिफाइनरी का शिलान्यास देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों हुआ। 4500 एकड़ में फैली रिफाइनरी की आरंभिक लागत करीब 40 हजार करोड़ रुपए आंकी गई, लेकिन समय पर काम शुरू नहीं होने व काम शुरू होने के बाद कार्य की गति धीमी होने के कारण कार्यपूर्णता तक रिफाइनरी की लागत ठीक दुगुनी 80 हजार करोड़ रूपए हो गई है। रिफाइनरी में राजस्थान सरकार की भागीदारी 26 प्रतिशत है। रिफाइनरी में तेलशोधन आरंभ होने के बाद राज्य को प्रतिवर्ष करीब पांच हजार करोड़ रूपए की आय होगी।

आग की लपटों के साथ उठे सवाल

अप्रैल माह के आरंभ में रिफाइनरी के उदघाटन की तैयारियां शुरू हो गई। उद्घाटन की तिथि 21 अप्रैल से ठीक पहले 20 अप्रैल तक लगभग सभी प्रकार की तैयारियां पूर्ण कर ली गई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, राज्य के मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास व एचपीसीएल के उच्चाधिकारियों सहित सभी स्तर के सक्षम अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने रिफाइनरी का जायजा लिया। उद्घाटन अवसर पर करीब दो लाख लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए करोड़ों रुपए खर्च किए गए, लेकिन 20 अप्रैल को दोपहर में रिफाइनरी की एक यूनिट से काले धुंए के गुबार व आग की लपटें उठती हुई दिखाई दी। क्रूड डिस्टीलेशन यूनिट में लगी इस आग को बुझाने के लिए करीब दो घंटे का समय लगा। तीन हजार करोड़ रुपए की लागत से बनी इसी यूनिट का प्रधानमंत्री को उद्घाटन करना था। इस यूनिट पर पिछले कई महीनों से करीब दो हजार अधिकारी कर्मचारी व श्रमिक काम कर रहे थे। गनीमत यह रही कि हादसा लंच के समय और उदघाटन अवधि से पहले हुआ, जिससे कोई जनहानि नहीं हुई। फिर भी आग की इन लपटों ने कई सवालों को जन्म दिया। सबसे अहम सवाल यह कि क्या उद्घाटन की तिथि जल्दबाजी में तय की गई, जिसके चलते कार्य तेज गति से करने का दवाब बन गया, परिणामस्वरूप हादसा हो गया। रिफाइनरी नवीनतम व उच्च तकनीकयुक्त होने के बावजूद हादसा कैसे हो गया। बताया जा रहा है कि हादसे से पहले अलार्म सिस्टम ने अपना काम नहीं किया, जिसके चलते प्रेशर गेज प्वांइट पर हाइडोकार्बन का रिसाव हुआ और हादसा हो गया। इसके अलावा अटकलबाजियां यहां तक हुई कि साइबर अटैक हो गया, प्रधानमंत्री सुरक्षा के नजरिए से भी कई सवाल खड़े हुए। लिहाजा एनआईए को जांच के लिए आना पड़ा।

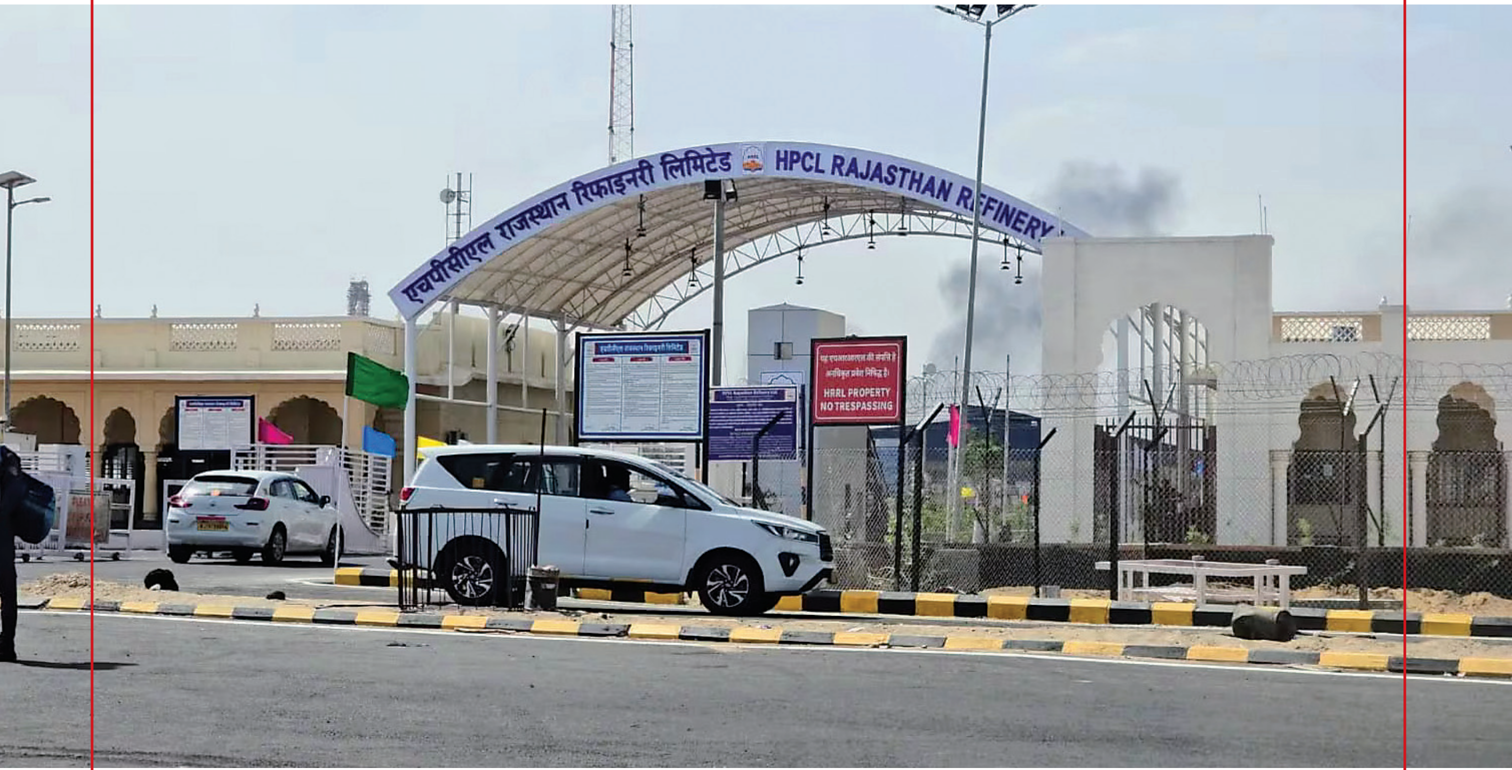

9 मिलियन मीटिक टन तेलशोधन

पचपदरा रिफाइनरी की तेलशोधन क्षमता सालाना करीब नौ मिलियन मीटिक टन की है। इसमें से डेढ़ मिलियन मीटिक टन क्रूड बाड़मेर के ही मंगला ऑयल फील्ड से यहां पहुंचेगा। पचपदरा व मंगला ऑयल फील्ड नागाणा के बीच 47 किलोमीटर लम्बी पाइपलाइन बिछाई गई है, इसी से क्रूड यहां पहुंचेगा। वहीं साढ़े सात मिलियन मीटिक टन क्रूड रूस व खाड़ी देशों से आयात होकर मुंद्रा पोर्ट से पाइपलाइन से पचपदरा आएगा। पचपदरा से मुंद्रा के बीच में 487 किलोमीटर लम्बी पाइपलाइन बिछी हुई है। पचपदरा रिफाइनरी से तेलशोधन के बाद पाइपलाइन से ही इसे गुजरात के पालनपुर टर्मिनल तक पहुंचाया जाएगा, जिसे यहां से यूरोप सहित दुनिया भर के 106 देशों को निर्यात किया जाएगा।

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय

रिफाइनरी में आग की घटना से निश्चित रूप से सबक लिया गया है। विभिन्न एजेन्सियों की जांच के बाद जो रिपोर्ट आएगी, उसके बाद जिम्मेवारों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी, लेकिन इससे पहले ही आगजनी से क्षतिग्रस्त हुई यूनिट का काम पुनः शुरू कर दिया गया है। एचपीसीएल का कहना है कि मई महीने के दूसरे पखवाड़े में मुख्य उत्पादों का परीक्षणात्मक उत्पादन शुरू कर दिया जाएगा। इस कार्य में टाटा सहित विश्वभर की आधा दर्जन से अधिक कम्पनियां अपने-अपने काम लग गई है। रिफाइनरी की अन्य इकाइयां की कमीशनिंग उन्नत चरण में है। ऐसे में संभावना है कि जून महीने के प्रथम पखवाड़े में रिफाइनरी देश को समर्पित की जाएगी और एक जुलाई से यह रिफाइनरी युद्ध स्तर पर पूर्ण क्षमता के साथ तेलशोधन शुरू कर देगी।

|| जय बाबा री, जय श्री कृष्णा ||

500 रुपए, अनगिनत चुनौतियां...

और आज करोड़ों की उड़ान

"मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। आत्मविश्वास, ईमानदारी और लगन के साथ हर ऊंचाई हासिल की जा सकती है।"

अनिल राठी की कहानी सिर्फ सफलता नहीं, जिद की मिसाल है

पाली निवासी और सूरत के सफल साड़ी व्यवसायी अनिल राठी का जीवन इस विचार का सजीव उदाहरण है। यह सिर्फ एक व्यवसायी की सफलता की कहानी नहीं, बल्कि संघर्ष, धैर्य, परिवार, संस्कार और विश्वास की वह यात्रा है, जो हर उस व्यक्ति को प्रेरित करती है जो जीवन में कुछ बड़ा करना चाहता है।

- करीब 20 साल पहले, जब अनिल राठी मात्र 500 रुपए जेब में लेकर पाली से निकले थे, तब शायद ही किसी ने सोचा होगा कि यही युवक एक दिन देश-विदेश में अपनी पहचान बनाएगा। वे स्वर्गीय नंदकिशोर राठी के पुत्र हैं, जिनकी सीख और संस्कार आज भी उनके हर निर्णय में झलकते हैं।

- आज अनिल राठी का नाम सूरत के सफल साड़ी व्यवसायियों में गिना जाता है। उनका कारोबार न केवल पूरे भारत में फैला हुआ है, बल्कि विदेशों तक भी उनकी साड़ियों की मांग है। लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने का सफर आसान नहीं था—यह संघर्ष, असफलता और लगातार प्रयासों से भरा हुआ था।

सफलता का आध्यात्मिक आधार

अनिल राठी न केवल एक सफल व्यवसायी हैं, बल्कि गहरी धार्मिक आस्था रखने वाले व्यक्ति भी हैं। वे बाबा रामदेव जी और श्रीनाथजी के परम भक्त हैं और अपनी सफलता का श्रेय भगवान की कृपा को देते हैं। पिछले 22 वर्षों से वे हर साल परिवार सहित रामदेवरा की पैदल यात्रा करते आ रहे हैं। यह उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। राठी हर माह सूरत से रामदेवरा दर्शन के लिए जाते हैं। साथ ही, वे समाजसेवा में भी सक्रिय हैं। गरीबों, जरूरतमंदों और पशु-पक्षियों की सेवा में वे हमेशा आगे रहते हैं। दान-पुण्य और सामाजिक कार्यों में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

आज देश-विदेश में फैला कारोबार

आज अनिल राठी का व्यवसाय राजस्थान, गुजरात, तेलंगाना महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु सहित पूरे भारत में फैला हुआ है।

विदेशों में भी उनके द्वारा तैयार की गई साड़ियों की अच्छी मांग है, खासकर वहां रहने वाले भारतीयों के बीच उनकी सिल्क और बनारसी साड़ियां बेहद लोकप्रिय हैं।

हर साल उनका कारोबार करोड़ों रुपए के टर्नओवर तक पहुंचता है। वे लगातार नई डिजाइनों, आधुनिक ट्रेंड और उच्च गुणवत्ता पर काम करते हैं।

"हमारी कोशिश रहती है कि ग्राहक को सिर्फ उत्पाद नहीं, भरोसा मिले," वे कहते हैं।

यूं हुई सफर

500 रुपए 3

अनिल राठी बताते हैं कि
उनके पास केवल 500 रु
सपना और खुद पर भरोस
उन्होंने सबसे पहले
उन्होंने व्यापार शुरू कर
परिस्थितियां अनुकूल नहीं
पहुंचे, जहां भी उन्होंने म
सफलता नहीं मिली।
"कई बार लगा कि श
है, लेकिन अंदर से एक
नहीं है," वे बताते हैं।
लगातार असफलताओं
मानी। यही जिद उन्हें सूरत
जिसने उनकी मेहनत को

सहयोगियों

अनिल राठी अपने सा
कर्मचारी नहीं, बल्कि
मैनेजर हंसराज जाखड़
साथ जुड़े हुए हैं। अनिल
हैं। उनका पूरा स्टाफ म
है, जो व्यापार की सफल
अनिल राठी की फर्म में
पर काम कर रहे मुकेश
के रूप में स्थापित हो ग
महत्वपूर्ण सहयोग रहता

सिल्क व बनारसी

अनिल राठी का व्यवसा
साड़ियों पर आधारित है।
गुणवत्ता पर ध्यान देते हैं
की मांग लगातार बढ़ती ज
करना नहीं, बल्कि ग्राहक
देना है।

उनकी यह यात्रा हर यु

की शुरुआत और बड़े सपने

जब वे घर से निकले, तब
पए थे, लेकिन दिल में बड़ा
। था।
चेन्नई का रुख किया। वहां
ने की कोशिश की, लेकिन
रहीं। इसके बाद वे दिल्ली
मेहनत की, लेकिन अपेक्षित

ायद यह रास्ता मेरे लिए नहीं
आवाज आती थी—रुकना

के बावजूद उन्होंने हार नहीं
ले आई—एक ऐसा शहर,
पहचान दी।

सूरत में मिली नई पहचान
ससुराल बना सहारा

सूरत पहुंचकर उन्होंने साड़ी के व्यापार में कदम रखा। शुरुआत में आर्थिक और सामाजिक दोनों तरह की चुनौतियां थीं। ऐसे समय में उनकी पत्नी मीनाक्षी (रिंकू) और ससुराल परिवार ने उन्हें पूरा सहयोग दिया।

करीब 15 महीनों तक वे ससुराल में रहे। यह समय उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दौर था, जहां उन्होंने धैर्य, संयम और मेहनत के साथ अपने सपनों को आकार देना शुरू किया।

धीरे-धीरे उनका काम चल निकला। छोटे स्तर से शुरू हुआ यह व्यापार धीरे-धीरे बड़ा होता गया। ग्राहकों का भरोसा बढ़ा और उनकी पहचान बनने लगी।

पिता की सीख, भाइयों का साथ, मां का आशीर्वाद

अनिल राठी की सफलता के पीछे उनके पिता स्वर्गीय नंदकिशोर राठी की सीख सबसे मजबूत आधार रही है। नंदकिशोर राठी एक ईमानदार और सकारात्मक सोच रखने वाले व्यवसायी थे। उन्होंने अपने बच्चों को सिखाया कि व्यापार में सच्चाई और अच्छे व्यवहार का कोई विकल्प नहीं होता। इसी मार्ग पर चलते हुए अनिल राठी ने अपने बड़े भाई सुनील राठी और छोटे भाई अमित राठी के साथ मिलकर "गौरी क्रिएशन" फर्म की स्थापना की। तीनों भाइयों ने मिलकर मेहनत, विश्वास और एकजुटता के साथ व्यापार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

माता चैनकंवर राठी का स्नेह और आशीर्वाद हमेशा उनके साथ रहा। परिवार आज भी हर निर्णय एक साथ लेता है—चाहे वह व्यापार से जुड़ा हो या परिवार से।

स्व. श्री नंदकिशोर जी पूनमचंद जी राठी
जन्म : 04/09/1954
स्वर्गवास : 19/10/2025

संयुक्त परिवार
आज भी जिंदा है परंपरा

आज के समय में जहां संयुक्त परिवार धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं, वहीं राठी परिवार एक मिसाल बनकर सामने आया है। अनिल राठी, उनके भाई सुनील राठी, अमित राठी, ताऊजी के बेटे संदीप राठी, चचेरे भाई चिंकेश राठी और सीए भावेश राठी—सभी एक साथ प्रेम और विश्वास के साथ रहते हैं। परिवार में आपसी समझ, सहयोग और सम्मान साफ दिखाई देता है। पूरे परिवार में अनिल राठी की पुत्री गौरी राठी एकमात्र बेटी हैं, जो सभी की लाडली हैं।

को मानते हैं परिवार

थ काम करने वाले लोगों को सिर्फ
परिवार का हिस्सा मानते हैं। उनके
(पटवारी) पिछले 16 वर्षों से उनके
राठी उन्हें अपने छोटे भाई जैसा मानते
हनती, ईमानदार और व्यवहार कुशल
लता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
पिछले कई सालों से मैनेजर के पद
चौधरी अब राठी परिवार के सदस्य
ए हैं। मुकेश चौधरी का कामकाज में
है।

साड़ियों में खास पहचान

य मुख्य रूप से सिल्क और बनारसी
वे हमेशा नई डिजाइनों, ट्रेंड और उच्च
हैं। यही कारण है कि उनकी साड़ियां
ना रही है। उनका उद्देश्य सिर्फ व्यापार
कों को सर्वोत्तम गुणवत्ता और संतुष्टि

रिश्तों को निभाना भी उतना ही जरूरी

व्यापार की व्यस्तता के बावजूद अनिल राठी रिश्तों को बहुत महत्व देते हैं। वे अपने पुराने मित्र भरत सोनी और स्वर्गीय अमरचंद भाटी के परिवार के साथ आज भी वही रिश्ता निभाते हैं। अमरचंद भाटी के निधन के बाद भी वे उनके परिवार के साथ खड़े हैं—यह उनके स्वभाव और मूल्यों को दर्शाता है। हर खुशी और हर मुश्किल में वे अपने दोस्तों के साथ खड़े रहते हैं।

पत्नी मीनाक्षी : हर कदम पर साथ

अनिल राठी की सफलता में उनकी पत्नी मीनाक्षी (रिंकू) का बहुत बड़ा योगदान है। जब हालात कठिन थे, तब उन्होंने न केवल उनका साथ दिया, बल्कि परिवार की जिम्मेदारियां भी संभालीं। उन्होंने हर परिस्थिति में उनका हौसला बढ़ाया और कदम से कदम मिलाकर उनका साथ दिया।

नई पीढ़ी बढ़ाना चाहती है व्यवसाय को : अनिल राठी ने बताया कि उनके परिवार की नई पीढ़ी के बच्चे भी इस व्यवसाय को आगे बढ़ाना चाहते हैं। परिवार के युवा अभी से ही व्यापार में सहयोग करने लग गए।

सूरत में घनश्याम जी लोहिया का मिला साथ

समाजसेवी अनिल राठी बताते हैं कि जब वे सूरत आए थे तो बाबा रामदेव जी के परम भक्त घनश्याम जी लोहिया का साथ मिला। लोहिया ने हर मोड़ पर उनका साथ दिया। "अगर परिवार साथ हो, तो कोई भी मुश्किल बड़ी नहीं लगती," अनिल राठी कहते हैं।

प्रेरणा देती एक सच्ची कहानी

- *अनिल राठी की कहानी यह साबित करती है कि सफलता किसी एक दिन का परिणाम नहीं होती—यह वर्षों की मेहनत, संघर्ष, धैर्य और विश्वास का परिणाम होती है।*
- *500 रुपए से शुरू हुआ यह सफर आज करोड़ों तक पहुंच चुका है, लेकिन उनकी सोच आज भी वही है—सरल, जमीन से जुड़ी और ईमानदार।*

वा के लिए एक संदेश है : अगर इरादे मजबूत हों, तो संसाधनों की कमी कभी रास्ता नहीं रोक सकती। मेहनत, ईमानदारी और परिवार का साथ-यही सफलता की असली कुंजी है।

मरुधरा का नीला हृदय

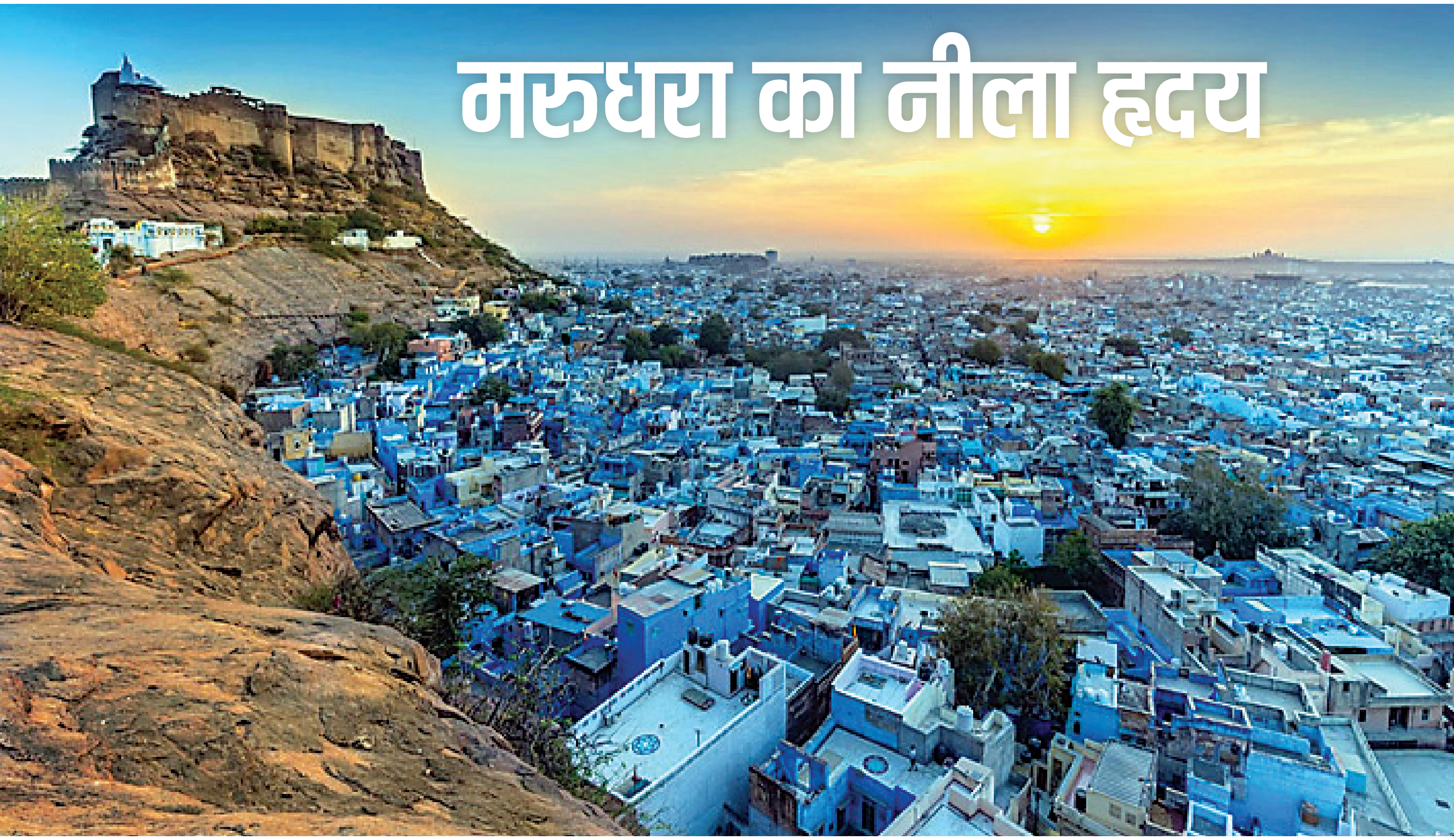

जोधपुर महज़ एक शहर नहीं, बल्कि शौर्य, संस्कृति और संवेदनाओं का एक जीवंत महाकाव्य है। 12 मई 1459 से शुरू हुई यह यात्रा आज एक ऐसे मुकाम पर है, जहां इतिहास के कंगूरे और आधुनिकता के ऊंचे संस्थान एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं।

राकेश गांधी ✍ वरिष्ठ पत्रकार

12 मई 1459 की वह भोर मरुस्थल के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित है। राव जोधा ने जब मंडोर की सीमाओं से आगे बढ़कर एक सुरक्षित और अभेद्य दुर्ग की कल्पना की, तो चिड़ियाटूंक की पहाड़ियों ने मेहरानगढ़ के रूप में आकार लेना शुरू किया। यह केवल एक किले का निर्माण नहीं था, बल्कि एक ऐसी संस्कृति का बीजारोपण था जिसे आज दुनिया 'मारवाड़' के नाम से जानती है। राव जोधा की दूरदृष्टि केवल सैन्य सुरक्षा तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने इस शहर को व्यापार, कूटनीति और सांस्कृतिक आदान प्रदान का केंद्र बनाने की नींव भी रखी। इस किले की प्राचीरों से आज भी मरुधर का स्वाभिमान झांकता है।

जोधपुर को दुनिया 'ब्लू सिटी' कहती है। पुराने शहर के ब्रह्मपुरी, भीतरी शहर और आसपास के क्षेत्रों को जब आप किसी ऊंचे स्थान से देखते हैं, तो नीले घरों का एक अथाह समंदर नजर आता है। ऐतिहासिक रूप से यह नीला रंग गर्मी से बचाव और कीड़ों को दूर रखने का एक पारंपरिक वैज्ञानिक तरीका था, लेकिन समय के साथ यही रंग इस शहर की अनूठी दर्शनीय पहचान बन गया। आज दुनिया भर के फोटोग्राफर्स, फिल्मकार और कलाकार इन गलियों के सम्मोहन में खिंचे चले आते हैं। ये तंग गलियां महज़ रास्ते नहीं हैं, बल्कि एक जीवंत संग्रहालय हैं। यहां की हर ढलान पर खड़ी पुरानी हवेलियां, उनके नक्काशीदार झरोखे और पत्थर पर की गई बारीक कारीगरी आज भी बीते युग के वैभव की गवाही देती हैं। इन ऐतिहासिक हवेलियों का हेरिटेज होटलों में बदलना जोधपुर के पर्यटन की रीढ़ बन चुका है, जिससे हजारों परिवारों का भविष्य जुड़ा है।

जल प्रबंधन का प्राचीन कौशल: बावड़ियां और झालरे

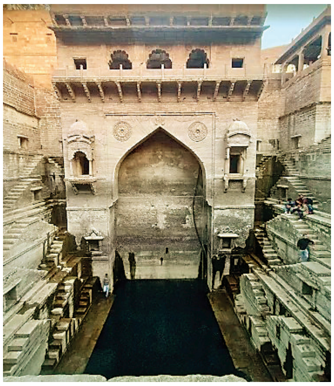

मरुस्थल में पानी ही ईश्वर है, और जोधपुर के पूर्वजों ने इस दर्शन को बखूबी जिया था। शहर के भीतर मौजूद तूरजी का झालरा, महिला बाग झालरा और अनगिनत बावड़ियां उस स्थापत्य कला का नमूना हैं, जिन्हें देखकर आधुनिक इंजीनियर भी हैरान रह जाते हैं। ये केवल जलाशय नहीं थे, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप और सांस्कृतिक उत्सवों के केंद्र थे। विशेष रूप से तूरजी का झालरा, जिसका हाल ही में पुनरुद्धार हुआ है, आज जोधपुर के पर्यटन का नया चेहरा बनकर उभरा है। आज जब आधुनिक दुनिया जल संकट से जूझ रही है, तब ये बावड़ियां हमें सतत विकास का वह पाठ पढ़ाती हैं जो सदियों पहले यहां के समाज ने आत्मसात कर लिया था।

स्वाद का साम्राज्य :
जहां मिर्ची व मिठास का मेल है

जोधपुर का नाम आते ही जुबान पर स्वाद की एक लंबी श्रृंखला उमड़ पड़ती है। यहां का खानपान महज़ पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि एक गहरा संस्कार है। सुबह-सुबह सोजती गेट या क्लॉक टावर की तरफ बढ़ें, तो कड़ाहियों से छनकर आती प्याज कचौरी और मिर्ची बड़े की खुशबू आपका स्वागत करती है। जोधपुर का मिर्ची बड़ा अपने आप में मसालेदार आलू के भरावन और तीखी मिर्च के अद्भुत संतुलन की कथा है। इसके साथ ही माखनिया लस्सी अपनी गाढ़ी मलाई और मिठास के कारण विशेष पहचान रखती है। वहीं मावा कचौरी, घेवर और पारंपरिक व्यंजन जैसे कबूली और गुलाब जामुन की सब्जी इस बात का उदाहरण हैं कि यहां के लोग स्वाद में भी प्रयोग और परंपरा दोनों को साथ लेकर चलते हैं। ऊपर से थोड़ा सख्त और तीखा, लेकिन भीतर से अपनत्व की चाशनी में डूबा हुआ।

हस्तशिल्प और उद्योग :
मारवाड़ का ग्लोबल सिग्नेचर

जोधपुर का औद्योगिक विकास उसकी नई पहचान बना रहा है। यहां के कारीगरों ने काष्ठ कला और हस्तशिल्प को जिस स्तर तक पहुंचाया है, वह

वैश्विक बाजार में प्रशंसा का विषय है। जोधपुरी फर्नीचर आज अंतरराष्ट्रीय ब्रांड बन चुका है और यूरोप तथा अमेरिका के बाजारों में इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। आज जोधपुर देश के प्रमुख हस्तशिल्प निर्यात केंद्रों में शामिल हो चुका है। इसके साथ ही वस्त्र उद्योग में जोधपुरी कोट और पंचरंगा साफा अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। बंधेज की साड़ियां और चमड़े की जूतियां आज सोलह श्रृंगार का हिस्सा मानी जाती हैं। आधुनिक दौर में ऊर्जा के क्षेत्र में भी जोधपुर ने महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। भड़ला सोलर पार्क जैसे विशाल प्रोजेक्ट यह दर्शाते हैं कि सूर्यनगरी अब ऊर्जा उत्पादन में भी अग्रणी भूमिका निभा रही है।

शिक्षा और न्याय का आधुनिक केंद्र

आधुनिक जोधपुर अब एक अग्रणी 'एजुकेशन हब' है। यहां एक ही शहर में आईआईटी, एम्स, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, राष्ट्रीय आयुर्वेद विश्वविद्यालय और निफ्ट जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों की उपस्थिति बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह शहर अब केवल सैलानियों का नहीं, बल्कि देश के मेधावी युवाओं का भी केंद्र है। राजस्थान उच्च न्यायालय की मुख्य पीठ के रूप में यह शहर 'न्याय की राजधानी' भी है, जहां का नया और भव्य भवन अपनी स्थापत्य कला के साथ न्याय की शुचिता का प्रतीक है।

विभूतियां, जिन पर जोधपुर को गर्व है

जोधपुर को महान यहां की इमारतों ने नहीं, बल्कि यहां की माटी से निकले नायकों ने बनाया है। महाराजा हनवंत सिंह की बेबाकी और महाराजा गजसिंह जी का अपनी विरासत के प्रति समर्पण इस शहर की नींव में है। राजनीति के धुरंधर बरकतुल्लाह खान से लेकर साहित्य के शिखर विजयदान देथा (बिज्जी) तक, इस शहर ने विलक्षण प्रतिभाओं को जन्म दिया है। उस्ताद सुल्तान खान की सारंगी की मीठी तान और पद्मश्री शाइर शीन काफ निजाम की गजलें इस शहर की फिजाओं में घुली हुई हैं। पद्मश्री कोमल कोठारी ने जिस तरह लंगा-मांगणियार लोक कलाकारों को अंतरराष्ट्रीय मंच दिया, वह अतुलनीय है। समाजसेवा के क्षेत्र में भगवानसिंह परिहार (लवकुश संस्थान), डॉ. डी.आर. मेहता (जयपुर फुट), वरिष्ठ समाजसेवी माणकचंद संचेती, सुशीला बोहरा (अंध एवं मूक-बधिर विद्यालय), गोसेवी त्रिलोकचंद गुलेच्छा और गांधीवादी नेमिचंद जैन 'भावुक' जैसे नामों ने सिद्ध किया है कि जोधपुर का दिल कितना बड़ा है।

त्योहारों की रंगत... जोधपुर की संस्कृति को समझना हो तो यहां के त्योहारों को देखना जरूरी है। मारवाड़ उत्सव इस शहर की परंपराओं, लोकगीतों और लोकनृत्यों का जीवंत उदाहरण है। इसके अलावा राजस्थान अंतरराष्ट्रीय लोक महोत्सव ने जोधपुर को वैश्विक सांस्कृतिक मंच पर स्थापित किया है। इसके साथ ही दीवाली, होली और गणगौर जैसे पारंपरिक त्योहारों के साथ धींगा गवर भी यहां पूरे उत्साह और रंगों के साथ मनाया जाता है। इन उत्सवों में केवल स्थानीय लोग ही नहीं बल्कि देश-विदेश से आए पर्यटक भी शामिल होते हैं। यही वह रंग है जो जोधपुर को केवल एक शहर नहीं बल्कि एक अनुभव बनाता है।

इस शहर की धड़कन में बसती है अपणायत

तमाम औद्योगिक प्रगति और आधुनिकता के बीच यदि कुछ नहीं बदला, तो वह है यहां का 'अपनापन' या 'अपणायत'। जोधपुर वह शहर है जहां अजनबी को भी 'सा' कहकर संबोधित किया जाता है। यहां की बोली की मिठास और मेहमान को सम्मान देने का जज्बा ही वह जादू है, जो किसी को भी इस शहर का मुरीद बना देता है। विकास की शोर-शराबे वाली दुनिया में यह मानवीय जुड़ाव ही जोधपुर को महज़ एक शहर से बढ़ाकर एक 'अहसास' बनाता है।

जोधपुर स्थापना दिवस पर जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो एक गौरवशाली अतीत नजर आता है, और जब सामने देखते हैं, तो अनंत संभावनाओं वाला भविष्य। यह शहर बदल रहा है, यहां फ्लाईओवर बन रहे हैं, नए मॉल खुल रहे हैं और डिजिटल क्रांति आ रही है। लेकिन चुनौती यह है कि हम इस आधुनिकता की भीड़ में अपनी 'जोधपुरी रूह' को न खोने दें। जोधपुर की आत्मा इसकी सादगी, इसकी विरासत और इसकी अपणायत में है। यह दिन संकल्प लेने का है कि हम अपनी इस 'नीली नगरी' को और भी सुंदर, स्वच्छ और संवेदनशील बनाए रखें, ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इस पर उतना ही गर्व कर सकें, जितना आज हम करते हैं।

शौर्य, रणनीति और दूरदर्शिता से राव जोधा ने बसाया जोधपुर

मरुधरा के निर्माता राव जोधा

राजेंद्रसिंह लीलियां ✍ पीआरओ, उम्मेद भवन पैलेस

जोधपुर के संस्थापक राव जोधा का जीवन संघर्ष, शौर्य और दूरदर्शिता की प्रेरक गाथा है। कठिन परिस्थितियों में उन्होंने न केवल मारवाड़ को पुनः स्थापित किया, बल्कि मेहरानगढ़ दुर्ग के निर्माण के साथ एक सुदृढ़ और सुरक्षित राजधानी की नींव रखी। उनकी रणनीति, कूटनीति और नेतृत्व ने जोधपुर को इतिहास में विशिष्ट स्थान दिलाया और मारवाड़ की गौरवशाली परंपरा को स्थायित्व प्रदान किया।

मारवाड़ के इतिहास में जोधपुर के संस्थापक राव जोधा एक वीर योद्धा, रणनीतिकार, दूर दृष्टि सोच, कुशल कूटनीतिज्ञ व धैर्यवान के रूप में स्मरण किए जाते हैं। उन्होंने मध्ययुगीन प्रतिरक्षा प्रणाली और सामरिक दृष्टि से मंडोर को राजधानी के रूप में असुरक्षित माना और चिड़ियानाथजी की टूक पर 12 मई 1459 को एक सुदृढ़ किले का शिलान्यास किया जो महरानगढ़ दुर्ग के नाम से जाना जाता है। साथ ही जोधपुर शहर को नई राजधानी बनाकर स्थापित किया।

दरअसल राव जोधा से ही जोधपुर की ऐतिहासिक शौर्य यात्रा प्रारंभ होती है। मारवाड़ के शासक राव रणमल के पुत्र राव जोधा का जन्म 28 मार्च, 1415 भादवा बदी 8, विक्रम संवत 1472 में हुआ। राव जोधा जोधपुर के प्रथम प्रतापी शासक थे। उनका जीवन कठिनाइयां, चुनौतियों और संघर्ष की अनूठी गाथा है। जोधा ने मारवाड़ में सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की, जिसके कारण उनके वंशज निरंतर शासन करते रहे। राव जोधा ने युद्ध कौशल व कूटनीति- राजनीति अपने पिता राव रणमल से सीखी। राव रणमल अपने पिता राव चुंडा के देहांत के बाद 1423 ईस्वी में महाराणा लाखा की सेवा में मेवाड़ चले गए। बहन हंसा बाई का विवाह महाराणा लाखा के साथ कर देने के बाद मेवाड़ की राजनीति में राव रणमल का महत्व बढ़ गया। महाराणा लाखा की मृत्यु के बाद अल्प वयस्क पुत्र मोकल गद्दी पर बैठे तथा मेवाड़ राज्य का सारा प्रबंध राव रणमल देखने लगे। महाराणा मोकल की हत्या के बाद अल्प वयस्क कुंभा मेवाड़ की गद्दी पर आसीन हुए। राव रणमल के बढ़ते सैन्य व राजनीतिक प्रभाव से मेवाड़ में दरबारी षड्यंत्र में चित्तौड़ दुर्ग में 1428 में राव रणमल की हत्या कर दी गई। इन विषम परिस्थितियों में राव जोधा अपने सात सौ विश्वस्त साथियों के साथ मेवाड़ से मारवाड़ के लिए रवाना हो गए। रावत चूंड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राव जोधा का पीछा किया। कपासन के पास भीषण संघर्ष में राव जोधा के 200 सहयोगी मारे गए। इसके बाद सोमेश्वर के घाटे तक पहुंचते-पहुंचते चितरोड़ी, सतखंबा कनवज व केलवा में भी दोनों में संघर्ष हुआ। सोमेश्वर पहुंचने तक लड़ते-लड़ते राव जोधा के 250 योद्धा ही बचे। स्वामी भक्त राठौड़ योद्धाओं ने राव जोधा को सकुशल सुरक्षित मंडोर पहुंचने के लिए सात योद्धाओं के साथ रवाना किया। राव जोधा तो सकुशल पहुंच गए, लेकिन मंडोर भी सुरक्षित नहीं होने से जांगल की तरफ निकल गए, जहां काहुनी गांव को अपना ठिकाना बनाया।

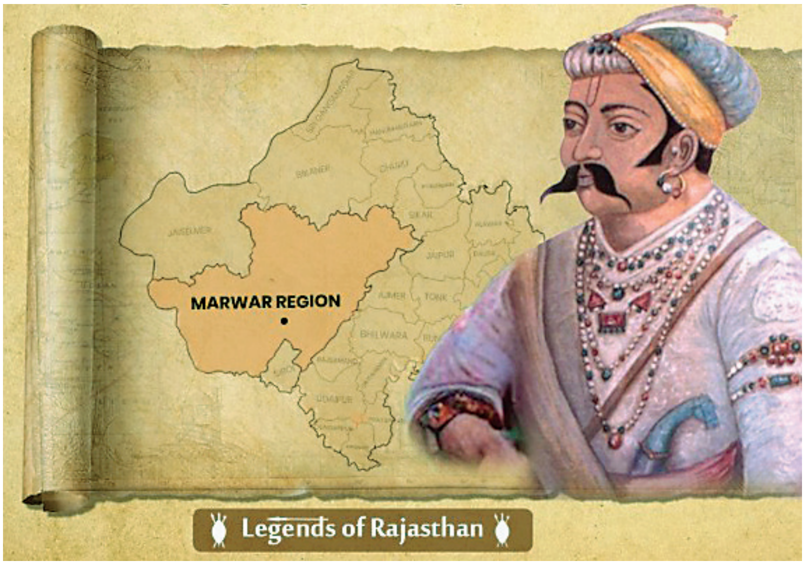

मंडोर पर पुन: अधिकार

चितौड़ की सेना ने सोमेश्वर के बाद मण्डोर पर अधिकार करके चौकड़ी, मेड़ता, सोजत में भी अपनी सैन्य चौकियां स्थापित कर दी। काहुनी में राव जोधा को ढूंढने पर वह जांगल में चले गए। काफी संघर्ष के दौर से गुजरते हुए राव जोधा इधर-उधर अपने ठिकाने बदलते रहे। पिता राव रणमल की हत्या के समय मारवाड़ की शासन व्यवस्था अस्त-व्यस्त थी। जैतारण पर सिंधल राठौड़ों का अधिकार, सिवाना पर जैतमालोत शासन, खेड़ पर राव मल्लिनाथ के वंशजों तथा नागौर पर खानजादा के वंश का अधिकार था। इस पर राव जोधा ने धीरे-धीरे अपनी सैन्य ताकत बढ़ाई। गागरोन के शासक चाचिंग देव चौहान की पुत्री बरजांग के विवाह से उनकी मदद भी मिली। सेतरावा रावत लूणा ने भी सहयोग किया। इससे राव जोधा का आत्मविश्वास बढ़ता गया और सही मौका देखकर आक्रमण कर मंडोर पर पुनः अधिकार जमा लिया। साथ ही अन्य मेवाड़ी कब्जे की चौकियां चौकड़ी, कोसाना पर कब्जा किया। मेवाड़ी सेना को भगाकर सोजत के पास धनला में परास्त किया। लगातार 15 वर्षों के संघर्ष के बाद राव जोधा ने मारवाड़ को मेवाड़ से मुक्त कराकर 1453 में मंडोर पर पुनः आधिपत्य स्थापित किया। राव जोधा चित्तौड़ के महाराणा कुंभा से अपने पिता की हत्या का बदला लेना चाहते थे। महाराणा कुंभा भी अपने मेवाड़ी सामंतों के मारे जाने से अत्यंत क्रोध में थे। मेवाड़ की ओर से आक्रमण की सूचना मिलने पर राव जोधा अपने राठौड़ वीरों को साथ लेकर महाराणा की सेना से मुकाबला के लिए पाली से रवाना हुए। राव जोधा के पास अश्व कम थे, इसलिए राठौड़ वीर बैलगाड़ियों में आरूढ़ होकर चले, जिन्हें देखकर मेवाड़ी सेना बिना युद्ध किए ही लौट गई। राव जोधा अपने पिता की हत्या का प्रतिशोध लेना चाहते थे। उन्होंने चित्तौड़गढ़ पर चढ़ाई कर दुर्ग के द्वार जलाए और उस स्थान पर जाकर श्रद्धांजलि दी जहां उनके पिता रहते थे।

मंडोर के किले में राज्याभिषेक व विस्तार

1453 में मण्डोर के किले में राव जोधा का शास्त्रानुसार राज्याभिषेक हुआ। जोधा ने अपने पुत्र दूदा को भेज कर जैतारण पर कब्जा करवाया। छापर द्रोणमुख पर आधिपत्य किया, जो महत्वपूर्ण था। राव जोधा के अनुज कांधल लोदी वंश के प्रमुख सामन्त सारंग खां से युद्ध में मारे गए। बाद में राव जोधा ने सारंग खां को मार कर बदला लिया। इसके बाद मारवाड़ की सीमाएं हिसार तक जा पहुंची। उत्तरी भारत के प्रमुख राजाओं में राव जोधा की गिनती होने लगी। राव जोधा के पुत्र बीका द्वारा बीकानेर की स्थापना व राव दूदा व वरसिंग द्वारा मेड़ता की स्थापना प्रमुख घटनाएं रही। मण्डोर के बाद राव जोधा ने मेड़ता, फलोदी, पोकरण, सिवाना, पाली, सोजत, नाडोल, जैतारण, शिव, डीडवाना व गोडवाड़ का कुछ हिस्सा तथा नागौर पर अधिकार कर लिया। उत्तरी भारत की ओर विजय अभियान को पठानों ने रोक दिया।

सुदृढ़ साम्राज्य विस्तार... राव जोधा साहसी, वीर व कूटनीतिज्ञ थे। अपनी 73 वर्ष की अवस्था में 23 वर्ष तक पिता की सेवा में रहे तथा 15 वर्ष तक उन्हें विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उसके बाद 35 वर्ष तक अपने राज्य की उन्नति में लग रहे। उन्होंने सुदृढ़ साम्राज्य विस्तार किया व राज्य की सीमाओं को सुरक्षित किया। उस समय उनके अधिकार में मंडोर, जोधपुर, मेड़ता, फलोदी, पोकरण, महेवा, भाद्राजून, सोजत, गोड्वाड़ का कुछ भाग, जैतारण, शिव, सिवाना, सांभर, अजमेर और नागौर प्रांत का अधिकतर भाग था। बीकानेर और छापर-द्रोणापुर उनके पुत्रों के अधिकार में थे। उनके राज्य की पश्चिमी सीमा जैसलमेर तक, दक्षिणी सीमा अरावली तक और उत्तरी सीमा हिसार तक पहुंच गई थी।

मेवाड़ से संबंध सुधारने के लिए कूटनीति

कुशल कूटनीति के चलते मेवाड़ से रिश्ते सुधारने की नीति के तहत महाराणा कुम्भा से राजनीतिक सहयोग स्थापित करने के लिए अपनी पुत्री श्रृंगारदे का विवाह राणा कुम्भा के पुत्र रणमल के साथ किया। मारवाड़ मेवाड़ सम्बन्ध पुनः बेहतर बने। इसके बाद सोजत को सीमा निर्धारण का बिन्दु बनाया। राणा कुम्भा के उत्तराधिकारी उदा ने उन्हें अजमेर व सांभर पुनः सौंप दिए, ताकि पठानों के विरुद्ध संघर्ष में राव जोधा का सहयोग मिल सके।

राव जोधा के पुत्र...

राव जोधा के पुत्र, सातल, सूजा, नीबा, दूदा, वरसिंग, बीका, बीदा, जोगा, शिवराज, करमसी, रायपाल, भारमल, जसवन्त, चांदराव, वणवीर, कूंपा, सावंतसी, रूप सिंह, लक्ष्मण, जगमाल व गोपाल दास थे। उन्होंने मारवाड़ का विशाल सामाज्य सुरक्षा व व्यवस्था के लिए अपने स्वजनों को सौंपा। उन्होंने सोजत अपने बड़े भाई को, मेड़ता पुत्र वीरसिंह, छापर द्रोणमुख अपने पुत्र बीका को, बीकाजी ने जांगल प्रदेश को जीतकर 1488 में बीकानेर में किले की स्थापना कर बीकानेर शहर बसाया। मध्ययुगीन राजस्थान में राव जोधा का उत्कर्ष उनकी उपलब्धियों का प्रमाण है। 50 वर्ष के कालखण्ड तक शासन करने के बाद वि.सं. 1545 की वैशाख सुदी पांचम, 16 अप्रैल, 1488 ई. को 73 वर्ष की उम्र में उनका स्वर्गवास हुआ।

महरानगढ़ दुर्ग की विरासत

राव जोधा द्वारा स्थापित मेहरानगढ़ दुर्ग आज भी जोधपुर की पहचान और गौरव का प्रतीक है। यह दुर्ग केवल स्थापत्य का उदाहरण नहीं, बल्कि उस युग की सामरिक समझ और दूरदर्शिता का भी प्रमाण है। महाराजा गजसिंह के मुख्य संरक्षण में वर्तमान में इसके संवर्धन के माध्यम से इतिहास, संस्कृति और पर्यटन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

उद्घाटन हो चुका, फाइलों के फेर में अब भी अटका 27 करोड़ का प्रोजेक्ट

कागजों में दौड़ती दुर्ग की सड़क

जालोर दुर्ग तक बनने वाली सड़क का सपना उद्घाटन के बाद भी कागजी प्रक्रियाओं में उलझा हुआ है। वन विभाग अपनी ओर से मंजूरी पूरी होने की बात कह रहा है, जबकि अंतिम स्वीकृति और औपचारिकताओं के चलते दो साल से ज्यादा समय से यह 6 किलोमीटर लंबा प्रोजेक्ट जमीन पर उतरने का इंतजार कर रहा है।

तरुण गहलोत, लेखक

जालोर दुर्ग पर सड़क का सपना अभी भी कागजों में ही प्रगति के दौर से गुजर रहा है। हालांकि उद्घाटन जमीन पर हो चुका है। दुर्ग का मामला कई महीनों तक वन विभाग और यूजर एजेंसी सार्वजनिक निर्माण विभाग के बीच में गेंद बना हुआ था। अब वन विभाग का कहना है कि उनकी ओर से कोई पेंडेंसी नहीं है। वहीं यूजर एजेंसी की जिम्मेदारी भी अंतिम चरण में पहुंच गई है। अब देखना यह है कि कागजों की अंतिम खानापूर्ति में कितना समय लगेगा।

गौरतलब है कि जिले की सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग तक रोड के मामले में लगातार ऑब्जेक्शन के कारण देरी होती रही है। हालांकि वन विभाग की ओर से गत 13 मार्च को मांगी रिपोर्ट के बाद सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा रिपोर्ट सबमिट करने का कार्य किया जा रहा है। इधर एलाइनमेंट, रोड और उसके सुरक्षा उपायों के दस्तावेज भी पेश किए जा चुके हैं। लेकिन बार-बार रूकावटों के कारण करीब दो साल से अधिक समय से इस प्रोजेक्ट में एक विभाग से दूसरे विभाग में कागजों का आदान-प्रदान ही चल रहा है। सार्वजनिक निर्माण विभाग से गेंद निकल कर वन विभाग में अटक गई थी। अब वन विभाग ने तो अपना काम पूरा कर दिया है। पर्यावरण एवं जलवायु परिवहन मंत्रालय की हरी झंडी का इंतजार है।

झरनेश्वर मंदिर होते हुए बनेगी सड़क... 27 करोड़ की लागत से बनने वाली यह सड़क झरनेश्वर महादेव मंदिर पर भंवरी बाई के धुणे के पास से होते हुए किले तक पहुंचेगी। इस सड़क की कुल लंबाई 6.038 किलोमीटर है, जबकि इसकी चौड़ाई सिंगल लाइन 3.75 मीटर यानी 12.30 फीट निर्धारित की गई है। इस सड़क का अंतिम छोर दुर्ग पर स्थित खेतलाजी मंदिर के पास चिन्हित है।

छह किलोमीटर रोड में 15 यू-टर्न

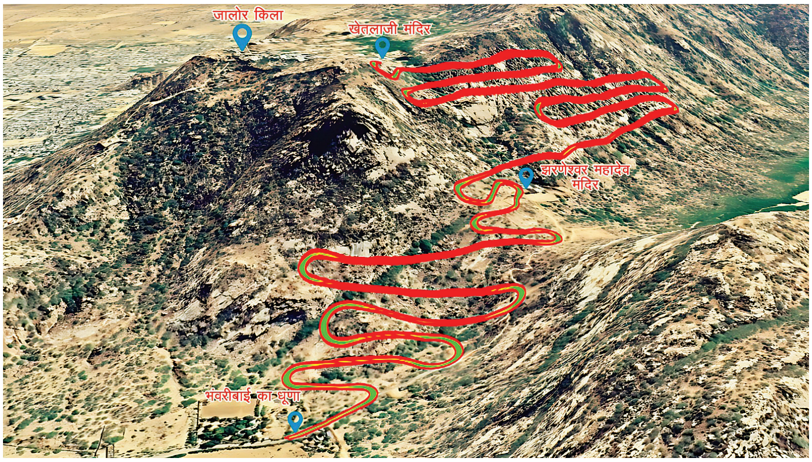

जालोर दुर्ग सड़क में 15 यू-टर्न होंगे और इस रोड से आमजन वाहन के माध्यम से 7 मिनट में 1200 फीट ऊंचे दुर्ग तक पहुंच सकेंगे। इस रोड पर वाहनों की गति 20 से 30 किलोमीटर प्रति घंटा प्रस्तावित है। फॉरेस्ट एडवाइजरी कमेटी की ओर से कुछ शर्तों और 34.71 लाख रुपए जमा करवाने की सैद्धांतिक स्वीकृति 24 अक्टूबर 2025 को ही जारी कर दी थी।

जालोर दुर्ग सड़क को लेकर वन विभाग की ओर से अब कोई पेंडेंसी नहीं है। अभी यूजर एजेंसी पीडब्ल्यूडी की ओर से कुछ और दस्तावेज मांगे गए हैं, जो अभी पेंडिंग बता रहे हैं।

-जयदेवसिंह चारण, डीएफओ, जालोर

जालोर जिले वासियों के लिए किले की सड़क एक महत्वपूर्ण परियोजना है। हमने इस सड़क के सपने को काफी सालों पहले देखा था जो अब साकार होता नजर आ रहा है। कागजी प्रक्रिया में समय लग जाता है। जालोर के जन प्रतिनिधि भी पूरा प्रयास कर रहे हैं। पिछले काफी वर्षों से मैं भी इस सड़क के सपने को लेकर सक्रिय हूं। जल्द से जल्द धरातल पर काम शुरू हो जाएगा।

-पुष्पराज बोहरा, फतेह ग्रुप जालोर

सुरों की मल्लिका की विदाई के बाद उनके संगीत की गूंज पर एक नजर

एक युग की सुरमयी विरासत

बारह हजार से अधिक गीतों को अपनी आवाज देने वाली आशा भोंसले का नाम भारतीय संगीत इतिहास में गहरे सम्मान के साथ लिया जाता है। आठ दशकों से अधिक समय तक उन्होंने हर शैली में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और संगीत जगत को समृद्ध किया।

सुधांशु टाक, लेखक, समीक्षक

सुरों की मल्लिका आशा भोंसले अब भले ही हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनकी आवाज आज भी उतनी ही जीवंत है। उनका जाना भारतीय संगीत के एक स्वर्णिम दौर का विराम है, जिसकी गूंज हर पीढ़ी में सुनाई देती रहेगी। उनके निधन ने संगीत जगत में एक ऐसी रिक्तता छोड़ दी है, जिसे भर पाना आसान नहीं है।

आशा के व्यक्तित्व को अगर किसी ने सही मायनों में समझा और जीवन भर उनका साथ निभाया तो वह था उनका अपना दुःख। बचपन में पिता का साया उठ जाना, दस वर्ष की आयु में परिवार का सहारा बनने की जिम्मेदारी, कम उम्र में विवाह और उसके बाद वैवाहिक जीवन की कठिनाइयां, इन सबने उनके जीवन को लगातार परखा। पति का असहयोग, आर्थिक दबाव, गर्भावस्था में घर से निकाला जाना और दो बच्चों की जिम्मेदारी, इन परिस्थितियों में भी उन्होंने हार नहीं मानी। फिल्म जगत में जगह बनाने के लिए उन्हें संघर्ष करना पड़ा और कई बार उपेक्षा का सामना भी करना पड़ा।

इसके बाद भी जीवन ने उन्हें और परखा। राहुल देव बर्मन से विवाह, उनका कठिन पेशेवर दौर और असमय निधन। बेटी वर्षा और बेटे हेमंत का खोना, ये आघात किसी भी व्यक्ति को तोड़ सकते थे। लेकिन आशा ने हर बार खुद को संभाला और आगे बढ़ीं। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि संघर्ष चाहे जितना गहरा हो, संकल्प उससे बड़ा हो सकता है।

आशा भोंसले ने संगीत को कभी किसी एक शैली या सीमा में नहीं बांधा। उनके स्वर में अद्भुत लचीलापन था, जो हर भाव और परिस्थिति के अनुरूप ढल जाता था। 'पिया तू अब तो आजा' में उनकी आवाज चंचल और आकर्षक लगती है, तो 'इन आंखों की मस्ती' में वही स्वर शास्त्रीय गरिमा और नफासत से भर उठता है। 'दम मारो दम' में उनका स्वर एक नई पीढ़ी की बेबाक अभिव्यक्ति बन जाता है। यही बहुआयामी प्रतिभा उन्हें विशिष्ट बनाती है और उन्हें शीर्ष पर स्थापित करती है।

जीवन के कुछ अनकहे पड़ाव

संगीतकार हंसराज बहल उनके जीवन के महत्वपूर्ण स्तंभ रहे। वर्ष 1948 की फिल्म 'चुनरिया' में उन्हें एक पंक्ति गाने का अवसर मिला। उस समय स्थापित गायिकाओं के बीच यह मौका उनके लिए बहुत बड़ा था। इसी शुरुआत ने उनके भीतर आत्मविश्वास जगाया और वे इसे जीवन भर याद करती रहीं।

संगीत के साथ-साथ उन्हें पाक कला का भी शौक था। उन्होंने रेस्टोरेंट श्रृंखला में निवेश किया और कई बार स्वयं भी खाना बनाया। उनका नाम गिनीज बुक में दर्ज हुआ और मैडम तुसाद संग्रहालय में उनका मोम प्रतिरूप स्थापित हुआ। पद्म विभूषण और दादासाहेब फाल्के पुरस्कार सहित अनेक सम्मान उनके खाते में जुड़े।

संगीतकार ओ.पी. नैयर के साथ उनकी जोड़ी ने उन्हें नई पहचान दी। इस सहयोग ने उनकी चंचल और लयात्मक शैली को लोकप्रियता के शिखर तक पहुंचाया और उन्हें मुख्यधारा में स्थापित किया।

खय्याम के साथ उनकी गायकी ने एक अलग रूप लिया। 'उमराव जान' के गीतों में उनका स्वर बेहद नियंत्रित और शास्त्रीय संवेदना से परिपूर्ण दिखाई देता है, जिसने उनकी कलात्मक परिपक्वता को नई ऊंचाई दी।

पंचम दा यानी राहुल देव बर्मन के साथ उनकी साझेदारी हिंदी फिल्म संगीत में प्रयोग और आधुनिकता का प्रतीक बनी। इस जोड़ी ने ऐसे गीत दिए जो आज भी श्रोताओं के मन में बसे हुए हैं और समय के साथ उनकी लोकप्रियता और बढ़ी है।

जीवन भर उन्हें अनेक सम्मान मिले। पद्म विभूषण, दादासाहेब फाल्के पुरस्कार, फिल्मफेयर और राष्ट्रीय पुरस्कार—ये सभी उनकी उपलब्धियों के प्रमाण हैं। वे स्वयं मानती थीं कि सबसे बड़ा सम्मान श्रोताओं का प्रेम है, जो उन्हें लगातार मिलता रहा।

आशा भोंसले केवल एक नाम नहीं, बल्कि एक ऐसा स्वर हैं जो समय के साथ और भी गूंजता रहेगा। उनका जाना एक क्षति है, लेकिन उनकी आवाज वह धरोहर है, जो पीढ़ियों तक जीवित रहेगी।

PRIME PROPERTIES
7791822222,9829027040
जोधपुर के 568वें
PRIME
CATERERS
स्थापना दिवस
की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।
नितिन अरोड़ा
58, शॉपिंग सेंटर, रिलायंस मॉल के सामने, बासनी प्रथम फेज, जोधपुर
जोधपुर के 568वें
स्थापना दिवस
की हार्दिक बधाई एवं
शुभकामनाएं।
न्यू अरोड़ा नमकीन एवं स्वीट्स
मेडिपल्स हॉस्पिटल के आगे, वस्त्र विनोद के सामने, मैन सालावास रोड, बासनी द्वितीय चरण, जोधपुर (राज.) 7793001302
श्री अरोड़ा नमकीन
दाऊजी की होटल, बासनी ओवरब्रिज के पास, ट्रांसपोर्ट नगर, बासनी, जोधपुर मो. 7793001303
NEW
ARORA
NAMKEEN & SWEETS
Since 1999
FOOD
COURT

नए नेतृत्व के साथ सियासत में बदलते समीकरण

बिहार का नया 'सम्राट'

राधा रमण वरिष्ठ पत्रकार

बिहार की राजनीति में बड़े बदलाव के साथ सम्राट चौधरी के नेतृत्व में नई सरकार का दौर शुरू हो गया है। विश्वास मत के बाद सत्ता समीकरण पूरी तरह बदलते दिख रहे हैं। भाजपा, जदयू और सहयोगी दलों के भीतर नई चुनौतियां और असहजता के संकेत भी उभर रहे हैं।

संकेत मिल रहे हैं कि वर्ष 2030 तक बिहार की शासन व्यवस्था अब सम्राट चौधरी की अगुवाई में चलेगी, वही शासन के कर्ताधर्ता रहेंगे। बिहार विधानसभा में सरकार के विश्वास मत प्रस्ताव पर विपक्ष ने मत विभाजन की मांग ही नहीं की, इसलिए विश्वास मत प्रस्ताव ध्वनिमत से पारित कर दिया गया। इससे पहले चर्चा में भाग लेते हुए नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने इसे जनादेश का अपहरण करार दिया। उनका कहना था कि जनता ने 2025 से 2030 तक शासन चलाने का जनादेश नीतीश कुमार को दिया था, लेकिन भाजपा ने जबरदस्ती नीतीश कुमार को सत्ता से उतार दिया। उन्होंने कहा कि इलेक्टेड मुख्यमंत्री को सिलेक्टेड मुख्यमंत्री ने सत्ता से उतार दिया है। तेजस्वी यादव ने कहा कि भले ही तकनीकी रूप से भाजपा की सरकार बन गई है, लेकिन हकीकत यह है कि इस सरकार में भाजपा का कोई व्यक्ति अब तक शासन में नहीं है। खुद मुख्यमंत्री भी लालू की पाठशाला से निकले हैं। उप मुख्यमंत्री विजय चौधरी कांग्रेस से विधायक रहे हैं और दूसरे उप मुख्यमंत्री बिजेन्द्र यादव राष्ट्रीय जनता दल (राजद) से आए हैं। सरकार का खजाना खाली है, कर्मचारियों को वेतन देने के लिए भी पैसे नहीं हैं और राज्य सरकार बैसाखी के भरोसे है।

चर्चा का जवाब देते हुए मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा, 'सत्ता किसी की बपौती नहीं होती। मुझे यह मौका 14 करोड़ बिहारवासियों के आशीर्वाद और नीतीश कुमार तथा नरेंद्र मोदी की इच्छा से मिली है। कोई किसी पाठशाला से नहीं आता। अगर लालू प्रसाद मुझे जेल नहीं भिजवाते तो मैं राजनीति में ही नहीं आता। क्या यह सही नहीं है कि लालूजी ने मुझ समेत मेरे परिवार के 22 लोगों को झूठे मुकदमों में जेल में डाला था? अगर, मैं गलत बोल रहा हूं, तो लालूजी ने मिलकर स्कूल की जनसभा में मुझसे माफी क्यों मांगी थी? ऐसा क्यों कहा था कि मुझसे गलती हो गई।'

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार में 20 सालों से एनडीए की सरकार है। हमारी सरकार ने किसानों, छात्रों, मजदूरों और महिलाओं की चिंता की है। उन्हें आगे बढ़ाने का पुरजोर प्रयास किया है। हमारे नेता नीतीश कुमार ने बिहार को न सिर्फ जंगलराज से मुक्त कराया, बल्कि उसका गौरव भी लौटाया है। नीतीश कुमार चाहते हैं कि समृद्ध बिहार बने। हमारी सरकार उसी दिशा में काम कर रही है।

इससे पहले जनता दल यूनाईटेड (जदयू) के राष्ट्रीय महासचिव और विधान परिषद् के सदस्य नीरज कुमार ने तेजस्वी यादव को चुनौती देते हुए कहा था कि यदि नेता प्रतिपक्ष को खुशफहमी हो तो सदन में मत विभाजन करा लें, उनकी कुर्सी भी चली जाएगी। दरअसल, राज्यसभा के चुनाव में राजद विधायक फैसल रहमान ने पार्टी ह्विप के बावजूद मतदान में हिस्सा नहीं लिया था। रहमान नीतीश के करीबी रहे हैं और फिलहाल विधानसभा में गैर सरकारी विधेयक एवं संकल्प समिति के अध्यक्ष हैं। बिहार विधानसभा की सदस्य संख्या के मुताबिक राजद का अगर एक भी विधायक छिटका तो तेजस्वी की नेता प्रतिपक्ष की मान्यता समाप्त हो जाएगी। ज्ञात रहे कि विधानसभा में राजद के कुल 25 विधायक हैं और बिहार में नेता प्रतिपक्ष के लिए कम से कम 25 विधायक चाहिए।

सम्राट की ताजपोशी से मायूस क्यों भाजपाई

लगभग 20 साल तक छोटे भाई की भूमिका में रही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को अब शासन अपने हिसाब से चलाने का मौका पहली बार मिला है। लेकिन, इसके बावजूद भाजपा के नेता खुश नजर नहीं आते। सम्राट की ताजपोशी के दिन भी भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन और बिहार के कुछ केन्द्रीय मंत्रियों के अलावा बड़े राष्ट्रीय नेताओं की गैरमौजूदगी से इस कयास को बल मिलता है। इतिहास गवाह है कि जहां कहीं भी भाजपा की सरकारें बनती रही हैं, भले ही वह एनडीए गठबंधन की ही क्यों न हो, भाजपा पूरे धूमधड़ाके से सत्ता का वरण करती रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के साथ कई राज्यों के मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बड़े पदाधिकारी शपथ ग्रहण समारोह की शोभा बढ़ाते रहे हैं। लेकिन बिहार में ऐसा कहीं नहीं दिखा। पूर्व उप मुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने तो सार्वजनिक तौर पर कह दिया कि उनके कमांडर का आदेश था कि मुख्यमंत्री के नाम का प्रस्ताव कर दो और एक अनुशासित सिपाही के नाते मैंने सम्राट चौधरी के नाम का प्रस्ताव कर दिया। इसके अलावा मुख्यमंत्री बनने के बाद सम्राट जब प्रदेश भाजपा कार्यालय गए तो वहां भी पार्टी के बड़े नेता नहीं पहुंचे। हालांकि विधानसभा में विश्वास मत पर बोलते हुए मुख्यमंत्री ने नाराजगी की बातों को खारिज करते हुए इसे मीडिया के एक वर्ग की हवाबाजी करार दिया। उन्होंने कहा कि पूरी पार्टी और एनडीए एकमत है।

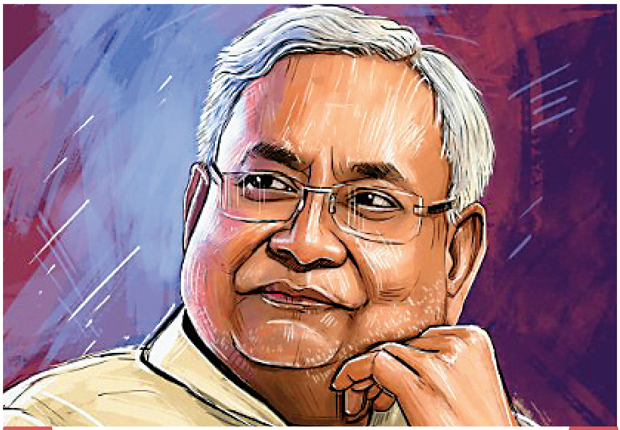

नीतीश कुमार का मास्टर दांव

■ नीतीश राजनीति के माहिर खिलाड़ी रहे हैं। इसे इस बात से समझा जा सकता है कि लगभग 20 वर्षों तक बिहार की सत्ता के केन्द्र में रहे नीतीश बिना विधानसभा चुनाव लड़े, अकेले बहुमत नहीं होने के बावजूद अपनी मर्जी से सरकार चलाते रहे। इस दौरान उन्हें जब भी लगा कि सहयोगी सिर उठाने लगे, उन्होंने बेझिझक पाला बदल लिया। यहां तक कि वर्ष 2020 में 243 सदस्यीय विधानसभा में जदयू के महज 43 विधायक होने के बावजूद नीतीश की ठसक पर कोई असर नहीं पड़ा। जब-जब जरूरत पड़ी तब-तब भाजपा और राजद के साथ गलबहियां कर ली। देश की सियासत में दलबदल का इससे नायाब उदाहरण नहीं मिलता। इसीलिए दोनों गठबंधनों (एनडीए और महागठबंधन) के नेता समय-समय पर नीतीश को पलटूराम कहते रहे हैं।

■ बीते विधानसभा चुनाव के दौरान ही भाजपा नीतीश को लंगी मारने की फिराक में थी। चुनाव प्रचार के दौरान ही केन्द्रीय गृहमंत्री ने इसके संकेत दे दिए थे। हालांकि नीतीश की नाराजगी के बाद उन्हें अपने पैर वापस खींचने पड़े थे। फिर अचानक पांच माह बाद भाजपा ने नीतीश को इस्तीफा देने और राज्यसभा में जाने का फरमान सुना दिया। भले ही इसे नीतीश कुमार की इच्छा बताया गया, लेकिन सवाल उठता है कि जो व्यक्ति अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद देश में सबसे ज्यादा दिन तक मुख्यमंत्री रहने का रिकॉर्ड बना लेता, वह महज चारों सदनों का सदस्य बनने की खातिर पदत्याग क्यों करता। फिर चारों सदनों का सदस्य बनने वालों में लालू प्रसाद यादव, सुशील मोदी और उपेन्द्र कुशवाहा समेत कई नाम पहले से शामिल हैं।

■ राज्य के उप मुख्यमंत्री विजय चौधरी भले ही सत्ता परिवर्तन को भाजपा का कर्ज उतारना बताते हैं, लेकिन बिहार की राजनीति के जानकार बताते हैं कि भाजपा ने नीतीश की विदाई का फूलप्रूफ प्लान जिस तरह से बनाया था, उससे नीतीश कत्तई खुश नहीं थे। इसीलिए उन्होंने सम्राट चौधरी के माध्यम से पहले यह प्रचार करवाया कि बिहार का नया नेता नीतीश ही तय करेंगे। बाद में भाजपा के अधिकांश नेता, यहां तक कि प्रधानमंत्री और गृहमंत्री भी यह कहने लगे कि बिहार की सरकार नीतीश के मार्गदर्शन में ही चलेगी। बता देना जरूरी है कि गृहमंत्री ने ही सम्राट चौधरी को नीतीश की घेराबंदी करने का निर्देश दिया था। इस बीच नीतीश ने मौका मिलते ही सम्राट को आगे कर अपने पुराने सियासी मित्र शकुनी चौधरी का 26 साल पुराना कर्ज उतार दिया। ज्ञात रहे कि सम्राट, शकुनी चौधरी के पुत्र हैं। नीतीश ने ढाई दशक से बिहार में जिस 'लव-कुश' फार्मूले से बिहार की राजनीति को अपनी मुट्ठी में बांधे रखा उसमें 'कुश' कोई और नहीं बल्कि शकुनी की कोइरी (कुशवाहा) जाति ही है। 'लव' नीतीश की अपनी कुर्मी जाति है।

भाजपा ने बिना देर किए नीतीश को दिया झटका

जानकार सूत्र बताते हैं कि भाजपा का शीर्ष नेतृत्व शुरुआत में सम्राट चौधरी को मुख्यमंत्री बनाने को राजी नहीं था। वह अपने कैडर के किसी निष्ठावान कार्यकर्त्ता को इस पद पर बैठाना चाहता था। उसकी तैयारी भविष्य में जदयू में विभाजन की भी थी। जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा और केन्द्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह (ललन सिंह) टिकट बंटवारे से लेकर इस्तीफे के लिए नीतीश को मनाने तक भाजपा के पैरोकार बने हुए थे। उनकी सलाह पर ही जदयू ने राज्यसभा के सभापति हरिवंश को तीसरी बार राज्यसभा के चुनाव में टिकट नहीं दिया था। जबकि, कर्पूरी ठाकुर का पुत्र होने के कारण रामनाथ ठाकुर तीसरी बार राज्यसभा जाने में सफल रहे। इस बीच भाजपा ने बड़ी होशियारी से राष्ट्रपति के द्वारा हरिवंश नारायण सिंह को राज्यसभा में नामांकित करा दिया। साथ ही पहले से नीतीश समेत एनडीए के किसी सहयोगी दल को इसकी भनक नहीं लगने दी। यही नहीं, जिस दिन 10 अप्रैल को नीतीश कुमार ने राज्यसभा की सदस्यता की शपथ ली। उसके कुछ घंटे बाद हरिवंश ने भी राज्यसभा की सदस्यता ग्रहण की। साथ ही हरिवंश को उप सभापति भी निर्वाचित करा दिया गया। अब तक हरिवंश नीतीश कुमार को सर कहकर बुलाया करते थे। अब नीतीश को संसदीय गरिमा के अनुसार सदन में हरिवंश को संसदीय गरिमा के अनुसार संबोधित करना पड़ेगा।

जनसुराज के आरोपों का क्या... बीते वर्ष विधानसभा चुनाव के दौरान जनसुराज पार्टी के नेता प्रशांत किशोर ने भाजपा के चाल, चरित्र और चेहरा पर सवाल उठाते हुए सम्राट चौधरी की शैक्षणिक योग्यता और सामूहिक हत्या के आरोप में न सिर्फ जेल जाने बल्कि खुद को कम उम्र का बताकर जमानत पाने का आरोप लगाया था। उस समय न तो सम्राट चौधरी, न ही भाजपा और न ही सरकार ने इस पर कोई सफाई दी थी। अब सम्राट के सत्ता संभालने के बाद जनसुराज ने इस मुद्दे को फिर गर्मा दिया है। अब जनसुराज इस मामले को कोर्ट में ले जाने की बात कह रहा है। अगर, जनसुराज के आरोपों में दम है तो इससे सरकार की परेशानी बढ़ सकती है।

मंत्रिमंडल के गठन में सामाजिक समीकरण की चुनौती

अब जबकि सरकार ने विधानसभा में विश्वास मत प्राप्त कर लिया है, अगली चुनौती मंत्रिमंडल के गठन में सामाजिक समीकरण बनाने की है। बिहार में एनडीए के सहयोगी दलों राष्ट्रीय लोक मोर्चा (रालोमो), लोकजनशक्ति पार्टी (रामविलास) और हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा (हम) के पुराने चेहरे ही सम्राट की सरकार में शामिल होंगे। क्योंकि हम मुखिया जीतनराम मांझी और रालोमो के सुप्रीमो उपेन्द्र कुशवाहा ने अपने बेटे को पिछली सरकार में भी मंत्री बनाया था। लोजपा (आर) के नेता चिराग पासवान भी किसी बदलाव के मूड में नहीं बताए जा रहे। हालांकि इस बार जदयू से कुछ नये चेहरों को भी मौका मिलने की उम्मीद है। सरकार गठन में सबसे ज्यादा पेंच भाजपा में फंस रहा है। वरिष्ठ और कई पुराने भाजपाई सम्राट की सरकार में शामिल होने को तैयार नहीं हैं। नीतीश की आख़िरी सरकार में राजस्व मंत्री विजय सिन्हा की सख्त कार्यप्रणाली से नौकरशाहों के बड़े वर्ग में नाराजगी थी। हालांकि अवाम के आम लोग मंत्री की सख्ती से खासे खुश थे। सूत्र बताते हैं कि इस बार विजय सिन्हा मंत्री नहीं बनना चाहते हैं। देखना दिलचस्प होगा कि भाजपा मंत्रिमंडल के गठन में गतिरोध को कैसे दूर कर पाती है। इसके लिए फिलहाल इंतज़ार करना ही उचित होगा।

सलूंबर और प्रतापगढ़ जिलों में बीमारी बनी काल

मौतों पर रहस्य का पर्दा!

सलूंबर और प्रतापगढ़ में बच्चों की मौतों ने आदिवासी क्षेत्रों की बदहाल स्वास्थ्य व्यवस्था की सच्चाई उजागर कर दी है। इलाज की कमी, खराब बुनियादी ढांचा और जागरूकता के अभाव के बीच अंधविश्वास भी हालात को और गंभीर बना रहा है। प्रशासन "रहस्यमयी बीमारी" कहकर जिम्मेदारी से बचता नजर आता है, जबकि मूल समस्या चिकित्सा सुविधाओं की कमी और व्यवस्था की विफलता है, जिसका खामियाजा मासूम जानें भुगत रही हैं।

ज्ञान चंद पाटनी, वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान के सलूंबर और प्रतापगढ़ जिलों में 15 दिन में बीमारी के कारण एक दर्जन से अधिक बच्चों की मौत न केवल गंभीर त्रासदी है, बल्कि देश के आदिवासी और दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में चिकित्सा व्यवस्था की बदहाली का प्रमाण भी है। इन इलाकों में उपचार की समुचित व्यवस्था नहीं होने से मरीजों को इलाज के लिए जिला मुख्यालय तक जाना पड़ता है, खराब रास्तों के कारण यह काम भी आसान नहीं है। आपात चिकित्सा सुविधा या एंबुलेंस सेवाएं दूर-दराज के इलाकों में अक्सर उपलब्ध नहीं होतीं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टर नहीं होने, दवाओं की कमी और जांच मशीनों की अनुलब्धता के कारण सामान्य बीमारी में भी मरीज की मौत हो जाती है। बुनियादी ढांचे के अभाव और समय पर इलाज न मिलने से हाशिये पर रहने वाले लोगों की जान दांव पर लगी रहती है। सलूंबर और प्रतापगढ़ जिलों में बच्चों की मौत के मामले में भी यही स्थिति नजर आती है।

सलूंबर और प्रतापगढ़ में हुई मौतों को अधिकारी "रहस्यमय बीमारी" या "अंधविश्वास" के नाम से ढकने की कोशिश करते दिखाई दिए। असली सवाल यह है कि आदिवासी बच्चों को सामान्य चिकित्सा सुविधा भी क्यों नहीं मिल पातीं। जब बच्चों की मौतें बढ़ती हैं, तो प्रशासन झोलाछाप डॉक्टरों के खिलाफ कार्रवाई करने और जांच-सर्वे अभियान चलाने में लग जाता है, लेकिन जमीनी स्तर पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की हालत सुधारने, नर्स-डॉक्टर की उपलब्धता और दवाओं की नियमित सप्लाई जैसे मुद्दों की अनदेखी की जाती है।

क्या है मामला

▪ सलूंबर और प्रतापगढ़ जिलों में अप्रेल की शुरूआत में 'रहस्यमयी' बीमारी से प्रभावित बच्चों में तेज बुखार, उल्टी-दस्त और बेहोशी जैसे लक्षण दिखे। प्रतापगढ़ जिले के धरियावद-पारसोला क्षेत्र में भी ऐसे मामले सामने आए। सबसे पहले सलूंबर जिले के लसाड़िया ब्लॉक में बच्चे बीमार होने लगे। हालत बिगड़ने के बाद कुछ बच्चों को उदयपुर के एमबी अस्पताल में भी रेफर किया गया। सलूंबर और प्रतापगढ़ में कुल 13 बच्चों की मौत हुई। सलूंबर के घाटा गांव में दो, लालपुरा में तीन, कालीभीत और अमलोदा में एक- एक बच्चे की मौत हुई। प्रतापगढ़ के घटेला और भुंगा भट्ट में एक- एक बच्चे, धोली मगरी और महूड़ीखेड़ा में दो- दो बच्चों की मौत हुई है। बड़ी संख्या में बच्चों के बीमार होने और मौत की खबरों के बाद प्रशासन हरकत में आया। मेडिकल टीमों ने घर-घर सर्वे कर ब्लड सैंपल भी लिए। रहस्यमय बीमारी का लेबल चिपका कर प्रशासन अपनी जिम्मेदारी से बचता नजर आया। आश्चर्य की बात यह है कि इसे विपक्ष ने भी मुद्दा नहीं बनाया। आदिवासियों के लिए आवाज उठाने का दम भरने वाली भारतीय आदिवासी पार्टी की चुप्पी भी अखरने वाली है।

बदहाली के शिकार अदिवासी क्षेत्र

राज्य सरकार जयपुर में रिम्स जैसे बड़े चिकित्सा संस्थान विकसित करने पर ध्यान दे रही है। मेडिकल टूरिज्म की बातें भी की जा रही हैं, लेकिन दूर-दराज के आदिवासी इलाकों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में अब भी डॉक्टर, नर्स और दवाओं की कमी बनी हुई है। राजस्थान के आदिवासी बहुल जिलों में मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर अधिक है, जो इस बात का सबूत है कि इन इलाकों की जनता को अब भी आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था से नहीं जोड़ा गया है। केवल ये ही नहीं, राज्य के दूसरे अदिवासी क्षेत्र भी बदहाली के शिकार हैं। राजस्थान से बाहर निकलें तो वहां भी कमोबेश ऐसी ही स्थिति है। यही वजह है कि महाराष्ट्र के मेलघाट जैसे आदिवासी इलाकों में भी कुपोषण और बुनियादी ढांचे के अभाव की वजह से बच्चों, गर्भवती महिलाओं और दूध पिलाने वाली माताओं की लगातार मौतें हो रही हैं। बॉम्बे हाई कोर्ट ने हाल ही में इसे "त्रासदी" बताया है और यह याद दिलाया है कि राज्य की नीतियां जमीन पर उतर ही नहीं पा रहीं।

भारत दुनिया की आधी से ज्यादा आदिवासी आबादी का घर है, लेकिन यह तबका बुनियादी पोषण, साफ पेयजल, शिक्षा और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित है। दुर्गम इलाकों में बसे ये समुदाय आजादी के करीब आठ दशक बाद भी सड़कों, परिवहन सेवाओं और आपात चिकित्सा से कटे हुए हैं। इसलिए सामान्य बीमारी भी बच्चों की जान ले लेती है।

अंधविश्वास में भी उलझे हैं आदिवासी

▪ सलूंबर और प्रतापगढ़ जिलों में बच्चों की मौतों के पीछे अंधविश्वास भी एक कारण माना जा रहा है। बताया जा रहा है कि बीमार बच्चों को अस्पताल ले जाने की बजाय ओझाओं के पास ले जाया गया, जिससे उनकी स्थिति बिगड़ी। इस सच की अनदेखी नहीं की जा सकती कि गरीबी, शिक्षा की कमी और आधुनिक चिकित्सा तक पहुंच नहीं होने से ही लोग झाड़-फूंक जैसे अंधविश्वासों में फंसते हैं। गत वर्ष नवंबर में भीलवाड़ा जिले में भी अंधविश्वास के चलते डाम लगाने से बच्चों की मौत के मामले सामने आए थे। भीलवाड़ा जिले में ही चार साल में डाम लगाने के 15 से अधिक मामले सामने आ चुके हैं। इनमें पांच बच्चों की मौत तक हो चुकी है। इस तरह के काम करने वाले भोपों के खिलाफ भी पुलिस में मामले दर्ज हुए हैं। इसके बावजूद यह सिलसिला नहीं थमा। अब भी बड़ी संख्या में ग्रामीण सर्दी-जुकाम होने पर बच्चों को डाम लगाने या झाड़-फूंक को प्राथमिकता देते हैं।

▪ मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी ऐसे मामले सामने आ चुके हैं। वर्ष 2024 में मध्यप्रदेश के झाबुआ इलाके में निमोनिया से पीड़ित तीन बच्चों को इलाज के नाम पर सलाखों से दागने का मामला चर्चा में आया था। झारखंड के गांवों में भी आदिवासी समुदाय में चिड़ी दाग की ऐसी ही एक विचित्र परंपरा है। पेट संबंधी रोग ठीक करने के नाम पर बच्चों के पेट गर्म सलाखों से दागे जाते हैं। हर वर्ष जनवरी के मध्य यहां टुसू पर्व मनाया जाता है। उसी दिन से बच्चों को गर्म सलाखों से दागने का सिलसिला शुरू हो जाता है। नवजात को दागने के लिए तो इस पर्व का इंतजार भी नहीं किया जाता। उड़ीसा के कुछ इलाकों में भी इस तरह की परंपरा है। लोहे व तांबे की सलाखों के अगले हिस्से को चिड़ी के आकार का देकर उसे तपाया जाता है। फिर ओझा बच्चे की नाभि के चारों ओर सरसों का तेल लगाता है और गर्म सलाखों से नाभि के चारों ओर चार बार दागता है। दाग वाले स्थान पर पुनः सरसों तेल लगा दिया जाता है। इस प्रक्रिया में बच्चा तड़प उठता है। कई बार बच्चे की मौत तक हो जाती है।

▪ साफ है कि चिकित्सा विज्ञान की प्रगति के बावजूद इस तरह के गलत और भ्रांतिपूर्ण कृत्य बच्चों की जान ले रहे हैं। आदिवासी, ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लोग अक्सर आधुनिक चिकित्सा प्रणाली की बजाय तांत्रिकों और झाड़-फूंक करने वालों पर भरोसा करते हैं। चिकित्सा सुविधाओं की अनुपलब्धता और जागरूकता की कमी इसे बढ़ावा देती है। बीमारी और उपचार की सही जानकारी न होने के कारण इलाज के लिए ऐसे तरीके अपनाए जाते हैं। महज अंधविश्वास पर बच्चों की मौत का ठीकरा फोड़ने की बजाय बुनियादी ढांचे को मजबूत करने पर ध्यान देना होगा। इन इलाकों में आधुनिक चिकित्सा तंत्र को भी मजबूत किया जाना चाहिए। साथ ही वनस्पतियों पर आधारित सदियों से प्रचलित नुस्खों को विशेषज्ञों के परीक्षण के बाद आमजन तक पहुंचाने पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

अब भी उपेक्षित हैं आदिवासी

आदिवासियों को मूलनिवासी माना जाता है। भाषा, संस्कृति, परंपरा और जीवनशैली में अंतर के कारण वे बाकी आबादी से अब भी अलग-थलग हैं। उनका जीवन प्रकृति के साथ पूरी तरह से जुड़ा हुआ है। साथ ही, वे प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में बहुत ही समझदार होते हैं। ब्रिटिश काल की वन नीतियों और आजादी के बाद की विकास गतिविधियों ने आदिवासी लोगों की आत्मनिर्भरता को खत्म कर दिया है। उनके शांत जीवन पर कई तरह से असर पड़ा है। गरीबी, कुपोषण और जागरूकता की कमी के कारण उनका स्वास्थ्य अक्सर खराब रहता है। भौगोलिक कारक भी उन पर कुछ प्रभाव डालते हैं। उन्हें स्वास्थ्य से जुड़ी कुछ खास तरह की समस्याएं भी होती हैं, जो मुख्य रूप से उनके रहने की जगह, मुश्किल इलाकों और पर्यावरण से भी जुड़ी होती हैं। इसलिए उनके स्वास्थ्य और विकास के लिए खास योजनाएं बनाकर उन पर अमल करना आवश्यक है।

अधिसंख्य आदिवासी अपने अधिकारों, रोजगार के अवसरों और शिक्षा से जुड़ी योजनाओं के बारे में जागरूक नहीं हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित होने का सबसे अधिक असर हमेशा सबसे गरीब और सबसे हाशिए पर पड़े आबादी समूहों पर ही पड़ता है। भारत में अनुसूचित जनजातियों को एक अलग समुदाय के रूप में मान्यता दी गई है। इस वर्ग को विधायिका, शिक्षण संस्थानों और नौकरियों में आरक्षण भी मिला हुआ है। इसके बावजूद उनकी स्थिति में खास बदलाव नहीं आया है। इस आरक्षण का फायदा लेने वाले लोग भी अपने में मगन रहते हैं। यही वजह है कि आज भी आदिवासी इलाके सामान्य सुविधाओं के लिए तरस रहे हैं। भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने का सपना देखा जा रहा है, लेकिन जमीनी हकीकत से आंख चुराई जा रही है। यह बात याद रखनी होगी कि हाशिए पर धकेल दिए गए आदिवासियों को विकास की धारा में शामिल किए बिना देश को विकसित राष्ट्र बनाने का सपना साकार नहीं होने वाला।

विदेशी दृष्टि में सहेजा राजस्थान का सांस्कृतिक दस्तावेज

तस्वीरों में सजी मरुधरा की आत्मा

एलिजाबेथ सिम्सन की दुर्लभ तस्वीरों पर आधारित 'मैपिंग कल्चर्स' प्रदर्शनी ने बीकानेर में राजस्थान के लोकजीवन को सजीव रूप में सामने रखा। ग्रामीण जीवन, परंपराएं और सांस्कृतिक विविधता को संवेदनशील दृष्टि से सहेजती ये तस्वीरें नई पीढ़ी के लिए एक जीवंत इतिहास का रूप ले चुकी हैं।

डा. मुदिता पोपली, पत्रकार एवं लेखिका

बीकानेर में मलंग फोक फाउंडेशन द्वारा 'सेंटर फॉर लाइफ' में हाल ही में आयोजित 'मैपिंग कल्चर्स' प्रदर्शनी कला प्रेमियों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र रही। यह प्रदर्शनी प्रख्यात ब्रिटिश फोटोग्राफर एलिजाबेथ सिम्सन (1931–2025) के दुर्लभ और ऐतिहासिक फोटोग्राफ पर आधारित रही, जिन्होंने राजस्थान के लोकजीवन की गहराई और रंगों को अत्यंत जीवंत रूप में सहेजा।

प्रदर्शनी में प्रस्तुत तस्वीरें केवल दृश्य नहीं, बल्कि राजस्थान की सांस्कृतिक आत्मा का दस्तावेज हैं। इनमें ग्रामीण जीवन, पारंपरिक पहनावा, रंग-बिरंगी पगड़ियां, ओढ़नियां, हस्तशिल्प, सामाजिक संरचना और दैनिक जीवन की सुक्ष्म झलकियां अत्यंत संवेदनशीलता के साथ उभरकर सामने आती हैं। एलिजाबेथ सिम्सन ने 1960 और 1970 के दशक से राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में लंबे समय तक यहां रहकर जीवन को निकट से समझा। उन्होंने केवल तस्वीरें नहीं लीं, बल्कि लोगों के जीवन, उनकी परंपराओं और सामाजिक ताने-बाने को आत्मसात किया।

हजारों तस्वीरों का सांस्कृतिक अभिलेख

सिम्सन के कार्यों का दायरा अत्यंत व्यापक रहा। उन्होंने हजारों नेगेटिव और ट्रांसपेरेंसी के माध्यम से राजस्थान के ग्रामीण जीवन को सहेजा। बाद के वर्षों में इन तस्वीरों को डिजिटल रूप में संरक्षित किया गया। उनकी तस्वीरों की प्रदर्शनियां देश के अहमदाबाद, दिल्ली, बोरुंदा, कोटा और जयपुर जैसे बड़े शहरों में आयोजित हो चुकी हैं। वर्ष 2026 में भी उनके कार्यों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के प्रयास जारी हैं।

शोध, संवेदना और समर्पण

एलिजाबेथ सिम्सन का जन्म 7 अप्रैल 1931 को हुआ। उन्होंने इंग्लैंड के बाथ एकेडमी ऑफ आर्ट में अध्ययन किया और वहीं अध्यापन भी किया। भारत के प्रति उनका आकर्षण उन्हें 1963 में पहली बार यहां लेकर आया। इसके बाद उन्होंने बार-बार भारत, विशेषकर राजस्थान की यात्राएं कीं। बोरुंदा में रूपायन संस्थान से जुड़कर उन्होंने स्थानीय जीवन को गहराई से समझा और वर्षों तक यहां के लोगों के बीच रहकर काम किया। उन्होंने राजस्थान के पशुपालकों, किसानों, कारीगरों, रंगरेजों, व्यापारियों और खानाबदोश समुदायों के जीवन को एक सांस्कृतिक अभिलेख के रूप में सहेजा। उनकी तस्वीरों में केवल विषय नहीं, बल्कि भावनाएं और मानवीय जुड़ाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

नई पीढ़ी के लिए जीवंत इतिहास... इस प्रदर्शनी का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह रहा कि बड़ी संख्या में स्कूली बच्चों ने इसे देखा और समझा। उनके लिए यह अनुभव किसी जीवंत इतिहास कक्षा से कम नहीं रहा, जहां तस्वीरों के माध्यम से उन्होंने बीते समय की जीवनशैली, परंपराएं और सांस्कृतिक विविधता को करीब से जाना। प्रदर्शनी का अवलोकन करने वाले कलाकारों और शोधार्थियों का मानना है कि एक विदेशी कलाकार द्वारा किसी क्षेत्र की संस्कृति को इतनी गहराई से समझना और उसे सहेजना अपने आप में एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

यह प्रदर्शनी केवल एक आयोजन भर नहीं रही, बल्कि एक सांस्कृतिक दस्तावेज के रूप में उभरकर सामने आई है। एलिजाबेथ सिम्सन का कार्य यह दर्शाता है कि संस्कृति सीमाओं में बंधी नहीं होती। एक विदेशी कलाकार द्वारा राजस्थान की जीवनधारा को इतनी आत्मीयता से सहेजना हमें अपनी ही विरासत को नए नजरिए से देखने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर बनकर रहेंगे।

आईपीएल 2026 और क्रिकेट का नया मानसिक चेहरा

गेंद दर गेंद बढ़ती धड़कन

आईपीएल 2026 के शुरुआती मैचों में जिस तरह आखिरी ओवर तक परिणाम अनिश्चित बने रहे हैं उसने क्रिकेट देखने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। कभी धीमी बल्लेबाजी, कभी अचानक छक्कों की बारिश और हर मैच में आखिरी गेंद तक बना तनाव दर्शक को लगातार मानसिक उतार चढ़ाव में बांधे रखता है।

अजय अस्थाना वरिष्ठ पत्रकार

अब क्रिकेट पहले जैसा नहीं रहा। न खेल की गति वही है, न देखने का अनुभव वही बचा है। जो खेल कभी समझने और आंकने का हुआ करता था, वह अब महसूस करने और झेलने का अनुभव बन गया है। इंडियन प्रीमियर लीग 2026 के शुरुआती मुकाबलों ने यह साफ कर दिया है कि अब कोई भी मैच सिर्फ खेल नहीं रहा, बल्कि एक लगातार बदलता हुआ मानसिक प्रवाह बन चुका है। हर गेंद के साथ कहानी बदलती है और हर ओवर के साथ मैच की दिशा नए मोड़ लेती है।

आप मैच देख रहे होते हैं, यशस्वी जायसवाल क्रीज पर हैं। शुरुआत में संयम, सिंगल डबल, गैप ढूंढना। लगता है पारी आकार ले रही है, खेल एक लय पकड़ रहा है। लेकिन जैसे ही गेंदबाज थोड़ा सा चूकता है, वही जायसवाल अचानक गियर बदलते हैं, एक कवर ड्राइव, फिर पुल और फिर लगातार बाउंड्री। जो पारी कुछ देर पहले स्थिर लग रही थी, वही अचानक पूरे मैच की धड़कन बढ़ा देती है। दर्शक भी उसी लय में बहने लगता है, जैसे हर शॉट उसकी अपनी सांसों की गति तय कर रहा हो।

कभी कोई टीम पूरे मैच में नियंत्रण में दिखती है। बल्लेबाज सहज लगते हैं, गेंदबाज दबाव में और दर्शक मान लेता है कि परिणाम तय है। लेकिन फिर अचानक एक ओवर आता है और वहां जोस बटलर जैसे बल्लेबाज खेल की दिशा बदल देते हैं। एक गेंद पर चौका, अगली पर छक्का और फिर वही ओवर पूरे मुकाबले को अनिश्चितता में डाल देता है। यहां सिर्फ स्कोर नहीं बदलता, विश्वास बदलता है, उम्मीद बदलती है।

उत्साह, तनाव और थकान...

खेल बदला, कहानी वही...

आईपीएल का असली चेहरा अब वहीं दिखाई देता है जहां खेल खत्म होता हुआ लगता है। एक ऐसा ही दृश्य, लखनऊ सुपर जायंट्स और कोलकाता नाइट राइडर्स का मुकाबला। 182 रन का लक्ष्य। स्कोर 128 पर 7 विकेट। मैच लगभग हाथ से निकल चुका। दर्शक कुर्सी से आधा उठ चुका, कुछ लोग स्क्रीन से नजर हटाने लगे। और तभी क्रीज पर आते हैं मुकुल चौधरी। पहली कुछ गेंदें सिर्फ परखते हैं। फिर अचानक एक शॉट- सीधा छक्का। अगली गेंद फिर छक्का। गेंदबाज बदलता है, फील्ड बदलती है, लेकिन कहानी नहीं बदलती। हर शॉट के साथ माहौल बदलता जाता है। सात छक्कों के साथ 27 गेंदों में 54 रन। और वही मैच जो कुछ देर पहले खत्म माना जा रहा था, अचानक जीत में बदल जाता है। यह सिर्फ एक पारी नहीं थी, यह पूरे मैच की मानसिक दिशा बदलने वाला विस्फोट था। यही वह क्षण है जहां दर्शक को महसूस होता है कि वह सिर्फ देख नहीं रहा, बल्कि उस पल को जी रहा है। अब दर्शक केवल दर्शक नहीं रहा। वह हर गेंद के साथ उस खेल का हिस्सा बन गया है। डॉट बॉल पर हल्की राहत, चौके पर उम्मीद और छक्के पर उछाल, यह सब अब एक आदत बनता जा रहा है। हर ओवर एक नया भाव लेकर आता है और हर गेंद उस भाव को बदल देती है।

वैभव का असली वैभव

आईपीएल 2026 के शुरुआती मैचों में यह बदलाव लगातार दिखाई देता है। एक तरफ साई सुदर्शन जैसे बल्लेबाज हैं जो पारी को धीरे धीरे बुनते हैं, समय लेते हैं, दबाव को समझते हैं और फिर अंत में गति बढ़ाते हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ बल्लेबाज ऐसे होते हैं जो लय में आते ही कुछ ही गेंदों में मैच का रुख बदल देते हैं। उनके लिए समय नहीं, लय मायने रखती है और वही लय मैच का परिणाम तय कर देती है। ऐसी ही एक अलग कहानी है वैभव सूर्यवंशी की। क्रीज पर आते ही पहली गेंद और बिना झिझक सीधा बाउंड्री के पार। बड़े गेंदबाजों के सामने भी वही आत्मविश्वास। यह वह नई सोच है जो इस क्रिकेट को परिभाषित कर रही है, डर के बिना खेलना। लेकिन इसी कहानी का दूसरा पहलू भी है। एक दो बार जल्दी आउट होने के बाद वही खिलाड़ी थोड़ा रुककर खेलने लगता है। पहली गेंद को देखने की कोशिश, शॉट में हल्की हिचक। यहां साफ लगता है कि शायद उसे संभलकर खेलने की सलाह दी गई है। और यहीं उसका स्वाभाविक खेल थोड़ा दब जाता है।

दरअसल ऐसे खिलाड़ियों को बांधना उनके असर को कम कर देता है। वैभव सूर्यवंशी जैसे बल्लेबाज जोखिम में ही खिलते हैं। अगर वे पहली गेंद पर बाउंड्री मारते हैं तो वह सिर्फ रन नहीं होता, वह पूरे मैच की दिशा तय करता है। उन्हें खुला छोड़ देना ही इस खेल की असली खूबसूरती है, क्योंकि वही इस अनिश्चितता को जन्म देते हैं जो आईपीएल की पहचान बन चुकी है।

यह स्थिति दर्शक के मन पर गहरा प्रभाव डालती है। अब वह शांत बैठकर खेल नहीं देख सकता। उसका ध्यान हर गेंद पर टिका रहता है। उसका मन हर रन के साथ बदलता है और उसकी भावनाएं हर विकेट के साथ ऊपर नीचे होती रहती हैं। यह एक तरह का मानसिक दबाव बन चुका है जो खेल खत्म होने के बाद भी कुछ समय तक बना रहता है।

कई मैचों में यह भी देखने को मिला है कि आखिरी ओवर ही पूरे खेल का केंद्र बन जाता है। हर गेंद पर नया समीकरण बनता है और हर शॉट के साथ परिणाम बदलने की संभावना बनी रहती है। यही वह जगह है जहां क्रिकेट खेल से आगे निकलकर अनुभव बन जाता है, जहां अंतिम गेंद सिर्फ नतीजा नहीं देती, बल्कि पूरे मैच की भावनाओं को एक बिंदु पर समेट देती है।

अब सवाल यह उठता है कि क्या क्रिकेट बदल गया है या दर्शक बदल गया है। यह दोनों का साझा परिवर्तन है। आज का दर्शक तेज रोमांच का आदी हो चुका है। उसे हर पल कुछ नया चाहिए, हर ओवर में कुछ अप्रत्याशित चाहिए। और खेल भी उसी मांग के अनुरूप ढल गया है। स्थिरता की जगह अनिश्चितता ने ले ली है और पूर्वानुमान की जगह आश्चर्य ने। यह बदलाव केवल खेल तक सीमित नहीं है। यह दर्शक की मानसिकता तक पहुंच चुका है। अब क्रिकेट देखना केवल समय बिताने का साधन नहीं रहा, बल्कि एक भावनात्मक यात्रा बन चुका है। यह यात्रा कभी उत्साह देती है, कभी तनाव देती है और कभी थकान भी छोड़ जाती है। लेकिन इसके बावजूद दर्शक इससे दूर नहीं जा पाता, क्योंकि हर मैच अपने साथ एक नई कहानी लेकर आता है। कई बार ऐसा भी लगता है कि खेल अब केवल मैदान में नहीं बल्कि दर्शक के भीतर भी चल रहा है। हर गेंद उसके भीतर एक प्रतिक्रिया पैदा करती है और हर ओवर उसकी मानसिक स्थिति को बदल देता है। यही वह बिंदु है जहां क्रिकेट केवल खेल नहीं रहता, बल्कि एक अनुभव बन जाता है।

आईपीएल 2026 ने क्रिकेट को एक नई पहचान दी है। यह पहचान स्थिरता की नहीं, बल्कि अनिश्चितता की है। हर गेंद एक नया मोड़ है, हर ओवर एक नया तनाव है और हर मैच एक नई मानसिक कहानी। और शायद यही इस नए क्रिकेट की सबसे बड़ी ताकत भी है और सबसे बड़ी चुनौती भी।

कोटा में पढ़ाई करने का लेवल सबसे अलग

सफलता का अंतरिक्ष

अरविंद गुप्ता वरिष्ठ पत्रकार

चंबल नदी किनारे बसा एक शहर कोटा। लगभग 15 लाख की आबादी। प्रतिवर्ष डेढ़ से दो लाख से अधिक विद्यार्थियों की हलचल इसकी पहचान है। क्लासरूम कोचिंग का सबसे प्रभावी इको सिस्टम है यहां। एक ही छत के नीचे नेशनल कॉम्पिटीशन मिल जाने से बच्चों की परफॉर्मेंस में निरंतर सुधार। यही वजह है कि राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षाओं के रिजल्ट में प्रतिवर्ष कोटा कोचिंग से सफलता का स्वर्णिम अध्याय जुड़ रहा है। जेईई-मेन, एडवांस्ड और नीट-यूजी के लिए दो से तीन साल कोटा में रहकर अपने लक्ष्य के लिए निरंतर पढ़ाई करने वाले कोचिंग विद्यार्थी यहां नेशनल कॉम्पिटिशन जैसा स्वस्थ शैक्षणिक वातावरण महसूस करते हैं।

इस वर्ष 10वीं एवं 12वी बोर्ड परीक्षाओं के रिजल्ट के बाद अप्रैल माह में विभिन्न राज्यों से कोटा आने वाले विद्यार्थियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। 20 अप्रैल को जेईई-मेन के शानदार रिजल्ट ने कोटा कोचिंग को फिर से नई उंचाइयां दी है। अगले दो माह में जेईई-एडवांस्ड एवं नीट-यूजी प्रवेश परीक्षाएं होंगी। इसके रिजल्ट एवं काउंसलिंग के बाद हजारों विद्यार्थी पसंद की ब्रांच या इंस्टीट्यूट नहीं मिलने पर अपनी रैंक इम्प्रूव करने के लिए एक साल और कोटा में रहकर मेहनत करते हैं। इसे देखते हुए अगस्त-सितंबर तक रिपीटर्स की संख्या भी पहले से अधिक होगी। इस शहर ने विगत 4 दशकों में 30 लाख से अधिक छात्रों और अभिभावकों का विश्वास जीता है। अब तक 10 लाख से डॉक्टर, आईआईटीयन व इंजीनियर कोटा कोचिंग ने दिए हैं।

चारों ओर नये सत्र की रौनक

- इस वर्ष नये शैक्षणिक सत्र का आगाज उत्साहजनक है। देश के सभी प्रमुख कोचिंग संस्थानों के मुख्यालय कोटा में हैं। यहां नये विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन सत्र आयोजित किए जा रहे हैं, जिसमें उनको कोटा के कोचिंग सिस्टम की जानकारी, गाइडेंस एवं प्रवेश परीक्षाओं की प्रतिस्पर्धा में सफल होने की रणनीति एवं सक्सेस मंत्र बताए जा रहे हैं। यहां किशोर उम्र के बच्चे निरंतर मेहनत करते हुए लड़ना और जीतना सीख रहे हैं।
- नये शहर में कोचिंग क्षेत्र की सड़कों पर नये विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों की भीड़ दिखने लगी है। कोचिंग संस्थानों में विद्यार्थियों की चहल-पहल बढ़ने से गर्ल्स व ब्वायज हॉस्टल, पीजी, मैस, स्टेशनरी, मोबाइल, साइकिल, ऑटोरिक्शा, रेस्तरां, होटल, फल, जूस, चाट आदि स्थानों पर भी रौनक लौट आई है। पहले चरण में कक्षा-10वीं एवं 11वीं के बाद सैकड़ों विद्यार्थियों व अभिभावकों का बस, ट्रेन व टेक्सियों से यहां आने का सिलसिला जारी है। नये सत्र के लिए चारों दिशाओं में 4 हजार हॉस्टल एवं 20 हजार पीजी कमरों को पूरी तरह तैयार किया गया है। एक अनुमान के अनुसार, ढाई लाख से अधिक कोचिंग विद्यार्थियों के लिए हॉस्टल व पीजी रूम सुविधा उपलब्ध होने से अब विद्यार्थियों को कम किराये पर अच्छे हॉस्टल व रूम उपलब्ध हो सकेंगे।

कोटा, कोचिंग, केयरिंग

कोटा शहर अब जाग उठा है, यहां का हर वर्ग नई उड़ान भरने के लिए तैयार है। कोटा स्टूडेंट वेलफेयर सोसायटी ने जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षा नगरी कोटा को 'कोचिंग का मॉडल' बनाने के लिए 'कोटा केयर्स' जैसा अनूठा अभियान प्रारंभ किया। हॉस्टल एसोसिएशन ने इस वर्ष कोचिंग स्टूडेंट्स से हॉस्टल में सिक्यूरिटी राशि व एडवांस राशि नहीं लेने की घोषणा की। ऑटोचालक एसोसिएशन ने कोचिंग स्टूडेंट्स से शहर में 1 किमी की दूरी पर 20 रुपए किराया लेने का निर्णय किया है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) ने इनडोर व आउटडोर सेवाशुल्क में कोचिंग विद्यार्थियों को 20 प्रतिशत छूट देने की घोषणा की है। पुलिस प्रशासन ने एसओएस एप सुविधा लागू की है, जिसमें पैनिक बटन दबाते ही पुलिस आपकी मदद के लिए पहुंचती है।

इमोशनल वेलबिंग सेंटर

एलन कॅरिअर इंस्टीट्यूट के मीडिया प्रभारी नीतेश शर्मा ने बताया कि प्रमुख कोचिंग संस्थान 'स्टूडेंट इमोशनल वेलबिंग सेंटर' द्वारा विद्यार्थियों को प्रभावी काउंसलिंग सुविधा उपलब्ध करवा रहे हैं। संस्थानों में योगा शिविर, मोटिवेशनल सत्र आदि से विद्यार्थी यहां रहते हुए बेहतर महसूस कर रहे हैं। वे एक-दूसरे के साथ नॉलेज शेयरिंग करते हैं। अन्य शहरों की तुलना में कॉस्ट ऑफ लिविंग कोटा में बहुत संतुलित हैं। कोविड महामारी के बाद कोटा में इंफ्रास्ट्रक्चर तेजी से बढ़ा है, इससे शहर के चारों ओर कोचिंग संस्थानों के आसपास ढाई लाख विद्यार्थियों के लिए सुविधायुक्त हॉस्टल्स बनकर तैयार है।

नीट के लिए यहां नेशनल कॉम्पिटीशन... मध्यप्रदेश के सिंगरौली जिले के सरई गांव से सुमित जायसवाल 12वीं के बाद अब नीट-यूजी की तैयारी करेंगे। उसके बड़े भाई हेमंत कोटा से कोचिंग लेकर उप्र के मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस कर रहे हैं। रूचि जायसवाल भी नीट की तैयारी करने कोटा पहुंची। इसी गांव के प्रियांश गुप्ता भी डॉक्टर बनना चाहते हैं। उसके भाई डॉ.प्रदीप गुप्ता ने कोटा कोचिंग से नीट में चयनित होकर एमबीबीएस किया है। जहाजपुर से अनन्या अपनी मां के साथ कोटा में नीट की तैयारी करने पहुंची। श्रीमहावीरजी से 11वीं के छात्र प्रणव शर्मा ने नीट में अच्छी फैकल्टी होने से कोटा को चुना। उसके भाई ने भी यहां एलन से कोचिंग लेकर गत वर्ष एमबीबीएस किया। मप्र के मंदसौर से आकांक्षा और ईशिका दोनों 12वीं के बाद अब कोटा से नीट की कोचिंग लेगी। उन्होंने कहा, हमारे गांव से बहुत बच्चे यहां पढ़ रहे हैं। यहां पढ़ाई का हैल्दी कॉम्पिटीशन है।

रिजल्ट ने जीता सबका विश्वास

एलन कॅरिअर इसंटीट्यूट के निदेशक नवीन माहेश्वरी से राजस्थान टुडे की खास बातचीत

? विद्यार्थी एवं अभिभावकों का कोटा कोचिंग पर इतना विश्वास कैसे?

माहेश्वरी: देश में कई बड़े शहर उद्योग, तीर्थस्थल, हैरिटेज, टूरिज्म, प्रकृति, एडवेंचर आदि से अपनी अलग पहचान रखते हैं। लेकिन कोटा इकलौता ऐसा छोटा शहर है जो प्रमुख प्रवेश परीक्षाओं में प्रतिवर्ष सर्वश्रेष्ठ रिजल्ट देकर सबके विश्वास और आस्था का केंद्र बना है। आज सभी प्रवेश परीक्षाओं में कड़ी प्रतिस्पर्धा है। इनके रिजल्ट पर सबकी नजरें टिकी होती है। कोटा कोचिंग का रिजल्ट सबसे आगे दिखाई देता है, क्योंकि यहां के फैकल्टी अच्छा रिजल्ट देने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं।

? कोटा कोचिंग के इको सिस्टम को नंबर-वन क्यों माना जाता है?

माहेश्वरी: यह सच है। कोटा कोचिंग अब एक इको सिस्टम बन चुका है। यहां बातें कम, काम ज्यादा होता है। कोचिंग के 6 घंटे के बाद शेष 18 घंटे में शहर का हर नागरिक कोचिंग विद्यार्थियों के प्रति समर्पित है। राज्य सरकार, जिला प्रशासन, पुलिस सहित हर वर्ग का सहयोग सुरक्षित इको सिस्टम तैयार कर रहा है।

? कोचिंग पढ़ाई के साथ और क्या स्किल दे रहा है?

माहेश्वरी: मेहनत करके आगे बढ़ने का स्किल। सबको दिन रात पढ़ाई करते देख बच्चों में और पढ़ाई करने की भूख जागृत हो जाती है, जिससे उनमें आत्मविश्वास आ जाता है। एआई की मदद से वे मोबाइल का सदुपयोग कर रहे हैं। विद्यार्थी कोचिंग में टेस्ट देकर कमियों का एनालिसिस करते हैं। उनको माई मिस्टेक लिखकर सुधार करना सिखाते हैं।

? कोचिंग विद्यार्थियों की सुरक्षा के लिए क्या प्रयास हैं?

माहेश्वरी: कोटा इकलौता ऐसा शहर है जहां 2006 से पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर कम्यूनिटी पुलिस ऑफिसर (सीपीओ) सिस्टम लागू है। इसमें 200 से अधिक जवान 24 घंटे कोचिंग छात्र-छात्राओं की सुरक्षा पर नजर रखते हैं। उनकी मौजूदगी से रोज सुबह 5 से 6 बजे छात्राओं को कोचिंग संस्थान तक पहुंचने के लिए सुरक्षित वातावरण मिल रहा है।

साइंस की खुशबू देता है कोटा

मोशन एजुकेशन के निदेशक नितिन विजय से राजस्थान टुडे की खास बातचीत-

? क्लासरूम कोचिंग के लिए कोटा सबसे अलग कैसे है?

नितिन विजय: कोटा की आबोहवा में सिर्फ साइंस की खूशबू है। जैसे गोवा की पहचान टूरिज्म से है वैसे ही कोटा की पहचान सिर्फ अच्छी पढ़ाई से है। देश में कोई भी विद्यार्थी यदि सांइस में कुछ करने का सपना देखता है तो उसके लिए कोटा नंबर वन है। यहां साइंस बेस्ड कॉम्पिटिशन के लिए स्पेशलाइजेशन है।

? स्कूली पढ़ाई और कोचिंग में बुनियादी फर्क क्या है?

नितिन विजय: हम स्कूली शिक्षा से प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहे हैं। कोटा कोचिंग साइंस पर आधारित प्रवेश परीक्षाओं पर फोकस है। प्रवेश परीक्षाओं में रटकर उत्तर नहीं लिखना है, हर सवाल पर सोचकर एक सही विकल्प को चुनना होता है। टॉपिक के कंसेप्ट को समझने के लिए विद्यार्थियों के साथ कोचिंग शिक्षक भी उतनी ही मेहनत कर रहे हैं।

? हिंदी माध्यम और सरकारी स्कूलों के बच्चों को कोचिंग से लाभ?

नितिन विजय: कोटा कोचिंग 'बच्चों में मैं क्या कर सकता हूं?' यह काबिलियत विकसित कर देती है। विद्यार्थी हिंदी मीडियम से हो या गांव के सरकारी स्कूल

से, उसे प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से डॉक्टर, आईआईटीयन या इंजीनियर बनने का सपना कोटा कोचिंग ने सच कर दिखाया है। हम मेधावी बच्चों के साथ एवरेज बच्चों के सलेक्शन पर भी उतना ही ध्यान दे रहे हैं।

? कोचिंग संस्थानों के स्टडी सेंटर कई शहरों में खुले हैं, लेकिन कोटा ही बेस्ट क्यों?

नितिन विजय: देखिये, इस धरती पर क्लासरूम कोचिंग सिस्टम से कई अनुभवी शिक्षाविद जुड़े हैं। परीक्षा पैटर्न चाहे जो हो, कोटा में बच्चों को जो अनुभवी फैकल्टी, स्टडी मैटेरियल, ऑल इंडिया लेवल पर टेस्ट प्रैक्टिस के अवसर मिल रहे हैं, उससे उनको नेशनल कॉम्पिटीशन का माहौल मिलता है। हर स्टडी सेंटर पर सभी राज्यों के विद्यार्थी नहीं हो सकते हैं। इसलिए कोटा का रिजल्ट हर वर्ष अतुलनीय रहता है।

कोचिंग विद्यार्थियों के साथ बच्चों जैसा अपनत्व

मेरे संसदीय क्षेत्र कोटा में प्रवेश परीक्षाओं की सर्वश्रेष्ठ कोचिंग लेने के लिए सभी राज्यों से विद्यार्थी और उनके अभिभावक एक विश्वास के साथ आ रहे हैं। शिक्षा नगरी में अनुशासन और शांत शैक्षणिक वातावरण मिलने से छात्राओं को भी पूरी सुरक्षा मिल रही है। शहरवासी कोचिंग विद्यार्थियों के साथ अपने बच्चों जैसा अपनत्व रखते हैं। कोटा में सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं। सड़क मार्ग व रेल मार्ग से कोटा सभी राज्यों से जुड़ा हुआ है। इसी वर्ष यहां नये ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट की निर्माण कार्य प्रारंभ होने जा रहा है। ट्रिपल आईटी, चार यूनिवर्सिटी, मेडिकल कॉलेज एवं इंजीनियरिंग कॉलेज होने से यहां चारों ओर पढ़ाई का वातावरण दिखाई देता है। हम यहां आने वाले सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

-ओम बिरला, लोकसभा अध्यक्ष एवं कोटा-बूंदी सांसद।

निर्धारित गाइडलाइन की अनुपालना

कोटा शहर की आबोहवा में सिर्फ पढ़ाई का माहौल है। बाहर से आने वाले कोचिंग विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण पढ़ाई, मनपंसद भोजन और ठहरने के लिए सर्वश्रेष्ठ सुविधाएं मिलने से अभिभावक संतुष्ट होकर लौटते हैं। विद्यार्थी प्रवेश परीक्षाओं की प्रतिस्पर्धा में सफल होने के लिए यहां दिन-रात मेहनत करते हैं। राज्य सरकार एवं जिला प्रशासन विद्यार्थियों के हित में कोचिंग संस्थानों एव हॉस्टल संचालकों से निर्धारित गाइडलाइन की अनुपालना कर रहे हैं। शहर का हर वर्ग विद्यार्थियों के प्रति समर्पित है।

-हीरालाल नागर, उर्जा राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार।

शहरवासी करते हैं एडवांस लेवल केयरिंग

देश में कोटा इकलौता ऐसा शहर है जहां के नागरिक प्रतिवर्ष डेढ़ लाख से अधिक विद्यार्थियों की मेजबानी करते है, वर्षपर्यंत उनकी परिवार जैसी विशेष केयरिंग करते हैं। किशोर उम्र के बच्चों के लिए मेंटल हैल्थ पर खास ध्यान दिया जा रहा है। कोचिंग फैकल्टी मेंटर के रूप में विद्यार्थियों की संस्थान के बाहर की समस्याओं का भी समाधान कर रहे हैं। शिक्षा नगरी को राज्य सरकार का पूरा सहयोग मिल रहा है। कोटा कोचिंग पर विश्वास कायम करवाने में शिक्षकों को कई वर्ष लगे हैं।

-संदीप शर्मा, विधायक, कोटा दक्षिण

कोचिंग विद्यार्थियों को परिवार जैसा स्नेह

इस वर्ष सभी राज्यों से बड़ी संख्या में विद्यार्थी अपने उज्जवल भविष्य निर्माण के लिए कोटा शहर का चयन कर रहे हैं। उनका कोटा आगमन यहां की उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता और उनके अटूट विश्वास को दर्शाता है। डॉक्टर एवं इंजीनियर बनने का सपना साकार करने के लिए यहां के कोचिंग संस्थान व नागरिक प्रत्येक विद्यार्थी को परिवार के सदस्य जैसा स्नेह देते हैं। मैं स्वयं विभिन्न गतिविधियों कभी डिनर टेबल पर, तो कभी कॉफी टेबल पर कोचिंग विद्यार्थियों से निरन्तर संवाद बनाए रखता हूं। विद्यार्थियों के विचारों को सुनने, समझने और उनकी समस्याओं के समाधान ढूंढने से सुखद अनुभूति होती है।

-पीयूष समारिया, जिला कलक्टर, कोटा

संघर्ष की मार, रसोई पर वार

डॉ. मधु बैनर्जी पत्रकार व लेखिका

दुनिया के किसी भी कोने में होने वाला संघर्ष सीमाओं तक सीमित नहीं रहता। वैश्विक अर्थव्यवस्था के जरिए उसका असर आम आदमी के घर-आंगन तक पहुंचता है। मध्य-पूर्व में ईरान से जुड़े बढ़ते तनाव का असर अब भारतीय परिवारों, खासकर गृहणियों की दिनचर्या और घरेलू बजट पर साफ दिखाई देने लगा है। रसोई का खर्च, ईंधन की कीमतें और घर की आर्थिक योजना, इन सब पर इसका असर साफ दिख रहा है।

गृहणियां हमेशा से परिवार की आर्थिक व्यवस्था की धुरी रही हैं। सीमित संसाधनों में घर चलाना और संतुलन बनाए रखना उनकी विशेषता है। लेकिन जैसे ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ती हैं, भारत जैसे आयात-निर्भर देश पर इसका सीधा असर पड़ता है। ईरान क्षेत्र में तनाव के कारण तेल आपूर्ति को लेकर अनिश्चितता बढ़ गई है। इसका प्रभाव केवल वाहन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवहन महंगा होने से सब्जियां, दालें और अन्य आवश्यक वस्तुएं भी महंगी हो जाती हैं। जोधपुर की एक गृहिणी सीमा शर्मा कहती हैं कि पहले जहां 3000 रुपए में महीने भर का सब्जी-भाजी का खर्च चल जाता था, वहीं अब 4000 रुपए भी कम पड़ रहे हैं।

गैस सिलेंडर का बढ़ता बोझ

रसोई गैस यानी एलपीजी सिलेंडर की कीमतों में बढ़ोतरी भी गृहणियों के लिए बड़ी चिंता का कारण बन रही है। युद्ध या अंतरराष्ट्रीय तनाव के दौरान ऊर्जा की कीमतों में तेजी से वृद्धि होती है, जिसका सीधा असर घरेलू गैस पर पड़ता है। ऐसी स्थिति में गृहणियां गैस के उपयोग को लेकर अधिक सतर्क हो गई हैं। कम आंच पर खाना बनाना, एक बार में अधिक भोजन तैयार करना और बचत के नए तरीके अपनाना उनकी दिनचर्या बन गया है।

बचत पर संकट...

गृहणियां अक्सर छोटी-छोटी बचत के माध्यम से परिवार के भविष्य को सुरक्षित रखने का प्रयास करती हैं। लेकिन जब रोजमर्रा के खर्च बढ़ते हैं, तो सबसे पहले बचत प्रभावित होती है। एक समय था जब महिलाएं हर महीने कुछ न कुछ बचा लेती थीं, लेकिन बढ़ती महंगाई ने इस आदत को कमजोर कर दिया है। अब अधिकांश आय घरेलू खर्चों में ही खत्म हो जाती है, जिससे भविष्य की योजनाएं प्रभावित हो रही हैं।

महंगाई केवल आर्थिक दबाव ही नहीं लाती, बल्कि मानसिक तनाव भी बढ़ाती है। घर का बजट संतुलित करना, बच्चों की जरूरतें पूरी करना और भविष्य की चिंता ये सभी बातें गृहणियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि आर्थिक अस्थिरता का सबसे अधिक असर उन महिलाओं पर पड़ता है जो सीधे आय अर्जन से जुड़ी नहीं होतीं, लेकिन घर के खर्च का पूरा प्रबंधन करती हैं।

कविता के बदलते स्वरूप और मंच से बाजार तक उसकी यात्रा पर तीखा मंथन

कविता का बाजार और बाजार की कविता

यह लेख कविता के बदलते स्वरूप पर गंभीर प्रश्न उठाता है। पहले जहां कवि सम्मेलन संस्कृति और संस्कार का माध्यम थे, वहीं आज वे मनोरंजन और बाजार का हिस्सा बनते जा रहे हैं। लेखक इस बदलाव के बीच कविता की वास्तविक आत्मा की खोज करता है और मंच से लेकर पुस्तक और बाजार तक उसकी स्थिति पर विचार करता है।

दिनेश सिंदल ✍ कवि, लेखक

पहले जब किसी शहर में कवि सम्मेलन होता था तो मांएं अपने बच्चों के लिए कहती थीं कि आज बिना कॉपी पेंसिल के इन्हें शिक्षा मिलेगी।

कवि सम्मेलन एक स्कूल हुआ करते थे जो संस्कार सिखाते थे। अपनी संस्कृति से परिचय करवाते थे। अपनी जड़ों से जोड़ते थे।

इसका एक कारण ये भी था कि आयोजक कोई शिक्षण संस्थान, या कोई साहित्य प्रेमी होता था। आज की तरह कोई राजनीतिक पार्टी या किसी पार्टी का एमएलए-एमपी नहीं। उस समय कविता सिर्फ मनोरंजन का विषय ही नहीं थी, आत्ममंथन भी करती थी। जिस तरह नौ रसों में एक हास्य रस भी है, उसी तरह मंच पर नौ कवियों में एक हास्य कवि भी हुआ करता था। आजकल कवि का मतलब ही हंसाने वाला हो गया। विदूषक हो गया। और उस हंसाने वाले कवि के पास हास्य कविता नहीं है, वह स्वयं हास्यास्पद बनकर जनता का मनोरंजन करता है।

तालियों और वाह-वाह के चक्कर में कवि जनता के स्तर तक नीचे उतर आता है। जबकि होना यह चाहिए था कि वह जनता का स्तर ऊपर उठा कर अपनी कविता के स्तर तक ले आए।

कवि सम्मेलन विशुद्ध मनोरंजन हो गया। लाफ्टर और स्टैंड अप कॉमेडियन कविता के मंचों पर आ गए। कविता धीरे-धीरे मंच से दूर होती चली गई।

मंच पर कविता कम, अभिनय ज्यादा

बात के जादू धरे रह जाएंगे
मंच पर कुछ मसखरे रह जाएंगे।
दौर में खोटे चलेंगे दोस्तों
गांठ के सिक्के खरे रह जाएंगे।।

लोकतंत्र की इस भीड़-प्रधान व्यवस्था में अब कलाओं का मूल्यांकन भी भीड़ ही करने लगी है। जिसके जितने ज्यादा फॉलोअर्स वह उतना बड़ा कवि। जिसके ज्यादा सब्सक्राइबर उसका लिफाफा उतना ही मोटा। जब भीड़ निर्णय करेगी तो वहां कविता की तो उम्मीद ही नहीं की जा सकती।

इसीलिए कवि भी कविता पर नहीं अपने लाइक्स और अपने फॉलोवर्स बढ़ाने पर ज्यादा मेहनत करते हैं। सोशल मीडिया ने कवि को एक्टर बना दिया। इसलिए मंच पर कविता कम अभिनय ज्यादा दिखता है।

आज कविता दो भागों में विभाजित हो गई है। एक वो जो जनता का मनोरंजन कर के बाजार ढूंढ रही है। दूसरी वो जो कविता के नाम पर खालिश विचार होकर किताबों में दम तोड़ रही है।

पहली तरह के लोग मंचों पर आ गए। इन्होंने अपने परफॉर्मेंस पर वर्क किया। जनता के मनोविज्ञान को समझते हुए उसके मनोरंजन पर ध्यान दिया। ये जन्म दिन, मरण दिन, शादी- ब्याह आदि सभी अवसरों पर कविता पढ़ सकते हैं। किसी की भी जयंती और पुण्यतिथि पर अपने चुटकलों को कविता कह कर फिट कर सकते हैं।

परसाई जी कहते हैं न कि आज कवि-सम्मेलनों में या तो गाना जमता है या गाली। क्योंकि ये दोनों ही समझ में आते हैं। इन दोनों के पार जो कविता नाम की चीज है वह अगर सुनाई जाए तो कवि हूट कर दिया जाएगा। परिणाम यह हो रहा है कि कवि स्वर साधना अधिक करता है, काव्य साधना कम। क्योंकि उसे मंच पर जाना है और अच्छे कवियों की मट्टी पलीद करना है।

वह नट की तरह झूम झूमकर पढ़ता है। ये न छायावादी कवि हैं, न ही प्रयोगवादी, न प्रगतिवादी। ये कंठवादी कवि हैं।

बुद्धिजीवी या अवसरवादी?

दूसरी तरह का वर्ग अपने आपको बुद्धिजीवी कहता है। बुद्धिजीवी वह होता है जो सत्ता या व्यवस्था के निकट रहकर उसकी विचारधारा का समर्थन करता है। और ऐसा करने वाला पौरुषहीन, वीर्यहीन हो तभी वो ठीक से रक्षा कर सकता है। यह भी न प्रतिवादी, न प्रयोगवादी, न जनवादी, यह बस अवसरवादी है। जहां अपना निजी लाभ दिखा उधर रुख किया।

इनमें अधिकतर हिंदी की नौकरी करने वाले लोग हैं। हिंदी की नौकरी करते-करते वे अपने को हिंदी का कवि-साहित्यकार समझने लग जाते हैं। वे भूल जाते हैं कि सरकारी या विश्वविद्यालय की नौकरी पाने के पीछे कई अन्य कारण भी होते हैं। आपका आरक्षित कोटा, आपका राजनीतिक झुकाव, विश्वविद्यालय के शिक्षकों की गुटबाजी आदि।

हिंदी के अध्यापक बनने के बाद ये अपने को हिंदी का कवि भी समझने लग जाते हैं। ये इनकी मजबूरी भी है। क्योंकि सरकारी आयोजनों में 'तू मुझे सहयोग कर, मैं तुझे सहयोग दूं' के तहत इन्ही को बुलाया जाता है। लेकिन जब ये वहां कविता पढ़ते हैं तो उपस्थित श्रोताओं को निराश ही करते हैं। क्योंकि श्रोताओं पर तो कोई बंदिश नहीं होती कि आरक्षण से आए कवि को अतिरिक्त उदारता से सुना जाए। उसके लिए तैंतीस प्रतिशत ज्यादा वाह- वाह की जाय। वह तो बेचारा कविता ढूंढता है और निराश होता है।

ये अपने निजी लाभ के लिए सरकारों का मूंह ताकते रहते हैं। किसी अकादमी का कोई पद मिल जाए। कोई पुरस्कार मिल जाए। किसी सरकारी पत्रिका का संपादन ही मिल जाए।

सरकारी योजनाओं के लाभ, पद और पुरस्कार के लिए ये अपने स्वाभिमान तक को बेच देते हैं। ये किसी भी देशद्रोही, आतंकवादी की पैरवी कर सकते हैं, उसके पक्ष में खड़े हो सकते हैं। इन्हें बुद्धिजीवी बने रहना है। अतः जो हो रहा है उसका इन्हें विरोध करना है। कविता यहां भी नहीं मिलती।

> *शेर जब सिक्कों में ढल कर आ गए*
> *हम अदब से दूर चलकर आ गए*
> *बात तो दिल को बदलने की हुई*
> *आप तो कपड़े बदल कर आ गए*

▪ हम कविता को ढूंढने निकले थे- मंच के प्रपंच से निराश होकर, विश्वविद्यालय की जटिलताओं से बचते हुए- बाजार आ गए। यहां कविता हंसती मुस्कुराती मिली। कहीं वह कोई विज्ञापन लिख रही थी, कहीं वह नारे लिख रही थी, कहीं पोस्टर। कहीं किसी नेता-मंत्री का भाषण लिख रही थी तो कहीं किसी पार्टी का बैनर। हमने भी एक बैनर उठाया। और नारा लगाया- **कविता जिंदाबाद**।

ग्रहों की चाल

विपुल डोभाल, ज्योतिष, पीठाधीश्वर।
श्री शनिधाम आश्रम, विकासनगर देहरादून
ईमेल : vipravaani@gmail.com
मोबाइल : 9928424374

मेष

मई का महीना मेष राशि वालों के लिए ऊर्जा से भरपूर रहेगा। करियर में पदोन्नति के योग हैं, बस अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें। कार्यस्थल पर सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। नए निवेश के लिए यह समय काफी अनुकूल है। स्वास्थ्य में थोड़ा उतार-चढ़ाव आ सकता है, इसलिए संतुलित आहार लें। यात्रा के योग बन रहे हैं जो आर्थिक लाभ दे सकते हैं। बड़ों का आशीर्वाद आपकी सफलता में सहायक होगा। धैर्य के साथ किए गए कार्य निश्चित रूप से शुभ फल देंगे।

वृषभ

यह महीना आत्म-चिंतन का है। व्यापार में विस्तार की योजनाएं सफल हो सकती हैं। छात्रों के लिए प्रतियोगिता में सफलता के प्रबल योग हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियों में वृद्धि होगी, जिसे आप कुशलता से निभाएंगे। धन के निवेश में जल्दबाजी न करें, सोच-समझकर निर्णय लें। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें और नियमित व्यायाम करें। जीवनसाथी के साथ संबंधों में मधुरता आएगी। किसी पुराने मित्र से मुलाकात मानसिक प्रसन्नता प्रदान करेगी।

मिथुन

इस माह वाणी का प्रभाव दूसरों पर स्पष्ट दिखेगा। कार्यक्षेत्र में नए प्रोजेक्ट्स मिलने की संभावना है। आर्थिक स्थिति स्थिर रहेगी, पर फालतू खर्चों पर लगाम लगाएं। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा हो सकती है। प्रेम संबंधों में पारदर्शिता बनाए रखना जरूरी है। अपनी क्षमताओं पर भरोसा रखें, सफलता आपके कदम चूमेगी। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में खूब लगेगा। कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले घर के अनुभवी लोगों से चर्चा करें।

कर्क

चंद्रमा की स्थिति आपको इस महीने भावुक बना सकती है। करियर में कुछ बदलाव की स्थिति आ सकती है, घबराएं नहीं। स्वास्थ्य के लिहाज से अपना विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। घर के कार्यों में माता का सहयोग आपके लिए लाभकारी होगा। आर्थिक रूप से समय औसत है, इसलिए बजट बनाकर चलें। समाज में मान-सम्मान की वृद्धि होगी। जीवन में शांति लाने के लिए नियमित रूप से योग या ध्यान करें। अपनी मेहनत पर विश्वास रखें, सब ठीक होगा।

सिंह

सूर्य का गोचर आपके लिए आत्मविश्वास में वृद्धि लाएगा। आप कार्यक्षेत्र में नेतृत्व करने में सक्षम होंगे। सरकारी कार्यों में सफलता मिलने के प्रबल संकेत हैं। आय के नए स्रोत बन सकते हैं, बस निरंतरता बनाए रखें। सामाजिक जीवन में सक्रियता बढ़ेगी और नए मित्र बनेंगे। संतान से संबंधित कोई सुखद समाचार प्राप्त हो सकता है। खान-पान में सावधानी बरतें ताकि पेट संबंधी समस्या न हो। परिवार के साथ बिताया गया समय आपको ऊर्जा प्रदान करेगा।

कन्या

यह महीना कन्या राशि के जातकों के लिए आर्थिक सुधार का है। व्यापारिक यात्राएं लाभप्रद साबित होंगी और पुराने निवेश से फायदा मिलेगा। कार्यस्थल पर आपकी मेहनत को वरिष्ठ अधिकारी सराहेंगे। कानूनी मसलों में सावधानी बरतें और दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ें। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा और मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। मित्रों का सहयोग हर कदम पर मिलता रहेगा। स्वास्थ्य में सुधार महसूस करेंगे, जो आपको नई स्फूर्ति देगा।

तुला

शुक्र के प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। कार्यक्षेत्र में आपकी रचनात्मकता की तारीफ होगी। आर्थिक मामलों में सतर्कता बरतें और किसी को उधार देने से बचें। दांपत्य जीवन में छोटी-मोटी तकरार हो सकती है, जिसे बातचीत से सुलझाएं। समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और नए लोग जुड़ेंगे। विद्यार्थियों के लिए यह समय सीखने और आगे बढ़ने का है। अपने स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न करें, नियमित जांच कराते रहें।

वृश्चिक

मंगल का प्रभाव आपको साहसी और दृढ़ बनाएगा। कठिन से कठिन कार्यों को भी आप आसानी से हल कर लेंगे। कार्यस्थल पर कोई बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी और रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। रिश्तों में आत्मीयता बढ़ेगी और परिवार का पूरा सहयोग मिलेगा। धर्म-कर्म के कार्यों में आपकी रुचि बढ़ सकती है। स्वास्थ्य में कोई पुरानी समस्या है तो अब राहत मिलेगी। सफलता के लिए निरंतर प्रयास करते रहें।

धनु

गुरु की कृपा से आपकी ज्ञान शक्ति बढ़ेगी। करियर में जो लोग नौकरी बदलने का सोच रहे हैं, उनके लिए समय शुभ है। आर्थिक निवेश से भविष्य में लाभ होगा। शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों के लिए यह महीना उपलब्धियों से भरा होगा। जीवनसाथी के साथ कहीं बाहर घूमने की योजना बन सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, ठंडी चीजों से परहेज करें। अपनी वाणी में मधुरता लाएं ताकि लोग आपसे प्रभावित हों। कुल मिलाकर यह महीना उन्नति का है।

मकर

शनि की स्थिति आपसे मेहनत की अपेक्षा रखेगी। कार्यक्षेत्र में काम का बोझ बढ़ सकता है, पर आप उसे समय पर पूरा कर लेंगे। आर्थिक रूप से समय थोड़ा चुनौतीपूर्ण हो सकता है, इसलिए फिजूलखर्ची से बचें। पारिवारिक कलह से दूर रहने की कोशिश करें और धैर्य रखें। स्वास्थ्य में थकान और अनिद्रा की समस्या हो सकती है। अपने वरिष्ठों का सम्मान करें, उनसे मार्गदर्शन मिलेगा। नए संपर्कों से लाभ होने के आसार हैं।

कुंभ

मित्रों का सहयोग आपको नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। कार्यक्षेत्र में आपके विचार सभी को पसंद आएंगे। आर्थिक क्षेत्र में निवेश का अच्छा रिटर्न मिल सकता है। पारिवारिक समस्याओं का समाधान निकलेगा और शांति का अनुभव होगा। सामाजिक कार्यक्रमों में आपकी भागीदारी बढ़ेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा लेकिन आलस का त्याग करना जरूरी है। नए अवसरों को हाथ से न जाने दें, समय का पूरा उपयोग करें। मन को शांत रखने के लिए प्रकृति के साथ समय बिताएं।

मीन

यह महीना मीन राशि वालों के लिए नई शुरुआत का है। करियर में बड़ी सफलता मिलने की पूरी संभावना है। आर्थिक दृष्टि से समय शुभ है, कोई रुका हुआ काम बन सकता है। परिवार के साथ तालमेल अच्छा रहेगा और घर में खुशी का माहौल होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें और जल का पर्याप्त सेवन करें। बड़ों के मार्गदर्शन से आप कठिन निर्णय भी सही ले पाएंगे। अध्यात्म की ओर झुकाव आपको आंतरिक शक्ति प्रदान करेगा। सफलता आपके संकल्प पर निर्भर करती है।

AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.

AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS

221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in

राजस्थान ग्रामीण बैंक
RAJASTHAN GRAMIN BANK

(सरकार के स्वामित्वाधीन अनुसूचित बैंक)

प्रधान कार्यालय जयपुर

फोन : 0291-2593100 ईमेल : contactus@rgb.bank.in

अपने घर को मुफ्त बिजली

और सौर ऊर्जा का उपहार दें

ब्याज दर 7% से प्रारंभ

₹ 78,000 तक की सब्सिडी उपलब्ध*

RGB सूर्य घर योजना

हर घर में सोलर...हर घर में ऊर्जा...

- ☑ कोई न्यूनतम सीमा नहीं- ₹6 लाख तक का ऋण उपलब्ध
- ☑ ब्याज दर 7%* से प्रारंभ
- ☑ 10% मार्जिन पर
- ☑ भुगतान 10 वर्ष तक
- ☑ शून्य प्रोसेसिंग शुल्क एवं पूर्व भुगतान पर कोई जुर्माना नहीं

*नियम एवं शर्तें लागू

सोलर पैनल के विक्रेता/डीलर अपने व्यवसाय की वृद्धि के लिए RGB के क्षेत्रीय व्यवसाय कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

सभी प्रकार के कृषि ऋण • होम लोन • पर्सनल ऋण • मोरगेज लोन • शिक्षा ऋण • MSME ऋण